श्री पुष्करणा धर्म प्रचारक मंडल, जोधपु

के कार्यकर्ता

१. अध्यक्ष : श्री फतहचन्द वासु, चंद्रप्रकाश सोसाइटी विभाग-
ब्लॉक १६, कांकरिया, अहमदाबाद-२

२. संयोजक : श्री आसनदास मापारा, १ बी. प्लाट नं० १९
सरदारपुरा, जोधपुर.

३ परामर्शदाता : श्री ईश्वरलाल जोशी, फुल्ला रोड, जोधपुर.

४. मंत्री व कोषाध्यक्ष : श्री परमानन्द मापारा, १बी. प्लॉट
नं० १९ सरदारपुरा, जोधपुर

५. उपमंत्री : श्री गोपाल थानवी १०४ मसूरिया कॉलोनी, जोध

६. सदस्य : (१) श्री दयालजी गंगाधरजी वासु
श्री महाराज उम्मेद मिल्स पाली

(२) श्री आर० वी० जोशी अरुण निवास, बड़ाला बम्बई

हमारा प्रकाशन

१. सामवेदी संध्या
२. यजुर्वेदी सध्या
३. अशौचनिर्णयादर्श (अप्राप्य)
४. ऋषिपंचमी प्रयोगादर्श
५. अन्त्येष्टि कर्म प्रयोगादर्श
६. संस्कार प्रदीप
७. श्रीमद्वल्लभाचार्य जीवन चरित्र (प्रेस में)

नोटः—निम्न पुस्तकें तैयार की जा रही है।

१. हमारे रीति रिवाज
२. हमारे शुभ गीत

❀ विषय सूची ❀

※ प्रथम प्रकरण ※

※ द्वितीय प्रकरण ※

※ तृतीय प्रकरण ※

❀ ❀

❋ भूमिका ❋

किसी भी वस्तु-कार्य करने से पूर्व उसके दोष निकाल देने चाहिये। जिससे वह शुद्ध होकर पूर्णता को प्राप्त कर सके। तदर्थ उस वस्तु के संस्कार किये जाते है। जैसे कि तलवार बनाने के लिए खान के अशुद्ध लोहे को संस्कारों द्वारा शुद्ध कर अग्नि में तपाकर इस्पात बनाया जायगा। फिर तलवार की मूठ बनाई जायगी। तब ही तलवार पूर्णता प्राप्त कर सकती है, और शत्रु संहार का कार्य कर सकती है। उसी प्रकार मनुष्य भी षोडश संस्कारों द्वारा पूर्णता प्राप्त कर जीव से ब्रह्मत्व पाने का अधिकारी होता है। यथा—

चित्र क्रमाद् यथानेकै रङ्गैरुन्मील्यते शनैः।
ब्राह्मण्यमपितद्वत्स्यात् संस्कारैर्विधि पूर्वकैः॥

गर्भाधान आदि षोडश संस्कार हैं। गर्भाधान जातकर्म और अन्नप्राशन आदि संस्कारों से गर्भादि दोषों की शुद्धि होती है। चूडाकर्म और उपनयनादि संस्कारों से द्विजत्व की प्राप्ति होती है। विवाह आदि संस्कार से जीव में सद्गुण आते है, और आश्रम धर्म पालने की शक्ति बढ़ती है। जिससे वह आगे बढ़कर ज्ञान और भक्ति द्वारा मोक्ष तथा भगवत्सायुज्य प्राप्त कर सकता है।

अतः संस्कारों के महत्व को समझाते हुए हमारे पूर्वजों ने शास्त्रानुसार संस्कार करने की परिपाटी डाली है, जो राज्य के उथल पुथल होने पर भी एवम् शिथिलता आने पर भी, कुछ परिवर्तन के साथ मौजूद है। परन्तु उसमें भी मुख्य २ संस्कार शास्त्रानुसार ही किये जाते है। इसी कारण ही ब्राह्मण जाति आज भी अपना स्वरूप कायम रख सकी है।

परन्तु पाश्चात्य वायु प्रवाह के कारण स्वजाति से संस्कृत विद्या
ा लोप हो रहा है। यहां तक कि अनेक स्थानों पर तो संस्कार कराने
ाले पंडितों का मिलना भी दुर्लभ हो गया है। जिससे संस्कार कराने
ं असुविधा होती है। इस विषय को ध्यान में रखकर "पुष्करणा धर्म
चारक मंडल" की जोधपुर में स्थापना की गई। जिसके द्वारा 'श्रावणी
योगादर्श" और अन्त्येष्टि कर्म प्रयोगादर्श दो ग्रन्थ प्रकाशित हो
ुके है। "श्रावणी प्रयोगादर्श" के प्रकाशन व्यय श्री फतहचन्द वासु
वम् "अन्त्येष्टि कर्म प्रयोगादर्श" के प्रकाशन व्यय पाली निवासी श्री
यालजी भाई वासु ने सहर्ष दिया। इन पुस्तकों में क्रिया विधि सरल
हिन्दी भाषा में दी गई है।

अब इस संस्था के प्रकाशन का तृतीय पुष्प "संस्कार प्रदीप"
ापके सम्मुख है। जिसमें गृह शान्ति कर्म, षोडश संस्कार मूलादि
क्षत्र शान्ति, वास्तु पूजन, आदि कर्म-रीति शास्त्रानुसार सरल हिन्दी
ाषा में दी गई है। मन्त्र भी यथा स्थान पूर्ण दिये गये है। जिससे
संस्कार करवाने में असुविधा न हो। प्रस्तुत पुस्तक में "बटुकाष्टक"
द्वार पूजन" "पालिता प्रतिपालिता" एवम् "वर कामना" नवीन
करणों का समावेश भी किया गया है। इस ग्रन्थ के सम्पादन का
ार्य वैद्य श्री ईश्वरलाल जोशी एवम् श्री परमानन्द शास्त्री ने किया है।
स परिश्रम के लिए मैं उन्हे धन्यवाद देता हूँ।

इस ग्रन्थ के प्रकाशन का सम्पूर्ण व्यय बम्बई निवासी जाति
ज्न, उत्साही कार्यकर्ता, दानवीर श्री रतनसी वालजी जोशी ने दिया
। अतः सम्पूर्ण मंडल की ओर से मैं उन्हे धन्यवाद देता हूँ।
न्होंने जो कार्य किया है वह सदा अनुकरणीय रहेगा।

मेरी प्रभु के चरणों में यही प्रार्थना है कि ऐसे शुभ कार्य सदा
ोते रहें। इत्यलम्।

ाहमदाबाद
ावण शुक्ल १५, सं० २०२५

फतहचन्द वासु

दानवीर रतनसी वालजी जोशी

आप बचपन से ही जाति प्रेमी थे, जिससे आपका सम्पर्क
मित्रता प्राय: पुष्करणा बालकों से ही थी आपके विचार उदात्त
आप चाहते थे कि जाति आगे बढ़े गरीबी की गर्त से निकले, वह
होगा जब जाति में व्यापार के लिये प्रेम होगा अत: आपने व्यापार
तर्फ ही ध्यान दिया, इसलिये आप विलायत गये, उस समय आप
वहां से लौटकर वृद्ध जातिजनों के आज्ञानुसार सहर्ष शास्त्र विधि
देह शुद्धि कर अपनी धर्म परायणता तथा वृद्धों की आज्ञा पालने
परिचय दिया, फिर आपने लोहे के एक व्यापारी के साथ मिलक
व्यापार में वृद्धि की, साथ में आपने भ्राता तथा सम्बन्धियों को
इस तरफ खींचा। आपके इस प्रकार के प्रयास से आप तो आगे ब
किन्तु आपके भ्राता तथा सम्बन्धी भी कलकत्ते में व्यापार करते उ
स्थिति में हैं आपकी सन्तति भी वैसी ही योग्य हैं आपके बड़े पु
बम्बई में "फरीफ" है। वह भी जनता की सेवा में तत्पर हैं। कोई भ
संकटग्रस्त किसी वक्त भी आपके पास आवे तो सहर्ष उसके सा
जाकर उसको सङ्कट मुक्त कराकर फिर भोजन करते हैं। आप विलायत
से होकर आये हैं, व्यापार में उलझे हुवे हैं तो भी आपको किसी
प्रकार पाश्चात्यवायु स्पर्श नहीं कर सका है, अपना कर्म आदि करन
एवं आचार विचार तथा वेष-भूषा वही भारतीय ब्राह्मणोचित ही है, ऐसे
दानवीर ज्ञाति प्रेमी को प्रभु चिरायु करे एवं आपका कुटुम्ब सदैव
उन्नत एवं सुखी हो यही प्रभु के चरणों में प्रार्थना है।

अथ संस्कार प्रदीपः प्रारम्भः

श्रीनाथं गिरिधारिणं व्रजपतिं नत्वा दयासागरम् ।
श्रीमच्छ्री मुरलीधरं गुरुवरं, विद्याप्रदं वै तथा ॥
संस्कारैः क्रियते सदा तनुरिये ब्राह्मीमुदा ब्राह्मणैः ।
तल्लोपो न भवेदतो विरचितः संस्कारदीपोवरः ॥१॥

१. अथ शान्ति पाठ

ॐ आनोभद्राः क्रतवोयन्तुविश्वतोदब्धासोऽअपरीतासऽउद्भिदः॥ देवानोयथासदमिद्वृधेऽअसन्नप्रायुवोरक्षितारोदिवेदिवे ॥१॥ देवानाम्भद्रासुमतिऋजुयतान्देवानाँ रातिरभिनोनिवर्त्तताम्॥ देवानाँ सख्यमुपसेदिमाव्वयन्देवानऽआयुःप्रतिरन्तुजीवसे ॥ २ ॥ तान्पूर्व्वयानिविदाहूमहेव्वयम्भगम्मित्रमदितिन्दक्षमस्रिधम्॥ अर्य्यमणम्वरुणँ सोममश्विना सरस्वतीनः सुभगामयस्करत् ॥ ३ ॥ तन्नोव्वातोमयोभुव्वातुभेषजन्तन्माता पृथिवीतत्पिताद्यौः ॥ तग्रावाणःसोमसुतोमयोभुवस्तदश्विनाशृणु तन्धिष्ण्यायुवम्॥ ४ ॥ तमीशानञ्जगतस्तस्थुषस्पतिन्धियञ्जिन्वमवसेहू महेव्वयम् ॥ पूषानोयथाव्वेदसामसद्वृधेरक्षितापायुरदब्धः स्वस्तये ॥ ५ ॥ स्वस्तिनऽइन्द्रोवृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषाविश्ववेदाः ॥ स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु ॥ ६ ॥ पृषदश्वामरुतः पृश्निमातरः शुभंयावानो व्विदथेषुजग्मयः ॥ अग्निजिह्वामनवः सूरचक्षसोव्विश्वेनो देवाऽअवसागमन्निह ॥ ७ ॥ भद्रङ्कर्णेभिःशृणुयामदेवाभद्रम्पश्येमाक्षभि

यऽजत्रा ॥ स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ँ सस्तनूभिर्व्यशेमहिदेवहितंयदा
॥ ८ ॥ शतमिन्नु शरदोऽअन्तिदेवायत्रानश्चक्राजरसन्तनूनाम् ॥ पुत्रा
त्रापितरोभवन्तिमानोमध्यारीरिषतायुर्गन्तोः ॥ ९ ॥ अदितिर्द्यौरदिति
रिक्षमदितिर्म्मातासपितासपुत्रः ॥ विश्वेदेवाऽअदितिःपञ्चजनाऽअदि
र्जातमदितिर्ज्जनित्त्वम् ॥ १० ॥ द्यौःशांतिरन्तरिक्ष ँ शान्तिः पृथि
शान्तिरापःशान्तिरोषधयःशान्तिः ॥ वनस्पतयःशान्तिर्विश्वे देवाःशा
ब्रह्मशान्तिःसर्व्व ँ शान्तिःशान्तिरेवशान्तिःसामाशान्तिरेधि ॥ ११
यतोयतःसमीहसेततोनोऽअभयंकुरु ॥ शन्नः कुरुप्रजाभ्यो भयन्नःपशुभ्
॥ १२ ॥ ॐ शान्तिः शान्तिः सुशान्ति र्भवतु ॥

२. अथ गणेशादिदेव नमस्कार

ॐ श्री मन्महागणाधिपतयेनमः । ॐ लक्ष्मीनारायणाभ्यांनम
ॐ उमामहेश्वराभ्यांमः ॥ ॐ वाणीहिरण्यगर्भाभ्यांनमः ॥ ॐ शचीपुर
राभ्यांनमः ॥ ॐ मातृपितृ चरणेभ्योनमः ॥ ॐ इष्टदेवताभ्योनमः
ॐ कुलदेवताभ्योनमः ॥ ॐ ग्रामदेवताभ्योनमः ॐ स्थानदेवताभ्योनमः
ॐ वास्तुदेवताभ्यो नमः ॥ ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः ॥ ॐ सर्वेभ्
ब्राह्मणेभ्यो नमः ॥ ॐ पुण्यपुण्याहंदीर्घंआयुरस्तुः ॥ सुमुखश्चैकद
श्चकपिलोगजकर्णकः ॥ लंबोदरश्चविकटोविघ्ननाशोविनायकः ॥ धूम्र
तुर्गणाध्यक्षोभालचंद्रोगजाननः । द्वादशैतानिनामानि यः पठेच्छृणुयादपि
विद्यारंभेविवाहेच प्रवेशेनिर्गमेतथा । संग्रामे संकटेचैव विघ्नस्तस्यनजायते
शुक्लांबरधरं देवंशशिवर्णं चतुर्भुजं ॥ प्रसन्नवदनध्यायेत्सर्वविघ्नो
पशांतये ॥ अभीप्सितार्थसिध्यर्थपूजितोयः सुरासुरैः । सर्वविघ्नहरस्तस्
गणाधिपतयेनमः ॥५॥

३. संकल्प

तदनन्तर संकल्प करें। ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः। श्रीमद्भगवतोमहापुरुषस्य विष्णोराज्ञयाप्रवर्तमानस्य अद्य ब्रह्मणो द्वितीय परार्द्धे श्रीश्वेतवाराह कल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलि प्रथम चरणे भूर्लोके भरतखंडे जंबूद्वीपे आर्यावर्तैकदेशांतर्गते अमुकदेशे अमुक क्षेत्रे, अमुकशुभसंवत्सरे, रवि अमुकायने, अमुक ऋतौ, अमुकमासे, अमुकपक्षे, अमुकतिथौ, अमुकवासरे, ममआत्मनः श्रुतिस्मृतिपुराणोक्त फलावाप्तये अस्मिन्पुण्याहे अस्या मम भार्यया अद्य अमुक संस्कार महं करिष्ये ॥

पुनः संकल्प करे। तदंगत्वेन गणपति पूजनं स्वस्तिपु वाचनं मातृकापुजनम् आयुष्यमंत्रजपं नान्दीश्राद्धं ब्रह्माचार्यं ऋत्विग्वरणं दिग्रक्षणं पंचगव्यकरणं भूमिपूजनमग्निस्थापनं कलशस्थापनम् अग्न्युत्तारणप्राणप्रतिष्ठापूर्वकं देवतास्थापनं कदलीस्थापनं नवग्रहस्थापनं च अहं करिष्ये ॥

४. दिग्बन्धनम्

वामहस्त में सरसों लेकर दक्षिण हस्त से समस्त दिशाओं की ओर छिड़कावें॥

अपसर्पन्तु ये भूता, ये भूता भूमि संस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तार स्तेनश्यन्तु, शिवाज्ञयाः ॥ १ ॥
अपक्रामन्तुभूतानि, पिशाचाः सर्वतोदिशम्।
सर्वेषामविरोधेन, ब्रह्मकर्मसमारम्भे. ॥ २ ॥
यदभसंस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वतः।

स्थानं त्यक्त्वा तुतत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु ॥ ३ ॥
भूतप्रेत पिशाचाद्या, अपक्रामन्तु राक्षसाः ।
स्थानादस्माद्व्रजन्त्वन्यत्, स्वीकारोमि भुवंत्विमाम् ॥ ४॥
भूतानि राक्षसाः वापि, यत्र तिष्ठन्ति केचन ।
ते सर्वेप्यपगच्छन्तु, देवपूजा करोम्यहम् ॥ ५ ॥

५. कलश पूजन

दक्षिण हाथ में चावल लेकर कलश पर वरुण क आव्हान करें।

ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा व्वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भि अहेडमानो व्वरुणे हबोध्युरुशँ समान। आयुः प्रमोणीः ॥ॐ भूर्भुव स्वः अपाम्पति वरुणाय नमः ॥

तदनन्तर गन्धादि से पूजन कर कलश पर दक्षिण हाथ रखे ।

कलशस्य मुखे विष्णुः कंठे रुद्र समाश्रितः'
मूले तस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः ॥ १ ॥
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा ।
ऋग्वेदोथयजुर्वेदः सामवेदोह्यथर्वणः ॥ २ ॥
अंगैश्च सहिताः सर्वे कलशंतु समाश्रिताः ।

पश्चात् कर बद्ध होकर प्रार्थना करें ।

त्वत्तोये सर्वे तीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः ।
त्वयितिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः ॥ १ ॥

शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः ।
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः ॥ २ ॥
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेपि यतः कामफल प्रदाः ।
त्वत्प्रसादादिदं कर्म कर्तु मीहे जलोद्भव ॥ ३ ॥
सान्निध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा ।

पश्चात् कलश में गंगा का आव्हान करें ।

गंगे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वती ।
नर्मदे सिन्धु कावेरी जलेस्मिन्सं निधौभव ॥ १ ॥

तदनन्तर कलश के जल से सामग्री को छींटे लगावें ।

६. दीपक पूजन

दक्षिण हाथ में चावल लेकर दीपक का पूजन करें ।

भो दीप ब्रह्म रुप अन्धकार निवारकाः ।
इमा मया कृतां पूजां गृह्नस्तेजः प्रवर्धय ॥

पश्चात् दीपक का गन्धादि से पूजन करे ।

७. गणपति पूजन

पश्चात् निम्न रूप से क्रमशः गणपति का पूजन करें ।

(१) ध्यानः—श्वेताङ्गं श्वेतवस्त्रं सितकुसुमगणैः पूजितं श्वेत गन्धैः ।
क्षीराब्धौ रत्नदीपैः सुरतरु विमले रत्न सिंहासनस्थम् ॥
दोर्भिः पाशाङ्कुशेष्टा भयधृति विशदं चन्द्रमौलिं त्रिनेत्रम् ।
ध्यायेच्छान्त्यर्थमीशं गणपतिममलं श्रीसमेतं प्रसन्नम् ॥
ॐ भूर्भुवःस्वः सिद्धिबुद्धिसहित महागणपतये नमः ध्यायामि ।

(२) आव्हान:—ॐ गणानान्त्वागणपति ँ हवामहे, प्रियाणा प्रियपति ँ हवामहे, निधिनान्त्वानिधिपति ँ हवा व्वसोमम, आहमजानि गर्ब्भधमात्वमजासिगर्ब्भध ॐ भुर्भुवः स्वः सिद्धिबुद्धि सहित महागणाधि नमः। गणपतिमावाहयामि स्थापयामि !

(३) आसन:—रम्यं सुशोभनं दिव्यं सर्व सौख्यकरं शुभम्।
आसनं च मया दत्तं गृहाण गणनायक ॥

(४) पाद्य:—उष्णोदकं निर्मलं च सर्व सौगंध संयुतम्।
पाद्य प्रक्षालनार्थाय दत्तं ते प्रतिगृह्यताम् ॥

(५) अर्घ:—ताम्रपात्रे स्थितं तोय गन्धपुष्प फलान्वितम्।
सहिरण्यं ददाम्यर्धं गृहाण गणनायक ॥

(६) आचमन:—सर्वतीर्थ समायुक्तं सुगन्धि निर्मल जलम्।
आचमार्थं मया दत्त गृहाण परमेश्वर ॥

(७) पयस्नान:—कामधेनु समुद्भूतं सर्वेषां जीवनंपरम्।
पावनं यज्ञ हेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम् ॥

(८) दधिस्नान:—पयसस्तु समुद्भूत मधुराम्लं शशिप्रभम्।
दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

(९) घृत स्नान:—नवनीत समुत्पन्नं सर्व संतोष कारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

(१०) मधुस्नान:—तरूपुष्प समुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु।
तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

(११) शर्करास्नान:—इक्षुसार समुद्भूता शर्करा पुष्टिकारका।
मलापहारिका दिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

(१२) उद्वर्तनस्नानः—नाना सुगन्ध द्रव्यं च चन्दनं रजनीयुतम् ।
उद्वर्तनं मया दत्तं गृहाण गणनायक ॥

(१३) शुद्धोदकस्नानः—कावेरी नर्मदा वेणी तुंगभद्रा सरस्वती ।
गंगा च यमुनाऽसां वाः स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

(१४) वस्त्रः—सर्वभूषादि के सौम्ये लोकलज्जा निवारणे ।
मयोपादिते तुभ्य वाससी प्रतिगृह्यताम् ॥

(१५) यज्ञोपवीतः—नवभिस्तंतुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम् ।
उपवीत मया दत्तं गृहाण परमेश्वरः ॥

(१६) गन्धः—श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं केशरादि समन्वितम् ।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दन प्रतिगृह्यताम् ।

(१७) अक्षतः—अक्षाताश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः ।
मयानिवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर ॥

(१८) पुष्पः—सुमाल्यानि सुगंधीनि मालत्यादीनि वै प्रभो ।
मयाहृतानि पूजार्थं पुष्पाणि प्रतिगृह्यताम् ।

(१९) दुर्वाः—दुर्वान्कुरान्सुहरितानमृतान्मङ्गलप्रदान् ।
आनीतास्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक ॥

(२०) हरिद्राः—हरिद्रा कुंकमं चैव सिन्दुरादि समन्वितम् ।
सौभाग्यद्रव्यसंयुक्तं गृहाण परमेश्वर ॥

(२१) धूपः—वनस्पति रसोद्भूतं गंधाढ्यो गंध उत्तमः ।
आरेध्यः सर्व देवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥

(२२) दीपः—साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वन्हिना योजितं मया ।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्य तिमिरापहम् ॥

(२३) नैवेद्यः—शर्कराघृत संयुक्तं मधुरं स्वादु चोत्तमम् ।
उपहार समायुक्तं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ॥

(२४) आचमनः—शीतलं निर्मलं तोयं कर्पूरेण समन्वितम् ।
आचमार्थं मया दत्तं गृह्यतां गणनायक ॥

(२५) फलः—इदं फलं मया देव स्थापित पुरतस्तव ।
तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि ॥

(२६) तांबूलः—पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्ली दलैर्युतम् ।
एलादि चूर्णं संयुक्तं तांबूल प्रतिगृह्यताम् ॥

(२७) दक्षिणाः—हिरण्यगर्भ गर्भस्थं हेम बीज विभावसोः ।
अनन्तपुण्यफलद मतः शान्ति प्रयच्छ मे ॥

(२८) आरतीः—कदलीगर्भ संभूतं कर्पूरं च प्रदीपितम् ।
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव ॥

(२९) पुष्पाञ्जलिः—नाना सुगन्ध पुष्पाणि, यथाकालोद्भवानि च ।
पुष्पांजलि मया दत्तं, गृहाण गणनायक ॥

(३०) प्रदक्षिणाः—यानि कानि च पापानि ज्ञाताज्ञात कृतानि च ।
तानि सर्वाणि नश्यंति प्रदक्षिणा पदे पदे ॥

(३१) विशेषार्घः—रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्य रक्षक ।
भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात् ॥ १ ॥
द्वैमातुर कृपासिन्धो, षाण्मातुराग्रज प्रभो ।
वरद त्वं वरं देही, वाञ्छितं वाञ्छितार्थद ॥ २ ॥

(३२) प्रार्थनाः—विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय,
लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय ।
नागाननाय श्रुति यज्ञ विभूषिताय,
गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते ॥ १ ॥

भक्तार्तिनाशनपराय गणेश्वराय,
सर्वेश्वरायशुभदाय सुरेश्वराय ।
विद्याधराय विकटाय च वामनाय,
भक्तप्रसन्न वरदाय नमो नमस्ते ॥ २ ॥
नमस्ते ब्रह्मरूपाय, विष्णुरूपायते नमः ।
नमस्ते रुद्ररूपाय, करि रूपायते नमः ॥ ३ ॥
विश्वरूप स्वरूपाय, नमस्ते ब्रह्मचारिणे ।
भक्त प्रियाय देवाय, नमस्तुभ्यं विनायक ॥ ४ ॥
लम्बोधर नमस्तुभ्यं, सततं, मोदकप्रिय ।
निर्विघ्नं कुरू मे देव, सर्व कार्येषु सर्वदा ॥ ५ ॥

पश्चात् संकल्प करें ।

"अनया पूजया श्रीगणेशः सांगः सपरिवारः प्रीयतां न मम."

८. स्वतिपुण्याह वाचन

सर्व प्रथम चावल का स्थल बनाकर उसपर अष्टदल बनावे फिर उसके पास निम्न मंत्र से भूमि को स्पर्श करे ।

ॐ महीद्यौः पृथिवी चनऽइमन्यज्ञम्मिमिक्षताम् । पिपृताम्नो भरीयसिः ॥

फिर उस स्थान पर चावल डालें ।

ॐ औषधयःसमवदन्त सोमेन सह राज्ञा। यस्मैकृणोति ब्राह्मणस्तँ राजन्पारयमसि ।

फिर उस पर कलश स्थापित करें ।

ॐ आजिघ्रकलशम्मह्यात्वाविशन्तिन्दवः । पुनरूर्ज्जानिवर्तस्वसान÷सहस्र धुक्ष्वोरुधारापयस्वतीपुनर्म्माविशताद्रयिः ।

फिर कलश में जल डालें।

ॐ व्वरुणस्योत्तम्भनमसिव्वरुणस्यस्कंभसर्ज्जनीस्थोवरुणस्यऽऋतसदन्न्यसिव्वरुणस्यऋतसदनमसिव्वरुणस्यऽऋतसदनमासीद।

फिर कलश में गन्ध पुष्प डाले।

ॐ त्वाङ्गन्धर्व्वाऽअखनस्त्वामिन्द्रस्त्वाम्बृहस्पतिः त्वमोषधेसोमोराजाविद्वान्यक्ष्मादमुच्यत।

फिर कलश में औषधि (हल्दी) डालें।

ॐ याऽओषधीःपूर्व्वाजातादेवेभ्यास्त्रियुगम्पुरा। मनैनुबभ्रूणामहँ शतन्धमानिसप्तच।

फिर कलश में दूवा डालें।

ॐ कांडात्कांडात्प्ररोहन्न्तिपरुषः पुरुषस्परि। एवानोदूर्व्वेप्रतनुसहस्रेणशतेनच।

फिर कलश में पांच आम या पीपल के पत्ते डालें।

ॐ अश्वत्थेव्वोनिषदनम्पर्णेव्वोव्वसतिष्कृता। गोभाजऽइत्किलासथयत्सनवथपूरुषम्।

फिर कलश में सप्तमृद (मिट्टी) डालें।

ॐ स्योनापृथिविनोभवान्नृक्षरानिवेशनी। यच्छानःशर्म्मसप्रथाः।

फिर कलश में फल डालें।

ॐ याःफलिनीर्याऽअफलाऽअपुष्पायाश्चपुष्पिणी। बृहस्पतिप्रसूतास्तानोमुञ्चन्त्वँ हसः।

फिर कलश में पंचद्रव्य (दक्षिणा) डालें।

ॐ परिवाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत्। दधद्रत्नानिदाशुषे।

फिर कलश में स्वर्ण (दक्षिणा) डाले।

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रेभूतस्यजातःपतिरेकऽआसीत्। सदाधारपृथिवीन्द्यामुतेमाङ्कस्मैदेवायहविषाविधेम।

फिर कलश के कंठ पर सूत्र बान्धे।

ॐ युवासुवासाःपरिवीतऽआगात्सऽउश्रेयान्भवतिजायमानः। तन्धीरासः कवयऽउन्नयन्तिस्वाध्योमनसादेवयन्तः॥

फिर कलश पर पूर्णपात्र रखें।

ॐ पूर्णादर्व्विपरापतसुपूर्णापुनरापत। व्वस्नेवव्विक्रीणावहाऽइषमूर्ज्जँ शतक्रतो।

फिर हाथ में चावल लेकर कलश पर वरुण का आह्वान व पूजन करे।

ॐ तत्त्वायामिब्रह्मणाव्वन्दमानस्तदाशास्तेयजमानोहविर्भिः। अहेडमानोव्वरुणेहबोध्युरुशँ समानऽआयुःप्रमोषीः॥ ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्यबृहस्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टंय्यज्ञँ समिमन्दधातु। व्विश्वेदेवासऽइहमादयन्तामोंऽप्रतिष्ठ॥

पश्चात् वरुण का गन्धादि पूजन करें। फिर कलश पर दक्षिण हाथ रखे।

कलशस्यमुखे विष्णुः कंठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥ १॥
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथयजुर्वेदः सामवेदोह्यथर्वणः॥ २॥
अङ्गैश्चसहिताः सर्वे कलशन्तु समाश्रिताः।

पश्चात् कर बद्ध होकर प्रार्थना करें।

त्वतोये सर्व तीर्थानि, देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।

त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि, त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः। १।

शिव स्वयं त्वये वासि, विष्णुस्त्व च प्रजापतिः।

आदित्या वसवोरुद्राः, विश्वेदेवाः सपैतृकाः। २।

त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि, यत.कामफलप्रदाः।

त्वत्प्रसाददिर्य यज्ञ कर्तुमीहे जलोद्भव। ३।

सानिध्य कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा।

तदनन्तर बांये घुटने के सहारे बैठकर दोनों हाथों को कमल के सदृश मुद्रा बनाकर पूजित कलश को तीन बार मस्तक को लगावें

त्रीणिपदाविचक्रमे विष्णुर्गोपाऽअदाभ्यः। अतो धर्माणिधारयन् तेनायुःप्रमाणेन पुण्याहं दीर्घमायुरस्त्विति ॥ भवन्तो ब्रवन्तु पुण्यपुण्याह दीर्घः मायुरस्त्विति।

तदनन्तर यजमान ब्राह्मण के दक्षिण हाथ में निम्न मन्त्र से जल आदि वस्तुएं दें। (नोटः-मन्त्र का प्रथम उच्चारण यजमान करें, और द्वितीय पाद ब्राह्मण उसका उत्तर दें।

१) जल- शिवा आपः सन्तु ॥ सन्तु शिवा पः ॥

२) पुष्प- सौमनस्यमस्तु ॥ अस्तु सौमनस्यं ॥

३ अक्षत- अक्षत चारिष्टं चास्तु ॥ अस्त्वक्ष तमरिष्ट च ॥

४) गन्ध- गन्धापांतु सौभंगल्य चास्त्विति भवंतो ब्रवन्तु ॥ गन्धापांतु सौमंल्य चास्तु ॥

(५) अक्षत– अक्षताः पांतु आयुष्यमस्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु ॥ अक्षताः पान्तु आयुष्यमस्तु ॥

(६) पुष्प– पुष्पाणि पांतु सौश्रयमस्त्विति भवंतो ब्रुवन्तु ॥ पुष्पाणि पांतु सौश्रयमस्तु ॥

(७) तांबूल–तांबूलानि पांतु ऐश्वर्यमस्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु ॥ तांबूलानि पांतु ऐश्वर्यमस्तु ॥

(८) दक्षिणा– दक्षिणा पांतु बहुधनमस्त्विति भवन्तु ब्रुवन्तु ॥ दक्षिणा पांतु बहुधनमस्तु ॥

(९) नमस्कार– श्रीर्यशो विद्या विनयो वित्तं बहुपुत्रं चायुष्यं ॥ भवन्तो ब्रुवन्तु ॥ **आचार्य यजमान द्वारा दिये गये जलादि यजमान के ऊपर छिड़कावे:** श्री यशो विद्या विनयो वित्तं बहुपुत्रं चायुष्यं चास्तु ॥ दीर्घमायु शान्ति पुष्टिस्तुष्टि चास्तु ॥

(१०) प्रार्थना– यं कृत्वा सर्व वेद यज्ञ क्रिया करण कर्मारम्भाः शुभाः शोभनाः प्रवर्त्तन्ते । तमहमोंकारमादिं कृत्वा ऋग्यजुः सामार्थवाशिर्वचन बहु ऋषिमतम् समनुज्ञातं भवद्भिरनु ज्ञातः पुण्य पुण्याह वाचियष्ये ॥ वाच्यताम्३ ॥

(११) आशीर्वाद–ॐ भद्रङ्कर्णेभिः शृणु यामः देवाः भद्रम्पश्येमाक्षभिर्यजत्राः । स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाँ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥ १ ॥ देवानाम्भद्रा सुमति ऋजुयतान्देवानाँ रातिरभिनो निवर्त्तताम् । देवानाँ सख्यमुपसेदिमाव्वयंन्देवानऽआयुः प्रतिरन्तु जीवसे ॥ २ ॥

(१२) प्रार्थना:- (यजमान वचन-आचार्य प्रत्युवचन) व्रत जप नियम तपः स्वाध्याय कर्तृ दया दमन दान विशिष्टानां सर्वेण ब्राह्मणानां मनः समाधीयताम् ॥ समाहितः मनसस्म ॥ १ ॥ प्रसीदन्तु भवन्तः । प्रसन्नास्म ॥ २ ॥ ॐ शान्ति रस्तु अस्तु ॥ ॐ पुष्टिरस्तु ॥ ॐ तुष्टिरस्तु ॥ ॐ वृद्धि रस्तु ॥ ॐ अविघ्नमस्तु ॥ ॐ आयुष्यमस्तु ॥ ॐ आरो ग्यमस्तु ॥ ॐ शिवंकर्मास्तु ॥ ॐ कर्मसमृद्धिरस्तु ॥ ॐ वेदसमृद्धिरस्तु ॥ ॐ शास्त्रसमृद्धिरस्तु ॥ ॐ धन धान्य समृद्धिरस्तु ॥ ॐ पुत्र पौत्र समृद्धिरस्तु ॥ ॐ इष्ट संपदस्तु ॥ ॐ अरिष्टनिरसनमस्तु ॥ ॐ यत्पापं रोग अशुभं अकल्याणं तद्दूरेप्रतिहतमस्तु ॥ ॐ यच्छ्रेयस्त दस्तु ॥ ॐ उत्तरेकर्मणि निर्विघ्नमस्तु ॥ ॐ उत्तरोत्त महहरभिवृद्धिरस्तु ॥ ॐ उत्तरोत्तराः क्रियाः शुभ शोभनाः संपद्यताम् ॥ ॐ तिथिकरणमुहूर्त नक्षत्र लग्न संपदस्तु ॥

यजमान अपने सम्मुख दो कांस्य या मृतिका पात्र रखे । मंत्रोच्च रण के साथ पूजित कलश से आचमनी वदकर रखे हुए पात्रं में उदकसेक करे (डाले); प्रथम दक्षिण पश्चात् वाम कलश से यह कार्य हो । दक्षिण कलश के मंत्रः

ॐ तिथिकरण मुहूर्त नक्षत्र ग्रह लग्नादि देवताः प्रीयंताम् ॥ ॐ तिथिकरण मूहूर्त सनक्षत्रे सग्रहे, साधिदेवते प्रीयेताम् ॥ ॐ दु पांचाल्यौ प्रीयेताम् ॥ ॐ अग्नि पुरोगाः विश्वेदेवाः प्रीयताम् ॥ ॐ

द्र पुरोगा मरुद्गणाः प्रीयंतम् ॥ ॐ माहेश्वरी पुरोगा उमामातरः प्रीयं म् ॥ ॐ अरुंधतीपुरोगा एकपत्न्यः प्रीयताम् । ॐ विष्णु पुरोगाः र्वे देवाः प्रीयताम् ॥ ॐ ब्रह्म पुरोगा सर्वे वेदाः प्रीयंताम् ॥ ॐ ब्रह्म व ब्रह्माणाश्च प्रीयंताम् ॥ ॐ सरस्वत्यौ प्रीयेताम् । ॐ श्रद्धामेघे प्रीये ाम् ॥ ॐ भगवती कात्यायनी प्रीयताम् ॥ ॐ भगवती माहेश्वरी प्रीयं ाम् । ॐ भगवती ऋद्धिकरी प्रीयताम् ॥ ॐ सिद्धिकरी प्रीयताम् ॥ ॐ भगवती पुष्टिकरी प्रीयताम् ॥ ॐ भगवती तुष्टिकरी प्रीयताम् ॥ ॐ भगवती विघ्नविनायकौ प्रीयेताम् ॥ ॐ सर्वा कुलदेवताः प्रीयताम् ॥ ॐ सर्वा ग्रामदेवताः प्रीयताम् ॥

पश्चात् वाम कलश से द्वितीय पात्र में जल डाले :

ॐ हताश्च ब्रह्म द्विष । ॐ हताश्च परिपंथिनः । ॐ हताश्च विघ्नकर्तारः । ॐ शत्रवः पराभव यांतु । ॐ श्याम्यंतु घोराणि । ॐ शाम्य तु पापानि । ॐ शाम्यं त्वीतयः ।

पुनः दक्षिण कलश से प्रथम पात्र में जल डाले :

ॐ शुभानि वर्द्धताम् । ॐ शिवा आप सन्तु । ॐ शिवा ऋतवः सन्तु । ॐ शिवा ओषधयः सन्तु । ॐ शिवा नद्य सन्तु । ॐ शिवा गिरयः सन्तु । ॐ शिवा आहुतयः सन्तु । ॐ अहोरात्रे शिवे स्यातां ।ॐ निकामे निकामेनः,पर्जन्यो वर्षतु फलनत्योनऽओषधयः पच्च्य न्तोयोगक्षेमो नः कल्पताम् । ॐ शुक्रांगारक बुध बृहस्पति शनैश्वर राहु केतु सोम सहिता आदित्य पुरोगाः सर्वे ग्रहाः प्रीयंताम् । ॐ भगवन्ना रायणः प्रीयंताम् । ॐ भगवान्पर्जन्यः प्रीयंताम् । ॐ भगवान्स्वामी महासेन प्रीयताम् ।

तदनन्तर यजमान कर बद्ध हो कर आचार्य से पुण्याहवाच की प्रार्थना करेगा और आचार्य उनके ऊपर चावल छिड़क हुए आशीर्वाद देगा।

ॐ पुण्याह कालानान्वाचयिष्ये । वाच्यताम् ३ ॥

ब्राह्मंचपुण्यं महद्यञ्च सृष्ट्युत्पादन कारकम्।
वेदवृत्तोद्भवं नित्यं तत्पुण्याह ब्रुवन्तु नः ॥

भो ब्राह्मणाः मह्यं सकुटुम्बिने महाजनान्नमस्कुर्वाणाय आ वचनमपेक्षमाणाय मह्यक्रियमाणस्य अमुक कर्मणः पुण्याह भवन ब्रुवन्तु ॥ ॐ पुण्याहं ३ ॥ ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसाधिय पुनन्तु विश्वाभूतानि जातवेदः पुनीहिमा ॥ १ ॥

पृथिव्यामुध्दृतायांतु, यत्कल्याणं पुरा कृतम्।
ऋषिभिः सिद्ध गधर्वैस्तत्कल्याण ब्रुवन्तु नः ॥

भो ब्राह्मणाः मह्य० अमुक कर्मण ऋद्धि भवन्तो ब्रुवन्तु ॥ ॐ कल्याण ३ ॥ ॐ यथे मां व्वाचङ्कल्याणीमावदानिजनेभ्यः ब्रह्मराजन्य भ्याँ शूद्रायचर्यायचस्वायचारणायच ॥ प्रियो देवानां दक्षिणायैदा रिह भूया समयम्मेकामः समृध्य तामुपमादोनमतु ॥ २ ॥

सागरस्य यथा वृद्धिर्महा लक्ष्म्या दिभि. कृता।
सम्पूर्णा सुप्रभावा च. तां च ऋद्धिं ब्रुवन्तु न ॥

भो ब्राह्मणाः मह्य० अमुकर्मण ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु ॥ ॐ ऋध्यताम् ३ ॥ ॐ सत्रस्य ऋद्धिरस्यगन्म ज्योतिरमृता अभूम ॥ दिवम् थिव्या ऽ अध्यारुहामाव्विदायदेवान्त्स्वर्ज्योतिः ॥ ३ ॥

स्वतिस्तुयाविना शाख्या पुण्यकल्याण वृद्धिदा ।
विनायक प्रिया नित्यं तां च स्वति ब्रुवन्तु नः ॥

भो ब्राह्मणाः मह्य० अमुक कर्मण कल्याण भवन्तो ब्रुवन्तु ॥ ॐ तिरे ॥ ॐ स्वति नऽ इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषाविश्ववेदाः स्वस्ति स्ताद्र्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनोबृहस्पतिर्दधात ॥ ४ ॥

समुद्रमथनाज्जाया जगदानन्द कारिका
हरिप्रिया च मांगल्या श्रियं च ब्रुवन्तु न ॥

भो ब्राह्मणाः मह्य० अमुक कर्मण श्रीरस्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु ॥ ॐ अस्तु श्रीः३ ॥ ॐ श्रीश्चतेलक्ष्मीश्चपत्न्या वहोरात्रे पार्श्वेनक्षत्राणि पमशिवनौ व्यापम् ॥ इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाण सर्वं लोकम्मऽइषाण ५ ॥

अस्मिन् पुण्याहवाचने न्यूनातिरिक्तोयोविधिः स उपविष्ट ाह्मणानां वचनात् श्रीमहागणपतिप्रसादाच्च सर्वः परिपूर्णोऽस्तु ॥ ॐ ग्स्तु परिपूर्णः ॥

पश्चात् आचार्य पूजित कलश के जल से यजमान का अभिषेक करें। (नोटः-अभिषेक में पत्नी वाम भाग में बैठती है।)

ॐ पयः पृथिव्याम्पयः ऽओषधीषुपयोदिव्यन्तरिक्षेपयोधाः । पय स्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम ॥ १ ॥ ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्त्रोतसः । सरस्वती तु पञ्चधासो देशे भवत्सरित् ॥ २ ॥ ॐ वरुणस्यो तम्भनमसि वरुणस्यस्कंभसज्जनीस्थो वरुणस्यऽऋत सदन्न्यसि वरुण स्यऽऋतसदनमसि वरुणस्यऽऋतसदनमासीद ॥ ३ ॥ ॐ द्यौः शान्ति रन्तरिक्षँ शान्तिः पृथिवी शान्तिः रापः शान्तिरोषधयः शान्तिः । वनस्प यः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः सर्वँ शान्तिः शान्तिरेवशान्तिः समाशान्तिरेधि ॥ ४ ॥ यतोयतः समीहसे ततोनोऽअयङ्कुरुशन्नः । कुरु प्रजाभ्यो भयन्नः पशुभ्यः ॥ ५ ॥ ॐ शान्तिरे ॥

पश्चात् पुत्रवती माता यजमान की कपूर से आरती करे

ॐ अनाघृष्ठापुरस्तादग्नेराधिपत्यऽआयुर्मेदाः पुत्रवती दक्षिण इन्द्रस्याधिपत्येप्रजाम्मेदाः सुखदापश्चाद्देवस्य सवितुराधिपत्येचक्षुर्मे आश्रु तरुत्तरतोधातुराधिपत्येरायस्पोषम्मेदाः ॥ विधृतिरुपरिष्ठाद्बृहस्पतेराधित्येऽओजोमेदाविश्वाभ्यो मानाष्ट्राभ्यस्पाहिमानोरश्वासि ॥

पश्चात् संकल्प करें।

अनेन पुण्याहवाचनेन श्री प्रजापति प्रीयताम् ॥ इति ॥

६. अथ मातृका पूजनः-

नोटः-सर्व प्रथम प्रत्येक मातृका पूजन में नाम मंत्र आव्हान करें। पश्चात् गंधादि पूजन करें।

(१) षड् विनायक पूजनः-

गेहूँ पर षड् विनायक की स्थापना कर उनका आव्हान पूजन करें।

ॐ मोदाय नमः मोदमावाहयामि ॥ १ ॥ ॐ प्रमोदाय नमः प्रमोदमावाहयामि ॥ २ ॥ ॐ सुमुखाय नमः सुमुखमावाहयामि ॥ ३ ॥ ॐ दुर्मुखाय नमः दुर्मुखमावाहयामि ॥ ४ ॥ ॐ अविघ्नाय नमः अविघ्नमावाहयामि ॥ ५ ॥ ॐ विघ्नकर्त्रेनमः विघ्नकर्तारमावाहयामि ॥ ६ ॥

(२) मंडप मातृका पूजनः—

यजमान आचार्य के हाथ में निम्न वस्तुएं दे और आचार्य इसका प्रत्युतर दे।

१. जलः-ॐ अत्राः पांतु सुप्रोक्षितमस्त्वि.त भवन्तो ब्रुवंतु ॥ ॐ अत्राः पांतु सुप्रोक्षितमस्तु ॥

२. गन्धः-गन्धाः पान्तु सौमंगल्यं चास्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु ॥ ॐ गन्धाः पांतु सौमंगल्य चास्तु ॥

३. अक्षतः-ॐ अक्षताः पांतु आयुष्यमस्त्विति भवंतो ब्रुवंतु ॥ ॐ अक्षतः पांतु आयुष्यमस्तु ॥

४ पुष्पः-ॐ पुष्पाणि पांतु सौश्रियमस्त्विति भवंतो ब्रुवन्तु ॥ ॐ पुष्पाणि पांतु सौश्रियमस्तु ॥

५. ताम्बूलः-ॐ ताम्बूलानि पांतु ऐश्वर्यमस्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु ॥ ॐ ताम्बूलानि पांतु ऐश्वर्यमस्तु ॥

४. दक्षिणाः-ॐ दक्षिणा पांतु बहुधनमस्त्विति भवंतो ब्रुवन्तु ॥ ॐ दक्षिणा पांतु बहुधनमस्तु ॥

७ मिष्ठान्नः-ॐ अपूपाः पांतु बहु अन्न चास्त्विति भवन्तो ब्रुवंतु ॥ ॐ अपूपाः पांतु बहु अन्नमस्तु ॥

८. शाखा द्रुव पंच मातृकाः-ॐ शाखा द्रुवा पांतु वृद्धिरस्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु ॥ ॐ शाखाद्र्वा पांतु शाखा पल्लवानां वृद्धिश्चास्तु ॥

तब आचार्य वे मातृकाएं यजमान पत्नी के हाथ में दे और वह किसी कांस्यपात्र में निम्न मंत्र से उन्हे सुगन्धित तेल से स्नान करावे ॥

ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम् । देवस्त्वासविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेणसुप्वा कामधुक्षः ॥

पश्चात् क्रमशः दधि व हल्दी डालें और बाद में चतुष्कोण पर उसे बांधते हुए कहें । स्थिरो भाव ॥ पश्चात् उनका आह्वान व पूजन करें ।

ॐ नन्दिन्यै नमः नन्दिनीमावाह्यामि ॥ १ ॥ ॐ नलिन्यै नम नलिनीमावाह्यामि ॥ २ ॥ ॐ मैत्रायै नमः मैत्रामावाह्यामि ॥ ३ ॥ ॐ उमायै नमः उमामावाह्यामि ॥ ४ ॥ ॐ पशुवर्धिन्यै नमः पशुवर्द्धिनी मावाह्यामि ॥ ५ ॥

(३) षोडश मातृका पूजनः–

निम्न मंत्रों से षोडष मातृका का आव्हान व पूजन करें ।

ॐ गणेशायनमः गणेशमावाह्यामि ॥ १ ॥ ॐ गौर्यैनमः गौरी मावाह्यामि ।२। ॐपद्मायै नमः पद्मामावाह्यामि ।३। ॐशच्यैनमः शचीमा वाह्यामि ॥ ४ ॥ ॐ मेधायैनमः मेधामावाह्यामि ॥ ५ ॥ ॐ सावित्र्यै नमः सावित्रीमावाह्यामी ॥ ६ ॥ ॐ विजयायैनमः विजयामावाह्यामि ॥ ७ ॥ ॐ जयायैनमः जयामावाह्यामि ॥ ८ ॥ ॐ देवसेनायैनमः देवसे नामावाह्यामि ॥ ९ ॥ ॐ स्वधायैनमः स्वधामावाह्यामि ॥ १० ॥ ॐ स्वाहायैनमः स्वाहामावाह्यामि ॥११॥ ॐ मातृभ्योनमः मातृरावाह्यामी ॥ १२ ॥ ॐ लोकमातृभ्यो नमः लोकमातृरावाह्यामि ॥१३। ॐ हृष्ट्यै नमः हृष्टिमावाह्यामि ॥ १४ ॥ ॐ पुष्ट्यै नमः पुष्टिमा वाह्यामि ॥ १५ ॥ ॐ तुष्ट्यै नमः तुष्टिमावाह्यामि ॥ १६ ॥ ॐ कुलदेवतायैनमः कुलदेवतामावाह्यामि ॥ १७ ॥

(४) सप्तघृतमातर पूजनः–

सर्व प्रथम दीवार पर निम्न मंत्र से घृत की सात लकीरें बनावें ।

ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्त्रधारम् । देवस्त्वा सविता पुनातुव्वसोः पवित्रेण शतधारेणसुप्वा कामधुक्षः ॥

पश्चात् घृत लकीरों पर घृतमातरों का आह्वान व पूजन करें।

ॐ श्रियै नमः श्रियमावाहयामि ॥ ॐ लक्ष्म्यै नमः लक्ष्मीं आवाहयामि ॥ २ ॥ ॐ धृत्यै नमः धृतिमावाहयामि ॥ ३ ॥ ॐ मेधायै नमः मेधामावाहयामि ॥ ४ ॥ ॐ पुष्ट्यै नमः पुष्टिमावाहयामि ॥५॥ श्रद्धायै नमः श्रद्धामावाहयामि ॥ ६ ॥ सरस्वत्यैनमः सरस्वतीमावाहयामि ।

(नोटः-यदि कार्य विस्तृत करना हो तो निम्न मातृकाओं का भी आह्वान व पूजन करें।)

५. स्थलमातृकाः-ब्राह्मीमाहेश्वरी चैव कौमारी वैष्णवीतथा ।
वाराही च तथैन्द्राणी चामुंडा सप्त मातरः ॥

६. द्वार मातृकाः-जयन्ती मंगला चैव पिंगला दक्षिणे गृहात् ।
आनन्दवर्धिनी वामे महाकाली च निर्गमे ॥

७. जल मातृकाः-मत्सी कूर्मी च वाराही मांडूकी मकरी तथा ।
ग्राहकी क्रौंचकी चैव, सप्तैता जलमातरः ॥

८. गृह मातृकाः-कीर्तिर्लक्ष्मी धृतिर्मेधा पुष्टि श्रद्धाक्रियामति ।
बुद्धिर्लज्जा वपु शान्तिस्तुष्टि कान्तिस्तुमातरः ॥

पश्चात् कर बद्ध हो आयुष्य मंत्र का जप करें।

ॐ आयुष्यं वर्च्चस्य ँ रायस्पोषमौद्भिदम्। इद ँ हिरण्यम्वर्चस्व ज्जैत्रायाविशता दूमाम् ॥ १ ॥ नतद्रक्षा ँ सिनपिशाचास्तरन्ति देवाना मोजः प्रथमज ँ ह्येतत्। यो बिभर्तिदाक्षायण ँ हिरण्य ँ सदेवेषु कृणुते दीर्घमायु समनुष्येषु कृणुते दीर्घमायुः ॥ २ ॥ यदाबध्नं दाक्षायणा हिरण्य ँ शतानी काय सुमनस्यमानाः। तन्म आबध्नामि शत शारदाया युष्माञ्जरदष्टिर्यथासम् ॥ ३ ॥ इति ॥

१०. सांकल्पिक नान्दी श्राद्ध

यजमान अपने सम्मुख तीन पात्र रखे। प्रथम विश्वेदेवा का, द्वितीय स्व पितरों का, तृतीय मातामह पितरों का होगा। तदनन्तर आचमभ्य प्राणायाम कर संकल्प करे।

अद्यामुक कर्माङ्ग त्वेन सांकल्पिक विधिना ब्राह्मण युग्म भोजन पर्याप्तान्न निष्क्रीयभूत यथाशक्ति हिरण्येन नान्दीश्राद्ध मह करिष्ये॥

पश्चात् आचमनी में जल भर कर क्रमशः तीन पात्रों में निम्न तीन मंत्रो से डाले।

ॐ सत्यवसु संज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पाद प्रक्षालनं वृद्धिः॥ १॥ अमुक गोत्राः पितृ पितामह प्रपितामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्य पादावने जनं पाद प्रक्षालन वृद्धिः॥ २॥ द्वितीय गोत्राः मातामह प्रमातामहाः वृद्ध प्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्व इदं वः पाद्यं पदावने जन पाद प्रक्षालनं वृद्धिः॥ ३॥

तदनन्तर निम्न मंत्रो से क्रमशः तीनों पात्रो में जौ डाले।

सत्य वसु संज्ञकानां विश्वेषां देवानां नान्दीमुखानाम ॐ भूर्भुवः स्वः इद आसनम्॥ १॥ अमुक गोत्राणां पितृ पितामह प्रपितामहानां सपत्नीकानां नान्दीमुखानां ॐ भूर्भुव स्वः इदमासनम्॥ २॥ द्वितीय गोत्राणां मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहानां नान्दीमुखानां ॐ भूर्भुवः स्व इदमासनम्॥ ३॥

तदनन्तर निम्न मंत्रो से क्रमशः तीनों पात्रों का गन्धादि से पूजन करे।

सत्य वसु संज्ञकेभ्यो विश्वेभ्यो देवेभ्यो नान्दीमुखेभ्यः इदं गंधाद्यर्चनं स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः ॥ १ ॥ अमुक गोत्रेभ्यो पितृ पितामह प्रपितामहेभ्यः सपत्नीकेभ्यो नान्दीमुखेभ्यः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः ॥ २ ॥ द्वितीय गोत्रेभ्यो मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहेभ्यः सपत्नीकेभ्यो नान्दीमुखेभ्यः इद गंधाद्यर्चनम् स्वाहा संपद्यतां वृद्धि ॥ ३ ॥

तदनन्तर निम्न मंत्रों से क्रमशः तीनों पात्रों में भोजन निमित्त दक्षिणा दान करें ।

सत्य वसु सञ्ज्ञकेभ्यो विश्वेभ्यो देवेभ्यो नान्दीमुखेभ्यः ब्राह्मण युग्म भोजन पर्याप्तमन्न तन्निष्क्रयीभूतं किंचिद्धिररण्यं दत्तममृतरूपेण स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः ॥१॥ अमुक गोत्रेभ्यः पितृ पितामह प्रपितामहेभ्यः सपत्नीकेभ्यो नान्दीमुखेभ्यः ब्राह्मण युग्म० ॥ २ ॥ द्वितीय गोत्रेभ्यो मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहेभ्यः सपीत्नकेभ्यो नान्दीमुखेभ्यः ब्राह्मण युग्म० ॥ ३ ॥

तदनन्तर जल व दूध मिलाकर आचमनी बढ़कर निम्न मंत्रों द्वारा क्रमशः तीनों पात्रों में डाले ।

सत्य वसु संज्ञकाः विश्वदेवाः नान्दी मुखाः प्रीयंताम् ॥ १ ॥ अमुक गोत्राः पितृ पितामह प्रपितामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः प्रीयंताम् ॥ २ ॥ द्वितीयगोत्राः मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः प्रीयताम् ॥ ३ ॥

तदनन्तर कर बद्ध होकर आर्शीवाद ग्रहण करें ।

गोत्रं नो वर्द्धताम् । वर्द्धतां वो गोत्रं । दातारो नोभि वर्द्धताम् ।

वर्धतां वोदातारः। वेदाश्चनोभिवर्धताम् वर्द्धतांम् वोवेदाः। संतति भिवर्द्धताम्। वर्धतां वः सततिः। श्रद्धाचनोमाऽव्यगमत् मावयगम श्रद्धाः। बहुदेयं चनोस्तु अस्तु वो बहुदेयम्। अन्नं च नो बहु भवेत भवतुवो बह्वन्नम्। अतिथिंश्चलभेमहि। लभंता वोतिथयः। याचितारश्च संतु संतु वो याचितारः। एता आशिषः सत्या सन्तु संत्याशिषः।

तदनन्तर निम्न तीन मंत्रों द्वारा क्रमशः तीनों पात्रों में अद्र आँवला कालीदाख व जल एक साथ डालें।

सत्यवसु संज्ञकेभ्यो विश्वेभ्यो देवेभ्यो नान्दीमुखेभ्यः कृत नान्दी श्राद्धस्य फल प्रतिष्ठा सिद्धयर्थं द्राक्षामलक यवमूल निष्क्रयी भू दक्षिणां दातुमहमुत्सृजेत्।१। अमुकगोत्रेभ्यः पितृ पितामाह प्रपितामहेभ सपत्नीकेभ्यो नान्दीमुखेभ्यः कृतस्य० ॥ २ ॥ द्वितीय गोत्रेभ्यो मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहेभ्यः सपत्नीकेभ्यो नान्दीमुखेभ्यः कृतस्य० ॥३

निम्न मंत्र द्वारा देवता का विसर्जन करें। विसर्जन हेतु ढोल या ताली बजावे।

ॐ ऽवाजेऽवाजे वतऽवा जिनोनोधनेषु ऽविप्राऽअमृताऽ ऋतज्ञाः अस्य मध्वः पिवतमादयध्वन्तृ प्राप्तयात पथिभिर्देवयानैः ॥ १ ॥ ॐ आमाऽवाजस्य प्रसवो जगम्या देम द्यावा पृथिवी ऽविश्वरूपे। आमागंत पितरा मातरा चा मा सोमोऽअमृतत्वेन गम्यात् ॥ २ ॥

तदनन्तर संकल्प करे।

अस्मिन्नांदी श्राद्धेन्यूनातिरिक्तो यो विधिः स उपविष्ट ब्राह्मणान वचन्नांदीमुख प्रसादात्सर्वः परिपूर्णोस्तु। अस्तु परिपूर्णः॥ इति

११. ब्रह्माचार्य ऋत्विग्वरुणम् :-

सर्व प्रथम आचार्य ब्रह्मा व ऋत्विक् वरुण के लिए संकल्प करें ।

अमुकगोत्रोत्पन्न अमुकशर्मण: अस्मिन् कर्मणि आचार्यत्वेन। ब्रह्मत्वेन। ऋत्विक्त्वेन एभिर्गंधाक्षततांबूलमुद्रिकावासोभिः त्वामहं वृणे । तब ब्रह्मण कहे वृतोऽस्मि ।

तब यजमान ब्राह्मण को संकल्प का जल वस्त्र दक्षिणा व फल देकर निम्न मन्त्र से वरुणी बांधेगा ।

ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोतिदीक्षयाऽऽप्नोतिदक्षिणाम् । दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते ।

तब ब्राह्मण उक्त मंत्र से ही यजमान को वरुणी बांधें । पश्चात् यजमान क्रमशः आचार्य, ब्रह्मा और ऋत्विक् से प्रार्थना करें ।

(१) आचार्य प्रार्थनाः—आचार्यस्तुयथा स्वर्गे शक्रादीनां बृहस्पतिः ।
तथा त्वं मम यज्ञे स्मिन्नाचार्यो भव सुव्रत ॥१॥

(२) ब्रह्मा प्रार्थनाः—यथा चतुर्मुखो ब्रह्मा सर्व लोक पितामहः ।
तथा त्वं मम यज्ञे स्मिन्ब्रह्मा भव द्विजोत्तम ॥ २ ॥

(३) ऋत्विक् प्रार्थनाः—अस्य यज्ञस्य निष्पत्तौ भवंतोऽभ्यर्थितामया ।
सुप्रसन्नैः प्रकर्त्तव्य शांतिकं विधिपूर्वकम् ॥ ३ ॥

१२. अग्नि स्थापनः-

सर्व प्रथम हवन वेदी पर निम्न रुप से पंच भू संस्कार करें ।

स्त्रिभिर्दर्भैः परिसमूह्य ॥ १ ॥ गोमयोदकाभ्यामुपलिप्य ॥ २ ॥ स्रुवमूलेनप्रागग्रप्रादेश मात्रं त्रि उल्लिख्य ॥३॥ अनामिकांगुष्ठाभ्यामुद्धृत्य ॥ ४ ॥ उदकेनोभ्युक्ष ॥ ५ ॥

पश्चात् अग्नि का कुछ भाग नैऋत्य कोण में डालते हुए कहे-
ॐ हूं फट। पश्चात् समस्त अग्नि वेदी पर स्थापित करें।

ॐ अग्निदूतपुरोदधेहव्यवाहमुपब्रुवे। देवाँ२ऽआमादयादिह।

पश्चात् जिस पात्र में अग्नि लाई गई थी उसका पूजन कर
फिर निम्न मंत्र से अग्नि का ध्यान करें।

ॐ चत्वारिश्रृंगात्रयोऽअस्यपादा द्वेशीर्षे सप्तहस्तासोऽअस्य। त्रिध
बद्धोवृषभोरोरवीति महोदेवो मर्त्याँ२ऽअविवेश॥

पश्चात् अग्नि का गन्धादि पूजन करें।

१३. नव ग्रहादि देव पूजनः—

सर्व प्रथम वाम हस्त में चावल लेकर दक्षिण हस्त से एक-२
मंत्र द्वारा एक-२ ग्रह पर छिड़कावें।

ॐ आकृष्णेनरजसावर्त्तमानो निवेशयन्नमृर्त्यं च। हिरण्ययेन
सविता रथेना देवोयाति भुवनानि पश्यन्॥ ॐ भूर्भुवः स्व कलिंग देशो
द्भव काश्यप गोत्र रक्त वर्ण भो सूर्य इहागच्छ इहतिष्ठ। सूर्याय नमः
सूर्य आवाहयामि स्थापयामि ॥ १ ॥

ॐ इमन्देवाऽअसपत्न सुवध्वम्महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय
महते जानराज्या येन्द्रस्येन्द्रियाय। इममुष्य पुत्रममुष्यै विशऽएषवोमी
राजा सोमोस्माकं ब्राह्मणाना राजा॥ ॐ भूर्भुव स्वः यमुना तीरोद्भव
आत्रेय सगोत्र शुक्लवर्ण भो सोम इहागच्छ इह तिष्ठ। सोमाय नमः
सोममावाहयामि स्थापयामि ॥ २ ॥

ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथव्याऽअयम्। अपा रेता
सिजिन्वति॥ ॐ भूर्भुव स्वः अवन्तिक देशोद्भव भारद्वाज सगोत्र रक्त वर्ण
भो भौम इहागच्छ इहतिष्ठ। भौमाय नमः भौममावाहयामि स्थापयामि
॥ ३ ॥

ॐ उद् बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहित्वमिष्टा पूर्ते सँ सृजेथा मयं च। अस्मिन्त्सधस्थेऽअध्युत्तरस्मिन्विश्वेदेवा यजमानश्च सदित ॥ ॐ भूर्भुव स्वः मगधदेशोद्भव आत्रेय सगोत्र पीत वर्ण भो बुद्ध इहागच्छ इहतिष्ठ बुधाय नमः बुध आवाहयामि स्थापयामि ॥ ४ ॥

ॐ बृहस्पतेऽअतियदर्यो ऽअर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवसऽऋतप्रजाततदस्मासु द्रविणन्धेहि चित्रम्। ॐ भूर्भुव स्वः सिन्धु देशोद्भव आंगिर सगोत्र पीत वर्ण भो बृहस्पति इहागच्छ इह तिष्ठ। बृहस्पते नमः बृहस्पतिमावाहयामि स्थापयामि ॥ ५ ॥

ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्राह्मणाव्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमम्प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानँ शुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोमृत मधु ॥ ॐ भूर्भुव स्वः भोजकट देशोद्भव भार्गव सगोत्र शुक्ल वर्ण भो शुक्र इहागच्छ इहतिष्ठ शुक्रं आवाहयामि स्थापयामि ॥ ६ ॥

ॐ शन्नोदेवी रभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये शंय्योरभिस्रवन्तु नः॥ ॐ भूर्भुव स्वः सौराष्ट्र देशोद्भव काश्यप सगोत्र कृष्ण वर्ण भो शनिश्चर इहागच्छ इह तिष्ठ। शनैश्चराय नमः। शनैश्चरमावाहयामि स्थापयामि ॥ ७ ॥

ॐ कया नश्चित्रऽआभुव दूतीसदा वृधः सखा। कया शचिष्टया वृता॥ ॐ भूर्भुवः स्वः राठीनापुरोद्भव पैठिन सगोत्र कृष्ण वर्ण भो राहू इहागच्छ इहतिष्ठ। राहवे नमः राहूं आवाहयामि स्थापयामि ॥ ८ ॥

ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवेपेशोमर्याऽअपेशसे। समुषद्भिर जायथाः॥ ॐ भूर्भुव स्वः अतर्वेदि समुद्भव जैमिनि सगोत्र धूम्र वर्ण भो केतो इहागच्छ इहतिष्ठ। केतव नमः केतुमावाहयामि स्थापयामि ॥ ९ ॥

पश्चात् प्रत्येक ग्रह के दक्षिण भाग में अधिदेवता की स्थापना व पूजन करें।

(१) सूर्य दक्षिणपार्श्वे-ईश्वर इहागच्छ इहतिष्ठ ईश्वराय नमः ईश्वरमाह्वयामि (२) सोम दक्षिणपार्श्वे-उमे इहागच्छ उमायैनमः (३) भौम दक्षिणपार्श्वेः-स्कन्द इहागच्छ स्कन्धाय नमः (४) बुधदक्षिणपार्श्वे-विष्णो इहागच्छ विष्णवे नमः (५) रुद्र क्षिणपार्श्वे-ब्रह्मन्निहागच्छ ब्रह्मणे नमः (६) शुक्र दक्षिणपार्श्वे-इन्द्र इहागच्छ इन्द्राय नमः (७) शनि दक्षिणपार्श्वे-यम इहागच्छ यमाय नमः (८) राहु दक्षिणपार्श्वे काल इहागच्छ कालाय नमः (९) केतु दक्षिणपार्श्वे-चित्रगुप्त इहागच्छ चित्रगुप्ताय नमः ॥

पश्चात् प्रत्येक ग्रह के वाम भाग में प्रत्याधिदेवता की स्थापना व पूजन करें।

(१) सूर्य वामपार्श्वे-अग्ने इहागच्छ अग्नये नमः (२) सोम-वामपार्श्वे-आप इहागच्छ अद्भ्योनमः ३) भौम वामपार्श्वे-पृथिवी इहागच्छ पृथिव्यै नमः (४) बुध वामपार्श्वे-विष्णो इहागच्छ विष्णवेनमः (५) गुरू वामपार्श्वे-इन्द्र इहागच्छ इन्द्राय नमः (६) शुक्र वामपार्श्वे-इन्द्राणि इहागच्छ इन्द्राण्यै नमः (७) शनि वामपार्श्वे-प्रजापते इहागच्छ प्रजापतये नमः (८) राहु वामपार्श्वे-ब्रह्मन् इहागच्छ ब्रह्मणे नमः ॥

पश्चात् पंच लोकपाल की स्थापना व पूजन करें।

(१) राहोरूत्तरतः-गणपते इहागच्छ गणपतये नमः। (२) शनेरुत्तरतः-दुर्गे इहागच्छ दुर्गायै नमः (३) रवेरुत्तरत वायो इहागच्छ वायवे नमः (४) राहोर्दक्षिणे-आकाश इहागच्छ आकाशाय नमः (५) केतोर्दक्षिणे-अश्विनौ इहामच्छतं अश्विभ्यां नमः।

पश्चात् दश दिक्पालों की स्थापना व पूजन करें।

(१) पूर्वेः-इन्द्र इहागच्छ इन्द्राय नमः। (२) आग्नेयम्:-अग्ने इहागच्छ अग्नये नमः। (३) दक्षिणेः-यम इहागच्छ यमाय नमः।

४) नैऋत्याम्-निऋते इहागच्छ निऋतये नमः। (५) पश्चिमेः-रुण इहागच्छ वरुणाय नमः। (६) वायव्याम्-वायो इहागच्छ ायवे नमः। (७) उत्तरेः-सोम इहागच्छ सोमाय नमः। (८) शान्याम्-ईश्वर इहागच्छ ईश्वराय नमः। (६) पूर्वेशानयोर्मध्ये र्ध्वयाम्:-ब्रह्मन् इहागच्छ ब्रह्मणे नमः। (१०) निऋतिपश्चिमयो ये अधः स्थायाम्:-अनन्त इहागच्छ अनन्ताय नमः।

पश्चात् समस्त देवताओं का गन्धादि से पूजन कर मस्कार करें।

ॐ सूर्यादि ग्रहेभ्यो नमः। ॐ रुद्राद्यधिदेवेभ्यो नमः। ॐ ग्न्यादिप्रत्याधि देवताभ्यो नमः। ॐ विनायकादि पंच लोकपालेभ्यो मः। ॐ इन्द्रादि दशदिक्पालेभ्यो नमः।

अन्त में संकल्प करें।

अनया पूजया आदित्यादि ग्रह मंडल देवता प्रीयंताम्॥ इति॥

१४. रुद्र कलश स्थापनम्:

ईशान कोण में रुद्र कलश की स्थापना करें। कलश स्थापना की विधि पृष्ठ ६ से १२ पर देखें। पश्चात् रुद्र के मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा कर उस कलश पर विराजमान् करें पश्चात् निम्न मंत्र से रुद्र भगवान् का आव्हान व पूजन करें।

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उत्तोत्तः। बाहुभ्यामुत्ततेनमः। भूर्भुवः स्वः रुद्राय नमः रुद्रमावाहयामि॥

पश्चात् गन्धादि पूजन कर संकल्प करें।

अनेन पूजनेन भगवान रुद्रः प्रीयताम् न मम॥ इति॥

१५. कुशकंडिका व होम कर्मः–

सर्व प्रथम ब्रह्मा को अग्नि की परिक्रमा करवाकर उत्तर की ओर उसे विराजमान करे। दक्षिण की ओर प्रणीता प्रोक्षणी पात्र रखे उसमें जल डालकर उन्हें दर्भों से ढक देवें। फिर निम्न क्रम से परिस्तरण करें। (१) अग्नि कोण से ईशान कोण तक (२) ब्रह्मा से अग्नि तक (३) नैऋत्य कोण से वायव्य कोण तक (४) अग्नि से प्रणीता के जल पात्र तक। फिर होम की सामग्री क्रम से रख देवें। उस सामग्री को प्रोक्षणी पात्र से छींटे लगावे। प्रणीता पात्र ब्रह्मा को दिखावे। फिर अग्नि और प्रणीता पात्र के मध्य में प्रोक्षणी पात्र रखे। प्रणीता पात्र में पवित्री डाले। तदन्तर तीन समिधाएं लेकर ब्रह्मा का ध्यान कर तूष्णीं समिधाएं अग्नि में डाल देवे

पश्चात् निम्न मंत्र से घृत द्वारा हवन करें और शेष भाग प्रोक्षणी पात्र में डालें।

ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये न मम ॥ १ ॥ ॐ इन्द्राय स्वाहा इ इन्द्राय न मम ॥ २ ॥ ॐ अग्नये स्वाहा इदं अग्नये न मम ॥ ३ ॥ ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय नमः ॥

पश्चात् वायव्य कोण पर अग्नि की स्थापना कर निम्न मंत्र से उसका पूजन करें।

ॐ अग्नेनयसुपथारायेऽस्मान्विश्वानिदेवव्वयुनानि विद्वान् युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनोभूयिष्ठान्तेनममऽउक्तिमविधेम ॥ ॐ मृडाग्नये नमः ॥

पश्चात् अग्नि का गन्धादि पूजन कर निम्न नाम मंत्रों से समिधा या चरू से होम करें।

ॐ गणपते स्वाहा। गौर्यै स्वाहा। पद्मायै स्वाहा। शच्यै स्वाहा। मेधायै स्वाहा। सावित्र्यै स्वाहा। विजयायै स्वाहा। जयायै स्वाहा। देवसेनायै स्वाहा। स्वधायै स्वाहा। स्वाहायै स्वाहा। मातृभ्यो स्वाहा। लोकमातृभ्यो स्वाहा। हृष्टयै स्वाहा। पुष्टयै स्वाहा। तुष्टयै स्वाहा। कुलदेवतायै स्वहा। मोदाय स्वाहा। प्रमोदाय स्वाहा। सुमुखाय स्वाहा। दुर्मुखाय स्वाहा। अविघ्नाय स्वाहा। विघ्नकर्त्रे स्वाहा। नन्दिन्यै स्वाहा। नलिन्यै स्वाहा। मैत्रायै स्वाहा। उमायै स्वाहा। पशुवर्धिन्यै स्वाहा। श्रियै स्वाहा। लक्ष्म्यै स्वाहा। धृत्यै स्वाहा। मेधायै स्वाहा। पुष्टयै स्वाहा। श्रद्धायै स्वाहा। सरस्वत्यै स्वाहा। सूर्याय स्वाहा। सोमाय स्वाहा भौमाय स्वाहा। बुधाय स्वाहा गुरुवे स्वाहा। शुक्राय स्वाहा। शनिश्चराय स्वाहा। राहवे स्वाहा। केतवे स्वाहा। नवअधिदेवेभ्यः स्वाहा। नव प्रत्यधिदेवेभ्यः स्वाहा। पंचलोकपालेभ्यः स्वाहा। दशदिक्पालेभ्यः स्वाहा ॥

(नोटः— यदि संस्कार कार्य में ब्राह्मण ने जप किया है तो उसका दशमांश होम करें।)

पश्चात् निम्न मंत्र से घृताहुति देवें।

ॐ अग्नयेस्विष्ठकृते स्वाहा। इदमग्नये स्विष्ठकृते न मम।

पश्चात् संकल्प करें।

अद्येत्यादि० कृतस्य कर्मणः सांगतासिद्धयर्थं मृडाग्नये स्थापित देवतानां पूजन च करिष्ये।

पश्चात् अग्नि व स्थापित देवताओं का गन्धादि पूजन कर नमस्कार करें।

ॐ मृडाग्नये नमः ॐ स्थापितदेवेभ्यः नमः।

पश्चात् निम्न नौ मंत्रो से घृत द्वारा हवन करें और शे
भाग प्रोक्षणी पात्र में डालें।

ॐ भूः स्वाहा इदं अग्नये न मम ॥ १ ॥ ॐ भुवः स्वाहा इ
वायवे न मम ॥ २ ॥ ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय न मम ॥३॥ ॐ त्वन्नो
अग्नेव्वरुणस्य व्विद्वान्देवस्य हेडोऽअवयासि सीष्ठाः। यजिष्ठो व्व
तमः। शोशुचानो व्विश्वाद्वेषा ँ सि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा ॥ इदं अग्नि
वरुणाभ्यां न मम ॥४। ॐ सत्वन्नोऽअग्ने व्वमोभवोति ने दिष्ठोऽअस्य
उषसो व्युष्टौ ॥ अवयक्ष्वनो व्वरुण ँ रराणो व्वीहिमृडीक ँ सुहवो न
ऽएधिस्वाहा ॥ इदमग्निवरुणाभ्यां न मम ॥५॥ ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभि
शस्ति पाश्च सत्यमित्व मयाऽअसि ॥ अयानो यज्ञं व्वहास्ययानो धेहि
भेषज ँ स्वाहा ॥ इदमग्नये अयसेन न मम ॥ ६ ॥ ॐ येते शत वरुण
ये सहस्रं यज्ञियाः पाशावितता महन्ताः। ते भिर्न्नोऽअद्यसवितोत विष्णु
र्विश्वे मुञ्चतु मरुतः स्वर्क्काः स्वाहा ॥ इद वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्
भ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम ॥ ७ ॥ ॐ उदुत्तमं व्वरुण
पाशमस्मदवाधम विमद्ध्यम ँ श्रथाय। अथाव्वयमादित्य व्रतेतवान
गसोऽअदितये स्याम स्वाहा ॥ इदं वरुणायादित्यायादितये च न मम
॥ ८ ॥ ॐ प्रजापते स्वाहा ॥ इदं प्रजापतये न मम ॥ ९ ॥

पश्चात् स्थापित देवता व दिग्पाल आदि के लिए वलिदान
हेतु संकल्प करें।

अद्येत्यादि० कृतस्य कर्मणः सांगतासिद्धयर्थं गणपत्यादि न
ग्रहादि देवता पंचलोकपाल दशदिक्पालेभ्यः बलिदानमहं करिष्ये ॥

पश्चात् गन्धादि पूजन कर प्रार्थना करें।

भो गणपत्यादि नवग्रह देवता पंचलोकपाल दशदिक्पालादि स
ग्रहाः दिशिं रक्षन्तु वलिं भक्षन्तु मम सकुटम्बस्य आयुकर्तारः क्षेमंकर्ता
भवन्तु।

पश्चात् संकल्प करें ।

अनेन बलिदानेन गणपत्यादि नवग्रह देवताः पंचलोकपोलाः दश दिक्पालाः प्रीयंताम् न मम ॥

सर्व प्रथम पूर्णाहुति के लिए संकल्प करें ।

अद्येत्यादि० अस्य कृतस्य कर्मण साङ्गता सिद्ध्यर्थं वसुधारा समन्वितं पूर्णाहुति होमं करिष्ये ॥

पश्चात् यजमान खड़ा होकर पूर्णाहूति होम करे ।

ॐ चत्वारि शृङ्गा त्रयोऽअस्यपादाद्वेशीर्षे सप्त हस्ता सोऽअस्य । त्रिधा बद्धोव्वृषभोरोरवीतिमहोदेवोऽमर्त्याँ२ आविवेश ॥ १ ॥ मूर्द्धानन्दिवोऽअरतिं पृथिव्या व्वैश्वानरमृत ऽआजातमग्निम् कविं सम्राजमतिथिञ्जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः स्वाहा ॥ इदमग्नयेवैश्वानराय वसुरुद्रादित्येभ्यः शतक्रतवे सप्तवते अग्नये अद्भ्यश्च न मम ॥ २ ॥

पश्चात् निम्न मंत्र से घृत धारा दे ।

ॐ व्वसोः पवित्र मसि शतधारम्व्वसोः पवित्र मसि सहस्र धारम् । देवस्त्वा सविता पुनातु व्वसोः पवित्रेण शत धारेण सुप्वा काम धुक्षः ॥

पश्चात् यजमान होम भस्मि से तिलक दे ।

ॐ त्र्यायुषञ्जमदग्नेः (ललाट) कश्यपस्य त्र्यायुषम् (ग्रीवा) । यद्देवेषु त्र्यायुषम् (दक्षिणभुजा) तन्नोऽअस्तु त्र्यायुषम् (हृदय) ॥

हाथ पैर धोकर अग्नि से कर बद्ध होकर आशीर्वाद लें ।

श्रद्धां मेधांयशः प्रज्ञां विद्यां पुष्टि श्रियं वलम् ।
तेज :आयुष्यमारोग्यं देहिमे हव्यवाहन ॥

तदनन्तर संकल्प करें।

अद्येत्यादि० आगारावादि पूर्णाहुतिं पर्य्यन्तं यद्यद्रव्यं यवद्य वत्संख्याक यस्यै यस्यै देवतायै यावत्योयात्य आहुतमस्तास्ता दे प्रीयताम् ।

पश्चात् संश्रव प्राशन कर ब्रह्मा को पूर्ण पात्र देने संकल्प करें ।

अद्येत्यादि० कृतैतद् अमुककर्मणि होमकर्म प्रतिष्ठामिदं पात्रं प्रजापतिदैवतममुकगोत्राय अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय ब्रह्मणे तु महं सम्प्रददे ।। "स्वति" इति प्रतिवचनम् ।।

पश्चात् ब्रह्मा की ग्रन्थि खोल दें और प्रणीता पात्र यजमान को छींटे लगावें।

ॐ सुमित्रियान ऽ आप ओषधय सन्तु।

पश्चात् प्रणीता पात्र को ईशान कोण में उल्टा करदें।

ॐ दुमित्रियास्तस्मै सन्तु योस्मान्द्वेष्टियंचव्वयं द्विष्मः ।

पश्चात् परस्तरण घृत में डुबोकर अग्नि में डाल दें।

ॐ देवागातु विदोगातुं व्वित्वागातुमित। मनसस्पतऽ इमं देवयः स्वाहा वातेधाः स्वाहा ।।

पश्चात् पूजित कलश के जल से आचार्य या ऋत्विक् स त्नीक यजमान का अभिषेक करें।

ॐ आपोहिष्ठा मयोभुवस्तान, उर्ज्जेदधातन। महेरणाय चद योवः शिवतमोरसः। तस्य भाजयते हनः। उशतीरिवमातरः। तस्मा ङ्गमामवः। यस्यक्षयायजिन्नवथ। आपोजनयथाचनः ।। १ ।।

मंत्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णासन्तु मनोरथाः ।
शत्रूणां बुद्धिनाशाय मित्राणां मुदयस्तव ॥२॥

पश्चात् आचार्य व ऋत्विक् की दक्षिणा एवम् ब्राह्मण भोजन का संकल्प करें । तदनन्तर (कार्य समाप्ति होने पर) हाथ में चावल लेकर देवताओं व अग्नि का विसर्जन करें ।

यांतु ग्रहगणाः सर्वे स्वशक्त्या पूजिता मया ।
इष्ट काम प्रसिद्धयर्थं पुनरागमना य च्च ॥ १ ॥
गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वर ।
यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्रगच्छ हुताशन ॥२॥

पश्चात् यजमान ब्राह्मणों को नमस्कार करें ।

यत् कृतं अमुककर्मणः तत्कालहीनं भक्तिहीनं श्रद्धाहीनं द्रव्यहीनं च भवतां ब्राह्मणानां वचनात् श्रीगणपति प्रसादाच्च परिपूर्णतास्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु ॥ अस्तु परिपूर्णता ॥ इति ब्राह्मणाः ब्रूति ॥

पश्चात् कर बद्ध होकर भगवान् का स्मरण करें ।

यस्य स्मृत्याचनामोक्त्या, तपः पूजाक्रियादिषु ।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति, सद्योवंदे तमच्युतम् ॥ १ ॥
आवाहनं न जानामि न जानामि तवार्चनम् ।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर ॥२॥
प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेता ध्वरेषु यत् ।
स्मरणादेवतद्विष्णोः सम्पूर्णस्यादिति श्रुतिः ॥३॥
ॐ विष्णवे नमः ॥ ॐ विष्णवे नमः ॥ ॐ विष्णवे नमः ॥

॥ इति संस्कार प्रदीपे प्रथम प्रकरणं समाप्तम् ॥

।। अथ संस्कार प्रदीपस्य द्वितीयः प्रकरणः प्रारम्भ

१. गर्भाधान संस्कारः—

स्त्री के प्रथमवार रजस्वला होने के चतुर्थ दिन गर्भा संस्कार किया जाता है। सर्व प्रथम स्त्री पूर्व दिशा में पश्चात् यजमान आचमन व प्राणायाम कर निम्न संकल्प क

देशकालौ संकीर्त्य० अस्या मम भार्यायाः प्रथमगर्भातिशर अस्यां जनिष्यमाणसर्वगर्भाणां बीजगर्भा समुद्भवै नोनिवारणार्थं ग धान संस्कारमह करिष्ये।

पश्चात् गणपति पूजन से लेकर नान्दी श्राद्ध तक सग कार्य करें। तदनन्तर यजमान सपत्नीक निम्न मंत्र से सूर्य दर्शन करें।

ॐ आदित्यगर्भम्पयसासमङ्ग्धिहस्रस्यप्रतिमाम्विश्वरूपम् परिवृङ्ग्धिहरसामाभिमँ स्थाः शतायुः षङ्कृणुहिचीयमाना।

रात्रि के समय शयनागार में बिस्तर पर बैठकर पति, प की कमर व नाभि पर हाथ रखकर निम्न मंत्र पढ़े।

ॐ पूषाभगँ सवितामेददातु रुद्रः कल्पयतुललामगुम्विष्ण निष्कल्पयतुत्वष्टारूपाणिपिँ शतु।

आसिंचतुप्रजापतिर्धाता गर्भन्दधातुते।
गर्भधेहिसिनीवालि गर्भवेहि पृथुष्टुके ।।१।।
गर्भं तेऽश्विनौ देवा वाधत्तां पुष्करस्रजौ।
तेजोवैश्वानरोदद्यादथ ब्रह्मानु मन्त्रयते।। ब्रह्मागर्भ

गर्भाधान देने के पश्चात् पत्नी के दक्षिण कन्धे पर हाथ रखकर निम्न मन्त्र पढ़ें।

ॐ यत्ते सुशीमेहृदयन्दिविचन्द्रमसिश्रितम्। वेदाहन्तन्मान्तद्विद्या-त्पश्येम शरदः शतं जीवेमशरदः शत ँ शृणुयाम शरदः शतम्॥

पश्चात् दश ब्राह्मण भोजन का संकल्प करें ॥ इति ॥

२. पुंसवन संस्कारः-

स्त्री के दो या ३ मास का गर्भ होने पर यह संस्कार किया जाय। सर्व प्रथम आचमन व प्राणायाम कर निम्न संकल्प करें।

देशकालौ संकीर्त्य० अस्यां मम भार्यायामुत्पत्स्यमानस्यगर्भस्य बैजिकगार्भिकदोषपरिहारार्थं पुंरूपता ज्ञानोदय प्रतिरोध परिहार द्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं पुंसवनं करिष्ये।

पश्चात् गणपति पूजन से नान्दी श्राद्ध तक सम्पूर्ण क्रिया करने के उपरान्त गुलर व दूर्वा मिश्रित जल से पति, पत्नी की दक्षिण नासिका पर निम्न मंत्र से छींटे लगावे।

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रेभूतस्यजातः पतिरेकऽ आसीत्। सदाधार पृथिवीन्द्यामुतेमाँ कस्मैदेवायहविषाविधेम ॥१॥ ॐ अद्भ्यः सम्भृतः पृथिव्यैरसाच्च व्विश्वकर्मणः समवर्तताग्रे। तस्यत्वष्टादद्रुपमेति तन्मर्त्यस्य देवत्वमाजानमग्रे ॥२॥

पश्चात् पति, पत्नी के गर्भ पर हाथ रखे।

ॐ सुपर्णोसिगरुत्मांस्त्रिवृत्ते शिरोगायत्रं चक्षुर्बृहद्रथंतरेपक्षौ। स्तोमऽआत्माच्छन्दा ँ स्यङ्गानियजू ँ षिनाम। सामततनूर्वाम

देऽन्यज्ञा यज्ञियम्पुच्छन्धिष्ण्याः शफाः । सुपर्णोसिगरुत्मान्दिवङ्ग स्वः पत ॥

पश्चात् दश ब्राह्मण भोजन का संकल्प करें ॥ इति ॥

३. सीमन्त संस्कारः-

यह संस्कार प्रथम गर्भ के सप्तम मास में किया जा सर्व प्रथम आचमन व प्राणायाम कर संकल्प करें ।

देशकालौसंकीर्त्य० तनुरुधिरप्रियालक्ष्मीभूतराक्षसीगणादूर नि नक्षम सकलसौभाग्यनिदानभूत महालक्ष्मीसमावेशन द्वारा प्रति बीजगर्भसमुद्भवैनोनिबर्हण जनकातिशय द्वारा श्रीपरमेश्वर प्रीत्यर्थ संस्कार रूप सीमन्तोन्नयनाख्यं कर्ममह् करिष्ये ॥

पश्चात् गणपति पूजन से लेकर पूर्णाहुति तक सम्पूर्ण कि करने के उपरान्त गर्भिणी को उच्च आसन पर बिठाकर प उसकी मांग में सिन्दुर भरे । पश्चात् निम्न मंत्र से त्रीणी शै या दर्भ सहित उदंबर का काष्ठ से पति, पत्नी की मांग पर घुमावे

ॐ भूर्विनयामि । ॐ भुवर्विनयामि । ॐ स्वर्विनयामि ।

पश्चात् पति, पत्नी को वेणी बांधे ।

ॐ अयमूर्जावतोवृक्षऽऊर्ज्जीवफलिनी भव ।

पश्चात् पति, पत्नी को गूलर या जौ की माला पहनावे ।

ॐ वीणागाधिनौराजानँ सँगायेताम् ।

पश्चात् पति, पत्नी से निम्न मंत्र कहें ।

ॐ सोमऽएवनोराजे मामानुपीः प्रजाः । अविमुक्तचन्द्रऽयामी स्तीरे तुभ्यमसि ।

पश्चात् पति, पत्नी को समीपस्थ किसी गंगा आदि तीर्थ का नाम बताएगा और पत्नी उसका उच्चारण करें। तदनन्तर दश ब्राह्मण भोजन का संकल्प करें ॥ इति ॥

४. जातकर्म संस्कार :–

सर्व प्रथम आचमन व प्राणायाम कर संकल्प करें।

देशकालौस्मृत्वा ममास्य जात शिशोर्गर्भाम्बुपानजनित सकल दोषनिबर्हणायुर्मेधाभि वृद्धिवीजगर्भ समुद्भवैनोनिबर्हण द्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं जातकर्म करिष्ये ॥

पश्चात् गणपतिपूजन से नान्दी श्राद्ध तक सम्पूर्ण क्रिया करने के उपरान्त शहद घृतमिश्रित कर सोने के तार से बालक को निम्न मंत्र से खिलावे।

ॐ भूस्त्वयिदधामि। ॐभुवस्त्वयिदधामि। ॐ स्वस्त्वयिदधामि। ॐ भूर्भुवः स्व सर्वं त्वयिदधामि।

पिता बालक की नाभि पर हाथ रखकर दक्षिण कान में निम्न मंत्र कहे।

ॐ अग्निरायुष्मान्सवनस्पतिभिरायुष्माँते नत्वायुषायुष्मंतंकरोमि ॥ १ ॥ ॐ सोमऽ आयुष्मान्तसऽ ओषधीभिरायुष्माँस्तेनत्वायुषायुष्मंतंकरोमि ॥ २ ॥ ॐ ब्रह्मः आयुष्मत्तद्ब्राह्मणैरायुष्मत्ते नत्वा युषा युष्मं तं करोमि ॥ ३ ॥ ॐ देवाऽ आयुष्मं तस्ते मृतैरायुष्मंतस्तेनत्वा युषायुष्मंतं करोमि ॥ ४ ॥ ॐ ऋषयऽआयुष्मं तस्तेव्रत युष्मंतस्तेनत्वा युषा युष्मंतं करोमि ॥ ५ ॥ ॐ पितरऽ आयुष्मंतस्ते स्वधाभिरा युष्मंतस्ते न त्वायुषा

युष्मंतं करोमि ॥ ६ ॥ ॐ यज्ञ आयुष्मान्तम दक्षिणा भिरायुष्माँस्तेनत्वा युषा युष्मंतं करोमि ॥ ७ ॥ ॐ समुद्रऽआयुष्मान्स स्रवन्तीभिरायुष्मा स्तेनत्वायुषायुष्मंतं करोमि ॥ ८ ॥

पश्चात् निम्न मंत्र का तीन बार जप करें ।

ॐ त्र्यायुषञ्जमदग्ने कश्यपस्य त्र्यायुषम् । यद्देवेषुत्र्यायुपन्तन्नो अस्तुस्त्र्यायुषम् ॥

तब पिता वात्सल्य भाव से निम्न मंत्र कहे ।

ॐ त्वामग्नेय जमानाऽअनुद्यून्विश्वावसुदधिरेत्त्वार्याणि । त्वे सहद्रविणमिच्छमाना व्रजङ्गोमन्तमुशिजोऽविवव्रुः ॥

पश्चात पिता बालक को गोद में लेकर चारों दिशाओं में घुमावे और अन्त में नैऋत्य कोण में बैठे । प्रत्येक दिशा के पास क्रमशः ये शब्द कहें ।

(१) पूर्वः- प्राणेति (२) दक्षिणः- व्यानेति (३) पश्चिमः अपानेति (४) उत्तरः- उदानेति (५) नैऋत्यः- समानेति ।

जिस स्थान पर बालक का जन्म हुआ है उस भूमि की प्रथम मंत्र से पिता और अन्तिम मंत्र से माता पूजा करे ।

ॐ वेदेतिभूमि हृदयन्दिविचन्द्रमसिश्रितम् । वेदाहन्तन्मान्तद्विद्यात्पश्येम शरदः शतञ्जीवेमशरदः शतँ शृणुयाम शरदः शतम् ॥ १ ॥ ॐ इडासिमैत्रावरुणीवीरेवीरमजीजनथाः । सात्वम्वीरवती भवयास्मान्वीरवतोकरत् ॥ २ ॥

पश्चात माता बालक को दुग्धपान करावे । फिर ब्राह्मण-भोजन का संकल्प करें ।

५. षष्ठी पूजन:—

सर्व प्रथम आचमन व प्राणायाम कर संकल्प करें ।

देशकालौ स्मृत्वा अस्य समातृकस्यशिशोवायुरोग्यप्राप्तिसकलारिष्ट ान्तिद्वारा श्रीपरमेश्वर प्रीत्यर्थं विघ्नेशस्य जन्मदानां जीवत्यपरनाम्न्याः ष्ठीदेव्या शस्त्रगर्भा भगवत्याश्च पूजनं करिष्ये ।

तदनन्तर वरुणपूजन व गणपति पूजन करके कर बद्ध हो षष्ठी देवी का आव्हान करें ।

विघ्नेश इहागच्छ इहतिष्ठ विघ्नेशाय नमः विघ्नेशमावाहयामि थापयामि ॥ १ ॥ जन्मदे इहागच्छ जन्मदायैनमः ॥ २ ॥ षष्ठी देवी हागच्छ षष्ठीदेव्यै नमः ॥ ३ ॥ जीवन्तिके इहागच्छ जीवन्तिकायैनमः ॥ ४ ॥ आयाहिवरदे देवीमहाषष्ठीति विश्रुते ।

शक्तिभिः सहबाल मे रक्ष रक्ष वरानने ॥ १ ॥

पश्चात् निम्न मंत्र से उसका पूजन करें ।

ॐ श्रीश्चतेलक्ष्मीश्चपत्क्न्यावहोरात्रे पार्श्वेनक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् । इष्णान्निषाणामुम्मऽइषाण सर्वलोकम्मइषाण ॥ १ ॥ ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्यबृहस्पतिर्यज्ञमिन्तनो त्वरिष्ट यज्ञँ समिमन्दधातु व्विश्वेदेवास इहमादयन्तमो ३ँ प्रतिष्ठ ॥ २ ॥

पश्चात् षष्ठी देवी का ध्यान करें ।

देवी मंजन सकाशां चन्द्रार्धकृत शेखरां ।
सिंहारुढां जगद्धात्रीं कौमरीं भक्तवत्सलां ॥

पश्चात् षष्ठी देवी का षोडषोपचार पूजन कर नमस्कार करें ।

लम्बोदर महाभाग सर्वोप द्रव नाशन ।
त्वत्प्रसादाद्विघ्नेश चिर जीवतु बालकः ॥ १ ॥

षष्ठी देवी नमस्तुभ्यं सूतिकाग्रह शालिनी ।
पूजिता परया भक्त्या दीर्घमायुः प्रयच्छमे ॥ २ ॥
गौरी पुत्रो यथा स्कंदः शिशुत्वे रक्षतः पुरा।
तथाममाप्यमु बालं षष्ठि के रक्षते नमः ॥ ३ ॥
रक्षितौपूतनादिभ्यो नन्दगोपसुतौयथा ।
तथामे बालकं पाहि दुर्गे देवि नमोस्तुते ॥ ४ ॥

पश्चात् संकल्प करें ।

अनया पूजया विघ्नेश जन्मदा जीवंत्यपरनाम्नी पष्ठी देवी शर गर्भा भगवत्यः प्रीयं ाम् ॥

पश्चात् बालक की आरती करें । फिर सूतिकगृह अधिपति देव के लिए बलिदान करें, व सूतक समाप्त होने पर ब्राह्मण भोजन करावे ॥

६. नामकरण संस्कारः-

सर्व प्रथम संकल्प करें ।

अद्येत्यादि० ममास्य शिशोः स्वकाले नामकर्माकरण जनि प्रत्यवाय परिहारार्थं पाद कृच्छ्र रुप प्रायश्चित्तं रजतत्याम्नाय द्वारा हमाचरिष्ये । तेनास्यशिशोः पाद कृच्छ्र रूप प्रायश्चितं कृतेन नामकर संस्कार कर्मण्यधिकार सिद्धि रस्तु ॥ १ ॥ अद्येत्यादि० ममास्य शिशोन मकर्माधिकार सिद्ध्यर्थं सूत्रोक्तान् त्रीन् संख्यकान् ब्राह्मणान् भोजयिष्ये ॥ २ ॥ अद्येत्यादि० ममास्य शिशोर्बीजगर्भ समुद्भवै नोनिवर्हणायुरभि वृद्धि व्यवहार सिद्धि द्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं नामकरण संस्कार मा करिष्ये ॥ ३ ॥

पश्चात गणपति पूजन से नान्दी श्राद्ध तक सम्पूर्ण क्रिया के उपरान्त नवीन कांस्य पात्र में चावल डाल कर सोने की तार से अपने इष्ठ देव का नाम, मास, नक्षत्र व व्यवहार के ये चार नाम लिख कर संकल्प करें ।

अद्येत्यादि० अस्यशिशोर्वर्चस्व्हार्युयुष्य प्राप्त्यर्थं नाम देवता पूजनं करिष्ये ।

हाथ में चावल लेकर निम्न मन्त्र द्वारा उस कांस्य पात्र पर छिड़कावें ।

ॐ मनोजूति जुषतामाज्यस्यबृहस्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टं यज्ञँ समिमन्दधातु ॥ विश्वेदेवासऽइहमादयन्तामों३ प्रतिष्ठ ॥ ॐ नाम देवताभ्यो नमः । सुप्रतिष्ठा वरदा भवन्तु ।

निम्न मन्त्र से कांस्य पात्र का गंधादि पूजन करें ।

ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्चपत्न्या वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूप मश्विनौव्यात्तम् इष्णन्निषाणमुम्मऽइषाण सर्व्वलोम्मऽइषाण ॥ ॐ नाम देवताभ्यो नमः ॥

पश्चात् संकल्प करें ।

अनया पूजया नाम देवता प्रीयंताम् ॥

पश्चात् बालक का पिता, बालक के दक्षिण कान में निम्न वचन कहे ।

भो कुमार त्वं गणपति भक्तोसि । भो कुमार त्वं कुलदेव्या भक्तोसि । भो कुमार त्व मास नाम्ना अमुक शर्मासि । भो कुमार त्वं नक्षत्र नाम्ना अमुक शर्मासि । भो कुमार त्वं व्यवहार नाम्ना अमुक शर्मासि ॥

पश्चात् आचार्य "मनोजूति" मंत्र से आशीर्वाद दें। पश्चात् यजमान कुमार सहित ब्राह्मण से प्रार्थना करे व ब्राह्मण उसका पिता उत्तर दे।

हे कुमार त्वं गणपति भक्तोसि सर्वान्ब्रह्मणानभिवादय (पिता) आयुष्मान भव सौम्य गणपति भक्त (आचार्य) ॥ १ ॥ हे कुमार त्वमसुक शर्माकुल देव्या भक्तोसि सर्वान्ब्राह्मणानभिवादय (पिता), आयुष्मान व सौम्य अमुक शर्मा (आचार्य) ॥ २ ॥ हे कुमार त्व मास नाम्ना अमुक शर्मासि सर्वान्ब्रह्मणानभिवाद (पिता), आयुष्यमान्भव सौम्य अमुक शर्मा (आचार्य) ॥ ३ ॥ हे कुमार त्वं नक्षत्र नाम्ना अमुक शर्मासि सर्वान्ब्राह्मणानभिवाद (पिता), आयुष्मान्भव सौम्य अमुक शर्मा (आचार्य) ॥ ४ ॥ हे कुमार त्वं व्यवहार नाम्ना अमुक शर्मासि सर्वान्ब्राह्मणानभिवाद (पिता), आयुष्यमानभव सौम्य अमुक शर्मा (आचार्य) ॥ ५ ॥

पश्चात् निम्न मंत्र से आचार्य बालक को आशीर्वाद दे।

वेदोसि येन त्वं देव वेद देवेभ्यो वेदो भवस्तेन मह्यं वेदो भूयाः।

तदनन्तर कांस्य पात्र में दधि, घृत व मधु संयुक्त कर सोने की तार से वह बालक को निम्न मंत्र द्वारा मुंह में लगावे।

ॐ भूस्त्वयिदधामि। ॐ भूवस्त्वद्धामि। ॐ स्व स्त्वयिदधामि ॐ भूर्भुव स्वः सर्वं त्पयिदधाम।

पश्चात् पिता बालक के दक्षिण कान में निम्न मंत्र कहे।

ॐ अश्माभव, परशुर्भव, हिरण्य मस्तुतम्भव ॥
आत्मावै पुत्र नामासि संजीव शरदः शतम् ॥

पश्चात् माता स्थापित कलश जल से स्तन धोकर बालक को दुग्ध पान करावे । ब्राह्मण भोजन का संकल्प करे ।

अन्त में संकल्प करें ।

अनेन नामकरण संस्काराख्येन श्री भगवान् परमेश्वरप्रीयतां ॥इति॥

७. निष्क्रमण संस्कारः

बालक के जन्म से ३ या ४ मास बाद घर से निष्क्रमण क्रिया जाय । सब प्रथम आचमन व प्राणायाम कर संकल्प करें ।

देशाकालौ स्मृत्वा ममास्य शिशोरायुः श्री वृद्धि द्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं गृहान्निष्क्रमणं करिष्ये ।

पश्चात् गणपति पूजन से नान्दी श्राद्ध तक सम्पूर्ण क्रिया करने के उपरान्त माता पिता बालक को गोद में लेकर घर से बाहर आकार सर्व प्रथम सूर्य दर्शन करावें ।

ॐ तच्चक्षुर्देवहितम्पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् । पश्येम शरदः शतञ्जीवेम शरदः शतँ शृणुयामशरदः-शतम्प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतम्भूयश्च शरदः शतात् ।

अप्रयत्तं प्रमत्तं वा दिवारात्रमथापिवा ।
रक्षन्तु सततं तेत्वां देवाः शक्रपुरोगमा ॥

पश्चात् ब्राह्मण भोजन संकल्प करें एवम् रात्रि को बालक को चन्द्र दर्शन करावें ॥ इति ॥

८. अन्नप्राशन संस्कारः

बालक के जन्म से छठे या आठवें मास अन्नप्राशन संस्कार किया जाय । सर्व प्रथम आचमन व प्राणायाम कर संकल्प करें

देशकालौ स्मृत्वा ममास्य शिशोर्मातृगर्भमलप्राशन शुद्ध्यर्थमन्ना ब्रह्मवर्च सतेज इन्द्रयायुर्बल लक्षण फलसिद्धि बीजगर्भ समुद्भवैनोनि :र्ह द्वारा श्रीपरमेश्वर प्रीत्यर्थ अन्नप्राशनाख्य कर्म करिष्ये ॥

पश्चात् गणपति पूजन से हवन तक सम्पूर्ण क्रिया करें हवन कार्य में सर्व प्रथम निम्न आहुतियाँ अधिक दें । प्रथम दो घृताहुति दें ।

ॐ देवींवाचमजनयन्तदेवास्तां विश्वरूपाः पशवो वदति । सानो मन्द्रेषमूर्ज्जं दुहाना धेनुर्वागस्मानुपसुष्टुतैतुस्वाहा इद वाचे न मम ॥१॥ ॐ व्वाजोनो अद्यप्रसुवातिदानं व्वाजो देवाँ२ऽऋतुभिः कल्पयाति । व्वाजो हिमा सर्व्ववीरन्व्यजानविश्वाऽआशाव्वाजपतिर्जयेयँ स्वाहा । इदं वाचे वाजाय न मम ॥ २ ॥

पश्चात् निम्न ४ आहुतियां चरु से दें ।

ॐ प्राणेनान्नमशीय स्वाहा । इदं प्राणाय न मम ॥ १ ॥ ॐ अपानेन गन्धानशीय स्वाहा । इद अपानाय न मम ॥ २ ॥ ॐ चक्षुषारूपाण्यशीय स्वाहा । इदं चक्षुषे न मम । ॐ श्रोत्रेणयशोशीय स्वाहा । इदं श्रोत्राय न मम ॥ ३ ॥

तदनन्तर सम्पूर्ण हवन क्रिया करें । पश्चात् निम्न मंत्र से बालक को अन्नप्राशन करावें ।

ॐ हन्त । काम्यंतुभारद्धज्यामाँ सेनवाक् प्रसार कामस्य ।

पश्चात् ब्राह्मण भोजन का संकल्प करें। पश्चात् बालक के सम्मुख पुस्तक, शस्त्र, वस्त्र आदि वस्तुएं रखें और देखें कि बालक प्रथम किसे हाथ लगाता है जिससे प्रतीत होगा कि भविष्य में वह क्या होगा ?

६. कर्णवेध संस्कार:

बालक के जन्म से एक वर्ष से पूर्व कर्णवेध संस्कार किया जाय। सर्व प्रथम आचमन व प्राणायाम कर संकल्प करे।

देशकालौस्मृत्वा अस्यकुमारस्य आयु अभिवृद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वर प्रीत्यर्थं कर्णवेधं करिष्ये ॥

पश्चात् गणपति, ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र का नाम मंत्रो से पूजन कर निम्न दो मन्त्रो से क्रमशः दक्षिण व वाम कर्ण का वेध करें। (नोटः—कन्या का वाम कर्ण पहले वेध करें।)

(१) दक्षिण कर्णः—ॐ भद्रङ्कर्णेभिः शृणुयामदेवा भद्रम्पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाँ सस्तनूभिर्व्यशेमहिदेवहितँयदायुः ॥
(२) ॐ वक्ष्यन्ती वेदगनीगन्तिकर्णम्प्रियँ सखायम्परिषस्वजाना:। योषेवशिङ्क्ते विततधिधन्वञ्ज्याऽइयँ समने पारयन्ति ॥

पश्चात् कर्णवेध स्थान पर सूत पिरो दें और ब्राह्मण भोजन का संकल्प करें।

१०. वर्धापन संस्कार:—

बालक के जन्म दिवस पर यह कार्य किया जाय। सर्व प्रथम आचमन व प्राणायाम कर संकल्प करें।

देशकालौ संकीर्त्य० अस्यबालस्य आयुष्य अभिवृद्धयर्थं वर्धापनाख्यं कर्म करिष्ये ॥

अक्षत पुंज पर निम्न देवताओं का आव्हान व पूजन क

ॐ गणपतये नमः गणपतिं आवाहयामि स्थापयामि ॥ दुर्गायै० ॥ २ ॥ कुलदेवतायै० ॥ ३ ॥ गुरुभ्यो० ॥ ४ ॥ प्रजापतये० विष्णवे ॥ ६ ॥ महेश्वराय ॥ ७ ॥ अग्नये ॥ ८ ॥ विप्रेभ्यो ॥ मातृभ्यो ॥ १० ॥ पितृभ्यो ॥ ११ ॥ नवग्रहदेवेभ्यो ॥ १२ ॥ पंचभूते ॥ १३ ॥ कालाय ॥ १४ ॥ युगाय ॥ १५ ॥ जन्म संवत्सरअयनऋतु पक्षनक्षत्रयोगकरणराशिलग्नेभ्यो ॥ १६ ॥ शिवायै ॥ १७ ॥ ध: ॥ १८ ॥ प्रीत्यै ॥ १९ ॥ सतप्यै ॥ २० ॥ अनुसूयायै ॥ २१ ॥ क्ष ॥ २२ ॥ वैष्णव्यै ॥ २३ ॥ भद्रायै ॥ २४ ॥

पश्चात् तीन अष्ट दलों पर निम्न तीन देवताओं आव्हान करें।

ॐ षष्ठी देव्यै नमः षष्ठी देवीं आवाहयामि ॥ १ ॥ ॐ मार्क य य नमः मार्कण्डेयं आवाह ामि ॥ २ ॥ ॐ जमदग्नये नमः जमद आवाहयामि ॥ ३ ॥

पश्चात् अक्षत पुंज पर निम्न देवताओं का आव्हान करें

ॐ व्यासाय नमः व्यासं आवाहयामि ॥ १ ॥ परशुरामाय ॥ कृपाचार्याय ॥ ३ ॥ बलये ॥ ४ ॥ प्रल्हादाय ॥ ५ ॥ हनुमते ॥ ६ विभीषणाय ॥ ७ ॥ स्थानदेवतायै ॥ ८ ॥ वास्तुदेवतायै ॥ ९ ॥ क्षे पालाय ॥ १० ॥ पृथिव्यै ॥ ११ ॥ अद्भ्यो ॥ १२ ॥ तेजसे ॥ १३ वायवे ॥ १४ ॥ आकाशाय ॥ १५ ॥ दशदिक्पालेभ्यः ॥ १६ ॥

पश्चात् निम्न मंत्र से समस्त देवताओं की प्रतिष्ठा करें।

ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पति र्यज्ञम्मिमन्तनो त्वरिष्टं यज्ञँ समिमन्दधातु। विश्वेदेवास इहमादयन्तामोँ३ प्रतिष्ठ॥

पश्चात समस्त देवताओं का गन्धादि पूजन कर नमस्कार करें।

जगन्मातर्जगद्धात्रि जगदानन्द कारिणि।
प्रसीद मम कल्याणि नमस्ते षष्ठी देवते॥ १॥
मार्कण्डेय नमस्तेऽस्तु सप्तकल्पांत जीवन।
आयुरारोग्य सिद्ध्यर्थं प्रसीद भगवन्मुने॥ २॥
जमदग्ने महाभाग महातेजो मयोज्वल।
आयुरारोग्य सिद्ध्यर्थं अस्माकं वरदो भव॥ ३॥

पश्चात् हवन वेदी पर पंचभूत संस्कार कर स्थापित देवों के नाम से आहुति दें। षष्टी देवी, मार्कण्डेय और जमदग्नि के नाम से २८-२८ आहुतियाँ दें। पश्चात् गृह शान्ति में वर्णित (पृष्ठ-३०) सम्पूर्ण हवन करें। पश्चात् दश ब्राह्मण भोजन का संकल्प करें ॥ इति ॥

११. चौल संस्कारः-

सर्व प्रथम निम्न तीन संकल्प करें।

अद्येत्यादि० ममास्य कुमारस्य स्वकाले चौल कर्माकरण जनित प्रत्यवाय परिहारार्थं अर्धकृच्छ्र रुप प्रायश्चितं रजत प्रत्याम्नाय द्वाराऽहमाचरिष्ये। अनेनार्ध कृच्छ्र रूप प्रायश्चित कृतेनास्य कुमारस्य चौल संस्कार कर्मण्यधिकार सिद्धिरस्तु॥ १॥ अद्येत्य

चौल कर्मण्यधिकार सिद्ध्यर्थं त्रीन् संख्यकान् ब्राह्मणान् भोजयिष्ये वा आमान्न दास्ये ।२॥ अद्येत्यादि० ममास्य कुमारस्य बीजगर्भ समुद्भवै नोनिबर्हणेनबलासुर्वर्चोभि वृद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वर प्रीत्यर्थं चौल कर्माख्यं कर्माहं करिष्ये ॥ ३ ॥

पश्चात् गणपति पूजन से पूर्णाहुति तक सम्पूर्ण क्रिया करे। पश्चात् एक पात्र में ठंडा व गर्म जल डाले। नाई वह जल बालक के केशों को निम्न मंत्र द्वारा लगावे।

ॐ उष्णेनवाय उदके नेह्यदितेकेशन्वप ॥

पश्चात् बालक को घृत, दधि, मक्खन मस्तक के क्रमशः आगे का भाग, दक्षिण भाग, पृष्ठ भाग, वाम भाग पर लगावें।

ॐ सवित्रा प्रसूता दैव्या आप उदन्तु ते तनूम्। दीर्घायुत्व बलाय वर्चसे ॥

पश्चात् त्रीणी शैली व दर्भ, बालक के मस्तक पर घुमावे जिससे केश बिखर जाय।

ॐ ओषधेत्रायस्व स्वधिते मैनं हिंसीः।

निम्न मंत्र से उस्त्रे का पूजन करे।

ॐ शिवो नामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्तेऽअस्तु मामा हिंसी

पश्चात् निम्न मंत्र द्वारा उस्त्रे को मौली बांधे।

ॐ निवर्तयाम्या युषेन्नाद्यायप्रजननायरायस्पोषाय सुप्रजास्त्व सुवीर्याय ॥

पश्चात् नाई बाल काटे।

ॐ येनावपत्सविता क्षुरेण सोमस्य राज्ञो वरुणस्य विद्वान्। तेन ब्रह्माणो वपतेदमस्यायुष्य जर दष्टिर्यथासम ॥

बालक के मस्तक से उतरे हुए केश गोबर पर डालें। गोबर उत्तर दिशा की ओर रखें। पूर्व वर्णित घृत मक्खन लगाना, दर्भ से बाल बिखेरना, बाल छेदन करना बाल गोबर पर डालना यह क्रिया तीन बार होगी। सम्पूर्ण बाल उतरने पर उसे एक वस्त्र में बांधकर जल में प्रवाह करें।

नोटः—मुंडन के समय कुलरीति के अनुसार शिखा रखी जाय।

पश्चात् बालक स्नान करे। तदनन्तर ब्राह्मण दक्षिणा व ब्राह्मण भोजन का संकल्प कर अन्त में निम्न संकल्प करें।

अनेन चौल संस्कार कर्मणा भगवान् लम्बोदर प्रीयंताम् ॥ इति ॥

१२. उपनयन संस्कारः—

सर्व प्रथम आचमन व प्राणायाम कर संकल्प करें।

अद्येत्यादि० मम सुतस्य द्विजत्व सिद्धयर्थं वेदाध्ययनाधिकारार्थं उपनयनाख्यं कर्म करिष्ये ॥ १ ॥ मम सुतस्य उपनयन संस्कार सिद्धयर्थं द्वादश सहस्त्र जप अमुम शर्मणो ब्राह्मणाय कारियष्ये ॥

पश्चात् गणपति पूजन से लेकर हवन तक सम्पूर्ण क्रिया करने के उपरान्त संकल्प करें।

देशकालौ संकीर्त्य० मम सुतस्य उपनयन कर्तुं तत्प्राच्याङ्गभूतं वपन च कारयिष्ये ॥

पश्चात् तीन ब्राह्मण भोजन का संकल्प करें। तदनन्तर कुमार स्नान करके माता के साथ भोजन करे:x:।

:x:मात्रासहोपनयने, विवाहे भार्यया सह।
अन्येत्र सह भुक्तिश्चेत्, पातित्यं प्राप्नुयान्नर ॥

फिर पूर्व वर्णित (पृष्ठ २५–३०) रीति से कुशकंडिका कर, "समुद्भवनामानं आलौकिक अग्नि" स्थापित करें।

पश्चात् बटुक को अग्नि व आचार्य के सम्मुख लावें आचार्य व बटुक के बीच अन्तर पर रखें। फिर बटुकाष्टक से ब्राह्मण बालक को आशीर्वाद दें। बटुकाष्टक पुस्तक के अन्त में देखे।

पश्चात् अन्तर पट हटादें और बालक आचार्य को प्रणाम करें। तब आचार्य व बालक आपस में निम्न प्रश्नोत्तर करें।

आचार्यः– ब्रह्मचार्यमागामिति ब्रूहि । कुमारः– ब्रह्मचर्यमागाम्।
आचार्यः– ब्रह्मचार्यसानि इति ब्रूहि । कुमारः– ब्रह्मचार्यसानि ॥

फिर विनियोग करें।

यनेन्द्रायेति मंत्रस्य अंगिरस ऋषिः बृहतिछन्दः बृहस्पतिर्देवता वासः परिधाने विनियोगः ॥

पश्चात् आचार्य निम्न मन्त्र से बटुक को लंगोट पहनावे।

ॐ येनेन्द्राय बृहस्पतिर्वास पर्यादधादमृतम्। तेनत्वा परिदधाभ्यायुपे दीर्घायुत्वाय बलाय वर्चसे ॥

फिर आचार्य बटुक को तीन आचमन करावे। फिर विनियोग करे।

ॐ इयं दुरुक्तेति मन्त्रस्य वामदेव ऋषि त्रिष्टुपछन्दः इन्द्रोदेवता मेखला बन्धने विनियोगः।

पश्चात् आचार्य बटुक को मूंज की मेखला बांधे।

ॐ इयं दुरूक्त परिबाध माना वर्ण पवित्र पुनतीमआगात्। प्राणापानाभ्यां बलमादधाना स्वसादेवी सुभगा मेखलेयम् ॥ १ ॥

० युवा सुवासः परिवीत आगात् सउश्रेयान्भवति जायमानः। तं
ीरासः कवयः उन्नयन्ति स्वाध्योमनसा देवयन्त ॥ २ ॥

पश्चात् आचार्य बटुक से तीन आचमन करवाये । तदनन्तर आठ चावल से पूर्ण पात्र उस पर यज्ञोपवीत फल व दक्षिणा रखकर बटुक यज्ञोपवीत अधिकार सिद्धि हेतु वे आठों पात्र दान करे ।

अद्येत्यादि० मम द्विजत्व सिद्धि वेद अध्ययन अधिकार सिद्ध्यर्थं श्रौत स्मार्त कर्म अधिकार सिद्ध्यर्थं यज्ञोपवीत धारण अधिकारार्थं श्री सवित्रीसूर्यनारायण प्रीत्यर्थं अमुक शर्मणे ब्राह्मणाय यथा शक्ति यज्ञोपवीत दानं अहं करिष्ये ।

पश्चात् आचार्य विनियोग करे ।

ॐ आपोहिष्ठेति तिसृणां मिन्धुद्वीप ऋषिः आपोदेवता गायत्री छन्दः यज्ञोपवीत प्रक्षालने विनियोग ॥

तदनन्तर आचार्य वाम हाथ में यज्ञोपवीत को त्रिगुणीकर दक्षिण हाथ से यज्ञोपवीत पर निम्न मंत्रों द्वारा छींटे लगावे ।

ॐ आपोहिष्ठा मयो भुवस्तानऽऊर्जेदधातन । महेरणाय चक्षसो ॥१॥ योवः शिवतमो रसस्तस्य भाजयते हनः । उशतीरिवः मातरः ॥२॥ तस्माऽअरंगमामवो यस्य क्षयायजिवन्थ । आपोजन यथाचन ॥ ३ ॥

पश्चात् आचार्य निम्न तीन मंत्रों द्वारा यज्ञोपवीत की तीनों गांठों पर क्रमशः अंगुठा घुमावे ।

ॐ ब्रह्मयज्ञानं प्रथमं पुरस्ता द्विसीमतः सुरुचोऽवेनऽआवः सुबु ध्न्याऽउपमाऽअस्यविष्टाः शतश्च योनिमसतश्च विवः ॥ १ ॥ ॐ इदं

विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिदधे पदम् ॥ समूमढस्य पाँ सुरे स्वाहा।
ॐ नमस्ते रुद्र मन्यवऽउतोतऽइषवे नमः । बाहुभ्यां मुतते नमः ॥ ३

फिर आचार्य यज्ञोपवीत के नौ डोरों के नौ देवतों के पू
हेतु उस पर चावल छिड़कावे ।

ओंकारं प्रथमे तंतौ विन्यस्यामि ॥ १ ॥ अग्निं द्वितीये तंतौ
यस्यामि ॥ २ ॥ नागाँस्तृतीये तंतौ विन्यस्यामि ॥ ३ ॥ सोमं चतुर्थे
विन्यस्यामि ॥ ४ ॥ इन्द्रं पंचमे तन्तौ विन्यस्यामि ॥ ५ ॥ प्रजा
षष्ठे तन्तौ विन्यस्यामि ॥ ६ ॥ वायु सप्तमे तन्तौ विन्यस्यामि ॥
सूर्यं अष्ठमे तंतौ विन्यस्यामि ॥८॥ विश्वेदेवान्नवमे तंतौ विन्यस्यामि।

फिर आचार्य यज्ञोपवीत हाथ में बन्द कर (संपुटकर) दस
गायत्री मंत्र पढ़े । फिर यज्ञोपवीत का गन्धादि पूजन कर आ
यज्ञोपवीत सूर्य को दिखावे ।

तच्चक्षुर्देव हितम्पुरस्ता च्छुक्रमुच्चरत् । पश्येम शरदः शतञ्जी
शरदः शतँ शृणुयाम शरदः शत प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्
शरदः शतम्भूयश्च शरदः शतात् ॥

पश्चात् निम्न मंत्र द्वारा आचार्य बटुक को यज्ञोपवीत पहनावे

यज्ञोपवीतं परम पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् ।
आयुष्यमग्र्यं प्रति मुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ॥

पश्चात् बटुक तीन आचमन करे । तदनन्तर विनियो
करे ।

ॐ मित्रस्य चक्षुरीति प्रजापति ऋषिः त्रिष्टुपछन्दः अजि
देवता अजिन परिधाने विनियोगः ।

फिर आचार्य बटुक को मृगछाला पहनावें।

ॐ मित्रस्य चक्षुर्धरुणं बलियस्ते जोयशम्वि स्थविरं समिद्धम्।
नाहनस्यं वसनं जरिष्णु परीद वाज्यजिनं दधेऽहम्॥

फिर विनियोग करे।

ॐ योमे दंड इति प्रजापति ऋषिः इन्द्रो देवता यजुश्छन्दः दंड
ग्रहणे विनियोगः॥

फिर आचार्य पलाश का दंड बटुक को दे।

ॐ योमे दण्ड परापत द्वेहायसोऽधिभूम्याम्। तमहं पुनरादद
आयुषे ब्रह्मणे ब्रह्मवर्चसाय॥

फिर आचार्य जल की अंजली भर कर बटुक की अंजली
में जल दें और बटुक उस जल से निम्नमंत्र द्वारा सूर्यनारायण
को अर्घ दे।

ॐ आपोहिष्ठा मयोभुवस्तानऽनुर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे
।१॥ योवः शिवतमोरसः तस्यभाजयते हनः उशतीरिव मातरः॥२॥
तस्माऽअरंग मामवोयस्य क्षयाय जन्वथ॥३॥ ॐ सूर्याय नमः॥

पश्चात् बटुक सूर्य का दर्शन करें।

ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरात्। पश्येम शरदः शतं
जीवेम शरदः शतं ँ शृणुयाम शरदः शतम्प्रब्रवाम शरदः शतमदीना
स्याम शरदः शतंभूयश्च शरदः शतात्॥

पश्चात् आचार्य बटुक के दाहिने कंधे पर अपना दाहिना
हाथ रखकर निम्न मंत्र पढ़े।

ॐ मम व्रते ते हृदयं दधामि। ममचितमनुचित्तन्ते अस्तु। मम
वाचमेकमना जुषस्व बृहस्पतिष्टवा नियु——

पश्चात् आचार्य बटुक का दाहिना हाथ अपने हाथ में लेकर प्रश्नोत्तर करेगा ।

आचार्य-को नामासि । बटुक-अमुकशर्माहं भो । आचार्य-कस्य ब्रह्मचार्यासि । बटुक-भवतः । आचार्य-इन्द्रस्य ब्रह्मचार्यस्यग्निराचार्यस्तवाहमाचार्यस्तवासौ अमुकशर्मन् ।

पश्चात् विनियोग करें ।

प्रजापतयेत्वइत्यादीनां मंत्राणां प्रजापति ऋषि यजुश्छंदः लिङ्ग देवता कुमार रक्षणे विनियोगः ।

पश्चात् बटुक हाथ जोड़कर दिशाओं को नमस्कार करें ।

(१) पूर्व-ॐ प्रजापतयेत्वा परिदधामि । (२) दक्षिण-ॐ देवाय त्वा सवित्रे परिदधामि (३)पश्चिम-ॐ अद्भयस्तवौषधिभ्यःपरिदधामि (४) उत्तर-ॐ द्यावा पृथिवीभ्यां त्वा परिदधामि (५)पृथ्वी-ॐविश्वेभ्यस्त्वा भूतेभ्यः परिदधामि । (६) आकाश-ॐ सर्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यः परिदधामि ।

पश्चात् घृत से ब्रह्मचारी हवन करे । और घृत का शेष भाग प्रणीता पात्र में छोड़े ।

ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये न मम ॥ १ ॥ ॐ इन्द्राय स्वाहा इदं इन्द्राय न मम ॥ २ ॥ ॐ अग्नये स्वाहा इदं अग्नये न मम ॥ ३ ॥ ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय नमः ॥ ४ ॥

फिर अग्नि का पूजन करे ।

समुद्भव नाम्ने वैश्वानराय नमः ॥

फिर अग्नि गन्धादि का पूजन कर हवन करें ।

ॐ भूः स्वाहा इदं अग्नये न मम ॥ १ ॥ ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे न मम ॥ २ ॥ ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय न मम ॥ ३ ॥ ॐ त्वन्नोऽ अग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडोऽअवयासिसीष्ठाः । यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वाद्वेषा ँ सि प्रमुमुग्धस्मत्स्वाहा ॥ इदं अग्नि वरुणाभ्यां न मम ॥ ४ ॥ ॐ सत्वन्नोऽ अग्ने ऽवमो भवोतिने दिष्टोऽअस्याऽ उपसो व्युष्टौ । अवयक्ष्वनो वरूण ँ रराणोवीहिमृडीक ँ सुहवोनऽएधि स्वाहा ॥ इदमग्नीवरूणाभ्यां न मम ॥ ५ ॥ ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तिपश्च सत्यमित्व मयाऽअसि । अयानो यज्ञं वहस्य यानो धेहि भेषज ँ स्वाहा इदं अग्नये अयसे न मम ॥ ६ ॥ ॐ ये ते शत वरूणये सहस्रं यज्ञियाः पाशा विततामहान्तः तेभिर्नोऽअद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्का स्वाहा ॥ इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम ॥ ७ ॥ ॐ उदुत्तमं वरुणं पाशमस्मदवाधमं विमध्यम ँ श्रथाय । अथावयमादित्य व्रतेनवानागसोऽअदितयेस्याम स्वाहा ॥ इदं वरुणाय न मम ॥ ८ ॥ ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये न मम ॥ ९ ॥ ॐ अग्नये स्विष्ट कृते स्वाहा इदं अग्नये न मम ॥ १० ॥

पश्चात् संश्रव प्राशन करें और ब्रह्मा को पूर्ण पात्र दान हेतु संकल्प करें ।

देशकालौ संकीर्त्य एतस्मिन्नुपनय होमकर्मणि कृताकृत वेक्षणरूप ब्रह्मकर्म प्रतिष्ठार्थमिदं पूर्णपात्रं प्रजापति देवतकं अमुक गोत्राय अमुक शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥

पश्चात् ब्रह्मा की गांठ खोल दें, फिर प्रणीता पात्र के जल से मार्जन करें ।

ॐ सुमित्रियानऽआप ओषधयः सन्तु ।

पश्चात् प्रणीता पात्र ईशान कोण में उल्टा कर दे।

ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तुयोस्माऽन्द्वेष्ठि यञ्चवयं द्विष्मः।

पश्चात् पृथ्वी पर गिरे हुए जल से छींटे लगावें।

ॐ आपः शिवाः सन्तु ॥

पश्चात् परस्तरण घृत में डुबोकर अग्नि में डालें।

ॐ देवागातुविदो गातुं वित्वा गातुमित। मनस्पतऽइमं देव ँ स्वाहा वातेधाः स्वाहा ॥

पश्चात् आचार्य बटुक से वार्तालाप करेगा।

आचार्यः- ब्रह्मचार्यसि। बटुकः- असानि। आचार्यः- आपं बटुकः- अशानि। आचार्यः- कर्म कुर्वि। बटुकः- करवाणि। आच मा दिवा सुषुप्स्व। बटुकः- न स्वपानि। आचार्यः-वाचंयच्छ। बटु यच्छामि। आचार्यः-अध्ययनं संपादय। बटुकः-संपादयामि। आच समिध आधेहि। बटुकः- आदधामि ॥

पश्चात् बटुक आचार्य का पूजन कर अग्नि की उत्तर दि में आचार्य के चरण स्पर्श कर बैठे और आचार्य तीन गायत्री मन्त्र का उसे उपदेश दे।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो प्रचोदयात् ॥

पश्चात् समिधा से होम करें।

ॐ अग्ने सुश्रवः सुश्रव समाकुरु ॥ १ ॥ ॐ यथात्वमग्ने सु सुश्रवाऽअसि ॥ २ ॥ ॐ एवमा ँ सुश्रवः सौश्रव सकुरु ॥ ३ ॥ यथा त्वमग्नेदेवानांयज्ञस्य निधिपोऽसि ॥ ४ ॥ ॐ एवमहं मनुष्य वेदस्य निधिपो भूयासम् ॥ ५ ॥

तदनन्तर जल से अग्नि की परिक्रमा पूर्वक सेचन कर पुनः समिधा से हवन करें ।

ॐ अग्नये समिधमाहार्षं बृहते जातवेदसे यथा त्वमग्ने समिधा समिध्यसएवमहमायुषा मेध्या वर्चसा प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेन समिन्धे जीवपुत्रो ममाचार्यो मेधाव्यहमसान्य निराकरिष्णुर्यशस्वी तेजस्वी ब्रह्मवर्चस्यन्नादो भूयासँ स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ अग्ने सुश्रवः सुश्रव समां कुरु ॥ २ ॥ ॐ यथा त्वमग्ने सुश्रवः सुश्रवा ऽअसि । ३ ॥ ॐ एवमाँ सुश्रवः सौश्रव सं कुरु ॥ ४ ॥ ॐ यथा त्वमग्ने देवानां यज्ञस्य निधिपोऽसि ॥ ५ ॥ ॐ एवमहं मनुष्य णां वेदस्य निधिपो भूयासम् ॥ ६ ॥

पश्चात् जल से अग्नि को परिक्रमा कर अपना दाहिना हाथ अग्नि से तपाकर एक-एक मन्त्र द्वारा अपने मुंह को लगावे ।

ॐ तनूपाऽअग्नेसि तन्वं मे पाहि ॥ १ ॥ ॐ आयुर्दाऽअग्नेस्यायुर्मेदेहि ॥ २ ॥ ॐ वर्चोदा ऽअग्नेसि वर्चो मे देहि ॥ ३ ॥ ॐ अग्ने यन्मे तन्वा ऽअनन्तन्म आपृण ॥ ४ ॥ ॐ मेधां मे देवः सविता आदधातु । ५ ॥ ॐ मेधाम्मे देवी सरस्वती आदधातु ॥ ६ ॥ ॐ मेधाम्मे अश्विनो देवा वाधन्त्तां पुष्कर स्रजौ ॥ ७ ॥

तदनन्तर कोष्टक में दिये हुए अंगों को दाहिना हाथ अग्नि से तपाकर लगावे ।

ॐ वाक् चमऽआप्यायताम् । (मुंह) ॐ प्राणश्चम ऽ आप्यायताम् । (नाक) ॐ चक्षुश्चम ऽआप्यायताम् (आंखें) ॐ श्रोत्रश्चम ऽआप्यायताम् । (कान) ॐ यशो बलं चम ऽआप्यायताम् । (भुजा)

फिर ब्रह्मचारी भस्म से क्रमशः ललाट ग्रीवा दक्षिणभुजा व हृदय पर तिलक लगावे ।

ॐ त्र्यायुषं जमदग्ने, कश्यपस्य त्र्यायुषं, यद्देवेषु त्र्यायुषं, तन्नोऽअस्तु त्र्यायुषं ॥

पश्चात् बटुक क्रमशः निम्न रूप से सबको तीन नमस्कार करे । और आचार्य उसे आशीर्वाद दे ।

अमुक गोत्र अमुक शर्माहं भो वैश्वानर त्वामभिवादये । आयुष्‍मान् भव सौम्य ॥ १ ॥ भो आचार्य त्वां अभिवादये ॥ २ ॥ भो मातापितरौ युवां अभिवादये ॥ ३ ॥ भो सूर्यचन्द्रमसौ युवां अभिवादये ॥ ४ ॥

तदनन्तर ब्रह्मचारी भिक्षा पात्र लेकर सर्व प्रथम माता पश्चात् अन्य लोगों से भिक्षा मांगे । मांगते समय यह कहे

ॐ भवति भिक्षां देहि ॥

भिक्षा मांगने के उपरान्त ब्रह्मचारी भिक्षा पात्र आचार्य को दे दे । तदनन्तर पूर्णाहूति होम करे ।

मूर्द्धानन्दिवो ऽअरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत ऽआजात मग्निं कविँ सम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः स्वाहा ॥ अग्नये न मम ॥ १ ॥

तदनन्तर आचार्य ब्रह्मचारी को निम्न प्रकार से उपदेश दे व उसका अर्थ भी समझावे ।

अथ क्षार लवण मधुमांसादिनिवृतिः, उद्धृत जल स्नान, दंड कृष्णाजिनधारण, वृक्षारोहण, विषयभूमिलंगन, नग्नस्त्री निरीक्षण, स्त्री संभोग, व्यसनाद्यावृति रूप ब्रह्मचारिणो नियमाः ॥ *

पश्चात् ब्रह्मचारी संध्या करे और प्रतिदिन संध्या करने की प्रतिज्ञा करे । इति ।

---

* खारी वस्तु, लवण, शहद, मांस आदि की निवृत्ति और अल निकालकर जल से स्नान करना, दंड और श्याम मृगचर्म का धारण करना और वृक्ष पर न चढना विषम भूमि पर न कूदना, नग्नस्त्री को न देखना, स्त्रीसंग, जूवा आदि व्यसन इत्यादिकों की निवृति ये नियम हैं

१३. वेदारम्भः—

सर्व प्रथम आचमन व प्राणायाम कर द्वितीय वेदी तैयार करें और पंचभू संस्कार, अग्निस्थापन कर निम्न संकल्प द्वारा ब्रह्मा का वरण करे।

ॐ अद्येत्यादि० कर्तव्य वेदारम्भ होम कर्मणि कृता कृत वेक्षण रूप ब्रह्म कर्म कर्तुं अमुक गोत्रं अमुक शर्माणं ब्रह्माण एभिः पुष्प चन्दन तांबूल वासोभिः ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे ॥

तब आचार्य कहे ; ॐ व्रतोस्मि।

तदनन्तर पूर्व वर्णित सम्पूर्ण कुशकंडिका करने के उपरान्त घृत से हवन करे। घृत का शेष भाग प्रणीतापात्र में डाले।

ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापते न मम ॥ १ ॥ ॐ इन्द्राय स्वाहा इदं इन्द्राय न मम ॥ २ ॥ ॐ अग्नये स्वाहा इदं अग्नये न मम ॥ ३ ॥ ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय न मम ॥ ४ ॥

पश्चात् अग्नि पूजन करे।

ॐ समुद्भव नाम्नि अग्नि आवाहयामि स्थापयामि।

फिर गन्धादि पूजन करने के उपरान्त घृत से हवन करे। अब निम्न चार आहुतियां यजुर्वेद की है। इनका शेष भाग प्रणीता में न डाले।

ॐ अन्तरिक्षाय स्वाहा इदं अन्तरिक्षाय न मम ॥ १ ॥ ॐ वायवे स्वाहा इदं वायवे न मम ॥ २ ॥ ॐ ब्रह्मणे स्वाहा इदं ब्रह्मणे न मम ॥ ३ ॥ ॐ छन्दोभ्यः स्वाहा इदं छन्दोभ्यः न मम ॥ ४ ॥

अब चार ऋग्वेद की आहुतियां दें ।

ॐ पृथिव्यै स्वाहा इदं पृथिव्यै न मम ॥१॥ ओम् अग्नये स्वाहा इदं अग्नये न मम ॥ २ ॥ ॐ ब्रह्मणे स्वाहा इदं ब्रह्मणे न मम ॥ ३॥ ओम छन्दोभ्यः स्वाहा इदं छन्दोभ्यः न मम ॥ ४ ॥

अब चार सामवेद की आहुतियां दें ।

ॐ दिवे स्वाहा इदं दिवे न मम ॥ १ ॥ ॐ सूर्याय स्वाहा इदं सूर्याय न मम ॥ २ ॥ ओम् ब्रह्मणे स्वाहा इदं ब्रह्मणे न मम ॥ ३ ॥ ओम् छन्दोभ्यः स्वाहा इदं छन्दोभ्यः न मम ॥ ४ ॥

अब अथर्ववेद की चार आहुतियां दें ।

ॐ दिग्भ्यः स्वाहा इदं दिग्भ्यः न मम ॥ १ ॥ ॐ चन्द्रमसे स्वाहा इदं चन्द्रमसे न मम ॥ २ ॥ ॐ ब्रह्मणे स्वाहा इदं ब्रह्मणे न मम ॥ ३ ॥ ॐ छन्दोभ्यः स्वाहा इदं छन्दोभ्यः न मम ॥ ४ ॥

पुनः निम्न मन्त्रों से हवन करें और घृत का शेष भाग प्रणीता पात्र में डाले ।

ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये न मम ॥ १ ॥ ॐ देवेभ्यः स्वाहा इदं देवेभ्यः न मम ॥२॥ ॐ ऋषिभ्यः स्वाहा इदं ऋषिभ्यः न मम ॥ ३ ॥ ॐ श्रद्धायै स्वाहा इदं श्रद्धायै न मम ॥ ४ ॥ ॐ मेधायै स्वाहा इदं मेधायै न मम ॥ ५ ॥ ॐ सदस्पतये स्वाहा इदं सदस्पतये न मम ॥ ६ ॥ ॐ अनुमतये स्वाहा इदं अनुमतये न मम ॥ ७ ॥

ॐ भूः स्वाहा इदं अग्नये न मम ॥ १ ॥ ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे न मम ॥ २ ॥ ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय न मम ॥ ३ ॥ ॐ त्वन्नोऽअ अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अवयासिसीष्टाः यजिष्ठो

ग्न्हितमः शोशुचानो विश्वाद्वेषाँ सिप्रमुमुग्ध्यस्मन् स्वाहा इदं अग्नि वरुणाभ्यां न मम ॥ ४ ॥ ॐ सत्वन्नोऽ अग्नेऽवमोभवोतिनेदिष्ठोऽअस्या ऽउषसो व्युष्टौ अवयद्गनो वरुणँ रराणो व्वीहि मृडीकँ सुहवो न एधि स्वाहा इदं अग्नि वरुणाभ्यां न मम ॥ ५ ॥ ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभि शस्ति पाश्चसत्यमित्वमयाऽअसि । अयानो यज्ञं वहास्ययानोधेहि भेषजँ स्वाहा इदं अग्नये न मम ॥ ६ ॥ ॐ येते शत वरुणाये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः तेभिर्नोऽअद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चतु मरुतः स्वर्काः स्वाहा इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम ॥ ७ ॥ ॐ उदुत्तमं वरुणं पाशमस्मदवा धमंविमध्यमँ श्रथाय । अथावयमादित्य व्रतेतवानागसोऽअदितये स्याम स्वाहा । इदं वरुणाय न मम ॥ ८ ॥ ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये न मम ॥ ९ ॥ ॐ अग्नये स्विष्टिकृते स्वाहा इदं अग्नये न मम ॥ १० ॥

पश्चात् संश्रव प्राशन कर ब्रह्मा को पूर्णपात्र दान करें ।

अद्य कृतैतद् होम कर्मणि कृताकृत वेक्षणरूप ब्रह्मकर्म प्रतिष्ठार्थ मिदं पूर्णपात्रं प्रजापति देवतकं अमुक गोत्राय अमुक शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥

पश्चात् ब्रह्मा की ग्रन्थि खोल दें और प्रणीता पात्र से बटुक को छींटे लगावें ।

ॐ सुमित्रियानऽआप ओषधयः सन्तु ।

पश्चात् प्रणीता पात्र को ईशान कोण में उल्टा करदें ।

ॐ दुर्मित्रिया स्तस्मै सन्तु योस्मान्द्वेष्टियम वयं द्विष्मः ।

पश्चात् परस्तरण घृत में डुबोकर अग्नि में डालें ।

ॐ देवागातु वित्वागातुमित मनस्पतऽइमं देवयज्ञ स्वाहा वातेध स्वाहा ॥

पश्चात् बटुक काशी पढ़ने हेतु जावे । तदनन्तर वापिस लौटने पर आचार्य बटुक को प्रथम गायत्री मंत्र का उपदेश दें फिर निम्न रूप से चारों वेदों का उपदेश दे ।

(१) यजुर्वेदः- ॐ इषेत्वोर्जेत्वावायवत्स्थदेवोवः सविताप्रार्प्पयतुश्रेष्ठतमायकर्मणऽआप्यायदध्वमघ्न्याऽ इन्द्रायभागम्प्रजावतीरनमीवाऽयक्ष्मा मावस्तेनऽ ईशतमाघशं सोद्ध्रुवाऽ अस्मिन्गोपतौ स्यात बह्वी यजमानस्य पशून्पाहि ॥ ओम् यजुर्वेदाय नमः ॥ (२) ऋग्वेदः-ओम अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् । होतारं रत्नधातमम् ॥ ओम ऋग्वेदाय नमः ॥ (३) सामवेदः-ओम् अग्नआयाहि वीतये गृणानो हव्य दातये । निहोता सत्सि बर्हिषि । ओम् सामवेदाय नमः ॥ (४) अथर्व वेद-ओम् शन्नोदेवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये शंयोरभिस्रवन्तु नः अथर्ववेदाय नमः ॥

पश्चात् ब्राह्मण भोजन का संकल्प करें ॥ इति॥

१४. केशान्त संस्कारः-

आश्रम के बाहर पिता आचमन व प्राणायाम कर संकल्प करें ।

अस्य ब्रह्मचारिणः केशान्त संस्कार अह करिष्ये ।

पश्चात् गणपतिपूजन आदि कर बटुक का मुंडन करावें । तदनन्तर आचार्य को गोदान दें । फिर समावर्तन संस्कार करें।

१५. समावर्तन संस्कार:-

सर्व प्रथम आचमन व प्रणायाम कर संकल्प करें।

अद्येत्यादि अस्य ब्रह्मचारिणः पश्चात् गृहस्थाश्रम प्राप्ति द्वारा ीपरमेश्वर प्रीत्यर्थं समावर्तनाख्य कर्म करिष्ये।

पश्चात् गणपति आदि का पूजन कर हवन वेदी पर पंचभू संस्कार व कुशकंडिका कर सूर्य नाम्नि न अग्नि की स्थापना के बाद निम्न मंत्रों से घृताहुति से हवन करें।

ओम् प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये न मम ॥ १ ॥ ओम् इंद्राय ाहा इदं इन्द्राय न मम ॥ २ ॥ ओम् अग्नये स्वाहा इदं अग्नये न मम ३ ॥ ओम् सोमाय स्वाहा इदं सोमाय न मम ॥ ४ ॥

पश्चात् अग्नि पूजन करे।

ॐ सूर्य नाम्नि अग्नि आवाहयामि स्थापयामि।

फिर गन्धादि पूजन करने के उपरान्त घृत से हवन करे। अब निम्न चार आहुतियां यजुर्वेद की है। इनका शेष भाग प्रणीता में न डाले।

ॐ अन्तरिक्षाय स्वाहा इदं अन्तरिक्षाय न मम ॥ १ ॥ ॐ वायवे ाहा इदं वायवे न मम ॥ २ ॥ ॐ ब्रह्मणे स्वाहा इदं ब्रह्मणे न मम ।३ ॥ ॐ छन्दोभ्यः स्वाहा इदं छन्दोभ्यः नमम ॥ ४ ॥

अब चार ऋग्वेद की आहुतियां दें।

ॐ पृथिव्यै स्वाहा इदं पृथिव्यै न मम ॥१॥ ओम् अग्नये स्वाहा इदं अग्नये न मम ॥ २ ॥ ॐ ब्रह्मणे स्वाहा इदं ब्रह्मणे न मम ॥ ३ ॥ ओम् छन्दोभ्यः स्वाहा इद छन्दोभ्यः न मम ॥ ४ ॥

अब चार सामवेद की आहुतियां दें।

ओ३म् दिवे स्वाहा इदं दिवे न मम ॥ १ ॥ ओ३म् सूर्याय स्वाहा इदं सूर्याय न मम ॥ २ ॥ ओम् ब्रह्मणे स्वाहा इदं ब्रह्मणे न मम ॥ ३ ॥ ओम् छन्दोभ्यः स्वाहा इदं छन्दोभ्यः न मम ॥ ४ ॥

अब अथर्ववेद की चार आहुतियां दे।

ओ३म् दिग्भ्यः स्वाहा इदं दिग्भ्यः न मम ॥ १ ॥ ओ३म् चन्द्रमसे स्वाहा इदं चन्द्रमसे न मम ॥ २ ॥ ओ३म् ब्रह्मणे स्वाहा इदं ब्रह्मणे न मम ॥ ३ ॥ ओ३म् छन्दोभ्यः स्वाहा इदं छन्दोभ्यः न मम ॥ ४ ॥

॥ नवाहुतयः ॥ ओ३म् भूः स्वाहा इदं अग्नये न मम ॥१॥ ओ३म् भुवः स्वाहा इदं वायवे न मम ॥ २ ॥ ओ३म् स्वः स्वाहा इदं सूर्याय न मम ॥ ३ ॥ ओ३म् त्वन्नोऽअग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडोऽअवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वाद्वेषाᳬं सि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा ॥ इदं अग्नि वरुणाभ्यां न मम ॥ ४ ॥ ओ३म् सत्वन्नोऽअग्नेऽवमो भवोतिने दिष्टोऽअस्याऽउपसो व्युष्टौ। अवयक्ष्वनो वरुणᳬं रराणोवीहिमृडीकᳬं सुहवोनऽएधि स्वाहा ॥ इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम ॥ ५ ॥ ओ३म् अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्व ममाऽअसि। अयानो यज्ञं वहस्य यानो धेहि भेषजᳬं स्वाहा इदं अग्नये अयसे न मम ॥ ६ ॥ ओ३म् ये ते शतं वरुणये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितितामहान्तः तेभिर्नोऽअद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्का स्वाहा ॥ इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम ॥ ७ ॥ ओ३म् उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यमᳬं श्रथाय। अथावयमादित्य व्रतेनवानागसोऽअदितयेस्याम स्वाहा ॥ इदं वरुणाय न मम ॥ ८ ॥ ओ३म् प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये न मम ॥ ९ ॥ ओ३म् अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदं अग्नये न मम ॥ १० ॥

पश्चात् संश्रव प्राशन करें और ब्रह्मा को पूर्ण पात्र दान हेतु संकल्प करें।

देशकालौ संकीर्त्य एतस्मिन्नुपनय होमकर्मणि कृताकृत वेक्षणरूप ब्रह्मकर्म प्रतिष्ठार्थमिदं पूर्णपात्रं प्रजापति देवतकं अमुक गोत्राय अमुक शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥

पश्चात् ब्रह्मा की गांठ खोल दें, फिर प्रणीता पात्र के जल से मार्जन करें।

ॐ सुमित्रियानऽआप ओषधयः सन्तु।

पश्चात् प्रणीता पात्र ईशान कोण में उल्टा कर दे।

ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तुयोस्माऽन्द्वेष्ठि यञ्चवयं द्विष्मः।

पश्चात् पृथ्वी पर गिरे हुए जल से छींटे लगावें।

ॐ आपः शिवाः सन्तु ॥

पश्चात् परस्तरण घृत में डुबोकर अग्नि में डालें।

ॐ देवागातुविदो गातुं वित्वा गातुमित। मनस्पतऽइमं देव यज्ञ स्वाहा वातेधाः स्वाहा ॥

पश्चात् समिधा से होम करें।

ॐ अग्ने सुश्रवः सुश्रव समाकुरू ॥ १ ॥ ॐ यथात्वमग्ने सुश्रव श्रवाऽअसि ॥ २ ॥ ॐ एवमाँ सुश्रवः सौश्रव सकुरू ॥ ३ ॥ ॐ यथा त्वमग्नेदेवानांयज्ञस्य निधिपोऽसि ॥ ४ ॥ ॐ एवमहं मनुष्याणां वेदस्य निधिपो भूयासम् ॥ ५ ॥

तदनन्तर जल से अग्नि की परिक्रमा पूर्वक सेचन कर पुनः समिधा से हवन करें।

ॐ अग्नये समिधमाहार्षं बृहते जातवेदसे यथा त्वमग्ने समिध समिध्यसएवमहमायुषां मेध्या वर्चसा प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेन समि जीवपुत्रो ममाचर्यो मेधाऽयहमसान्य निराकरिष्णुर्यशस्वी तेजस्वी ब्रह्मव स्यन्नतदो भूयासँ स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ अग्ने सुश्रवः सुश्रव समां कुरु॥२ ॐ यथा त्वमग्ने सुश्रवः सुश्रवा ऽअसि ॥ ३ ॥ ॐ एवमाँ सुश्र सौश्रव सं कुरु ॥ ४ ॥ ॐ यथा त्वमग्ने देवानां यज्ञस्य निधिपोऽसि ॥ ५ ॥ ॐ एवमहं मनुष्याणां वेदस्य निधिपो भूयासम् ॥ ६ ॥

पश्चात् जल से अग्नि को परिक्रमा कर अपना दाहि हाथ अग्नि से तपाकर एक-एक मन्त्र द्वारा अपने मुंह को लगा

ॐ तनूपाऽअग्नेसि तन्व मे पाहि ॥ १ ॥ ॐ आयुर्दाऽअग्नेर युर्मेदेहि ॥ २ ॥ ॐ वर्चोदा ऽअग्नेसि वर्चो मे देहि ॥ ३ ॥ ॐ आ यन्मे तन्वा ऽअनन्तन्म आपृण ॥ ४ ॥ ॐ मेधां मे देवः सविता आदध ॥ ५ ॥ ॐ मेधाम्मे देवी सरस्वती आदधातु ॥ ६ ॥ ॐ मेधाम्मे अश्वि देवा वाधन्त्तां पुष्कर स्रजौ ॥ ७ ॥

तदनन्तर कोष्टक में दिये हुए अंगों को दाहिना हा अग्नि से तपाकर लगावे।

ॐ वाक् चमऽआप्यायता। (मुंह) ॐ प्राणश्चम ऽ आप्य ताम्। (नाक) ॐ चक्षुश्चम ऽआप्यायताम् (आंखें) ॐ श्रोत्रश्च ऽआप्यायताम्। (कान) ॐ यशो बलं चम ऽआप्यायताम्। (भुजा

फिर ब्रह्मचारी भस्मि से क्रमशः ललाट ग्रीवा दक्षिणभुः व हृदय पर तिलक लगावे।

ॐ त्र्यायुष जमदग्ने, कश्यपस्य त्र्यायुषं, यद्देवेषु त्र्यायुषं, तन्ने अस्तु त्र्यायुष ॥

पश्चात् बटुक क्रमशः निम्न रूप से सबको तीन ब नमस्कार करे। और आचार्य उसे आशीर्वाद दे।

अमुक गोत्र अमुक शर्माहं भो वैश्वानर त्वामभिवादये । आयुष्मान् भव सौम्य ॥ १ ॥ भो आचार्य त्वां अभिवादये ॥ २ ॥ भो मातापितरौ युवां अभिवादये ॥ ३ ॥ भो सूर्यचन्द्रमसौ युवां अभिवादये ॥ ४ ॥

पश्चात् जल पूर्ण आठ कुंभ स्थापित कर उनका पूजन करें ।

ओम् मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पति यज्ञमिमन्तनो त्वरिष्टं यज्ञँ समिमन्दधातु । विश्वेदेवास इह मादयन्तामो३ँ प्रतिष्ठ ॥ उदक कुम्भाधिष्ठातृदेवताः सुप्रतिष्ठा वरदा भवेयुः ॥

पश्चात उदक कुंभों का गन्धादि पूजनकर निम्न मंत्र से एक एक कर क्रमशः उदक कुम्भ ग्रहण करें ।

ओम् येऽआप्स्वन्तरग्नयः प्रविष्ठागोह्यऽउपगोह्योमयूषोमनोहा स्खलोविरूजस्तनूदूषुरिन्द्रियहानान्विजहामि यो रोचनस्तमिह गृह्णामि ॥

उक्त मंत्र से एक एक उदक कुंभ लें फिर निम्न रूप से क्रमशः एक एक मंत्र से एक एक कुम्भ से बटुक को छींटे लगावें ।

ओम् तेनमामभिषिञ्चामि श्रियै यशसे ब्रह्मणे ब्रह्मवर्चसाय ॥ १ ॥ ॐ येनश्रियमकृणुतांयेनावमृशतां सुरा । येनाक्ष्यावभ्यषिचतांयद्वांत दश्विना यशः ॥ २ ॥ ओम् आपोहिष्ठा मयोभुवस्तानऽऊर्जेदधातन । महे रणाय चक्षसे ॥ ३ ॥ ओम् योवः शिवतमो रसः तस्य भाजयते हनः उशतीरिव मातरः ॥ ४ ॥ ओम् तस्माऽअरग मामवोयस्य क्षयाय जिन्वथ । आपोजन यथाचन ॥ ५ ॥

नोटः—षष्ठ, सप्तम व अष्टम कुंभ से तूष्णीं छींटे लगावें । तदनन्तर मेखला मस्तक के मार्ग से निकाले ।

ओम् उदुत्तमं वरुणं पाशमस्मदवाधमं विमध्यमँ श्रथाय ।

फिर दंड और मृग चर्म भी उतारे। तदनन्तर ब्रह्मचारी निम्न तीन मंत्रो द्वारा उपस्थान करे।

ओम् उद्यन्भ्राजभृष्णु रिन्द्रोमरुद्भिरस्थात्। प्रातर्यावभिरस्थात्। दशसनिरसि दशसनिमाकुर्वाविदन्मागमय ॥ १ ॥ ओम् उद्यानभ्राज भृष्णुरिन्द्रोमरुद्भिरस्थाद्दिवायावभिरस्थाच्छत सनिरसि शत सनिमा कुर्वाविदन्मागमय ॥ २ ॥ ओम् उद्यन्भ्राजभृष्णुरिन्द्रोमरुद्भिरस्थात्। सयं यावभिरस्थातसहस्र सविरसि। सहस्र सनिंमा कुर्वा विदन्मा गमय ॥ ३ ॥

फिर ब्रह्मचारी दधि व सफेद तिल खावे। पश्चात् आठ अंगुल दातुन निम्न मंत्र करें।

ॐ अन्नाद्याय व्यूहध्व सोमोराजाऽयमागमत्। स मे मुखं मार्द्यते यशसा च भगेन च ॥

फिर ब्रह्मचारी गर्म पानी से स्नानादि कर नवीन वस्त्रधारण । फिर वेदी के पास आकर आचमन करें।

पश्चात् निम्न मंत्र से चन्दन लगावें।

ॐ प्राणपान्नो मे तर्पय। ॐ चक्षुर्मे तर्पय ॐ श्रोत्रम्मे तर्पय ॥

पश्चात् अपसव्य हो पितरों का तर्पण करें।

ॐ पितरः शुन्धध्वमिति पितरः शुन्धध्वम्।

पश्चात् सव्य होकर आचमन करें और करबद्ध होकर आशीर्वाद लें।

ॐ सुचक्षा अहमक्षीभ्यांभूयास सुवर्चामुखेन। सुश्रुत्कर्णाभ्यां भूयासम् ॥

पश्चात बटुक नवीन वस्त्र धारण करें ।

ॐ परिधास्यै यशोधास्यैदीर्घायुत्वाजरदष्टिररिम । शतं च जीवा सिशरदः पुरूचीरायस्पोषमभिसंव्ययिष्ये ॥

पश्चात् आचमन कर यज्ञोपवीत धारण करें ।

ॐ यज्ञोपवीत परमं पवित्रं प्रजापेर्यत्सहजं पुरस्तात् ।
आयुष्य मग्रयं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं वलमस्तुतेजः ॥

पश्चात् आचमन कर उत्तरीय वस्त्र धारण करें ।

ॐ यशसामाद्यावापृथिवीयशसेन्द्राबृहस्पति । यशोभगश्चमाविन्द यशोभा प्रतिपद्यताम् ॥

पश्चात् पुष्पमाला ग्रहण करें ।

ओम् याऽ आहजमदग्निः श्रद्धायैकामायेन्द्रियाय । ताऽअहंगृह्णामि यशसाचमगेनच ।

पश्चात् पुष्पमाला धारण करें ।

ओम् यद्यशोत्सरसामिन्द्रश्चकारविपुलंपृथु । तेन संग्रथिताः सुमनसऽआबध्नामि यशो मयि ॥

पश्चात् सिर पर पगड़ी बांधें ।

ओम् युवासुवासाः परिवीतऽ आगात्सऽउश्रेयान्भवति जायमानः । तन्धीरासः कवयः उन्नयन्ति स्वाध्योमनसा देवयन्तः ॥

पश्चात् कानों में कुंडल धारण करें ।

ओम् अलङ्करणमसिभूयोलङ्करणम्भूयात् ।

पश्चात् आंखों में अंजन डालें ।

ओम् वृत्रस्यासिकनीनकचक्षुर्दाऽ असि चक्षुर्मेदेहि ।

पश्चात् काच में अपना मुंह देखें । ओम् रोचिष्णुरसि।

पश्चात् छत्र ग्रहण करें ।

ॐ बृहस्पतेश्छदिरसि पाप्मानोमामन्तर्धेहि । तेजसोशयसोमामन्तर्धेहि

पश्चात् बटुक जूते पहने । ओम् प्रतिष्ठेस्थो विश्वतोमापातम् ॥

पश्चात् दंड ग्रहण करें ।

ओम विश्वाभ्यो मानाष्ट्रभ्यस्परिपाहि सर्वतः ॥

पश्चात् आचार्य बटुक को निम्न उपदेश दे ।

ततः स्नातकस्य नियमाः । गानवादित्रनृत्यत्यागः । न तत्र गमनम् । क्षेमे सति रात्रौ ग्रामान्तरगमनम् न धावेत् । कूपेऽवेक्षणम् । न वृक्षारोहणम् । न फलत्रोटनम् । आमार्गेण न गच्छेत् । नग्नो न स्नायात् न संधिशयनं । न विषमभूमिलघनम् । अश्लीलं नोपवदेत् । उदितास्तसमये सूर्य नो पश्येत् । जलमध्ये सूर्य आकाशस्थ न पश्येत् । उदके आत्मानं न पश्येत् । अजातलोम्नीं प्रमत्तां पुरुषाकृतिं षढां च न गच्छेत् ।*

पश्चात् ब्राह्मणों की दक्षिणा व ब्राह्मण भोजन हेतु संकल्प करें । फिर आचार्य बटुक को आशीर्वाद दे ।

ओम् विश्वानि देव सवितुर्दुरतानि परासुव । यद्भद्रन्तन्नऽआसुव ॥

पश्चात् स्थापित देवताओं का विसर्जन करें ॥ इति ॥

---

* स्नातक गाना बजाना नाचना आदि को त्याग देवे । और इनमें जाना भी त्याग देवे । क्षेम (कुशल) होनेपर रात्रि में दूसरे ग्राम को न जावे । और ब्रह्मचारी दौड़े नहीं । कूआ में नहीं झांके । वृक्ष पर न चढ़े । फल नहीं तोड़े । खराब मार्ग पर नहीं चले । नग्न स्नान नहीं करे । संधि समय में शयन नहीं करे । अश्लील उच्चारण नहीं करे । सूर्य का उदय और अस्त होते हुये नहीं देखे । जल में सूर्य के प्रतिबिंब को नहीं देखे । जल में अपने प्रतिबिंब को नहीं देखे । और लोम रहित, प्रमत्त, पुरुषाकृति, नपुंसक इन स्त्रियों से संभोग नहीं करे ।

१६. वाग्दान या सीमान्त पूजन (सम्प्रदान):-

१. संकल्प:—

सर्व प्रथम शान्ति पाठ व गणपत्यादि देव नमस्कार (पृष्ठ १- २) कर आचमन व प्राणायाम कर संकल्प करें।

अद्येत्यादि० मम कन्यायाः विवाहांगभूतं वाग्दान सीमान्तपूजनं वा करिष्ये ॥

पश्चात् वरुण पूजन(पृष्ठ ४)और गणपति पूजन पृष्ठ ५)करें।

२. वर पूजन:—

सर्व प्रथम निम्न विनियोग करें।

विराजोदोहोसीत्यस्य प्रजापतिऋ्षिर्यजुछन्द आपोदेवताः पादप्रक्षालने विनियोगः ॥ १ ॥ सुचक्षा अहमित्यस्य प्रजापति ऋषि र्यजुच्छन्दआशीर्देवता गन्धलेपोत्तरजपे विनियोगः ॥ २ ॥ अनाधृष्टेत्य स्यदध्यङाथर्वणऋषिर्यजुछन्दः अनाधृष्टयोः देवताः अक्षत ससर्पणे विनियोगः ॥ ३ ॥ परिधास्याइत्यस्याथर्वणऋषि पक्तिश्छन्दः सोमोदेवता वस्त्र परिधाने विनियोगः ॥ ४ ॥ युवासुवासा इत्यस्य प्रजापतिऋषि त्रिष्टुपछन्दः वासो देवता उष्णीष धारणे विनियोगः ॥ ५ ॥ यश सामेत्यस्याथर्वणऋषि पंक्तिः छन्दः लिंगो देवता उष्णीष धारणे विनियोगः ॥ ६ ॥ यश सामेत्यस्याथर्वण ऋषिः पक्तिछन्दः लिंगोक्तादेवतो पवस्त्रधारणे विनियोगः ॥ ७ ॥ या अहरदिति मंत्रस्य भरद्वाजऋषि अनुष्टुप छन्दः सुमनसो देवताः पुष्पमाला ग्रहणे विनियोगः ॥८॥ यद्य शोत्सरसामित्यस्य विश्वामित्रऋषिस्त्रिष्टुप छन्दः सुमनसो देवताः पुष्प-माला धारणेविनियोग ॥ ९ ॥ यज्ञोपवीतमित्यस्य परमेष्ठऋषिस्त्रिष्टुप छन्दः लिंगोक्ता देवता यज्ञोपवीत धारणे विनियोगः ॥ १० ॥

पश्चात् निम्न रूप से वर का पूजन करें।

(१) पादप्रक्षालन—ॐ विराजोदोह्योसिविराजोदोहमशीयमपि पाद्यायैविराजोदोहः। (२) गन्ध—सुचक्षाअहमक्षीभ्यांभूयासँ सुवर्चामुखेन। सुश्रुत्कर्णाभ्यांभूयासम्॥ (३) अक्षत—अनाधृष्टः पुरस्तादग्नेराधिपत्य, आयुर्मेदाः पुत्रवती दक्षिणात इन्द्रस्याधिपत्येप्रजाम्मेदाः सुषदा पश्चाद्देवस्य सवितुराधिपत्ये चक्षुर्मेदाऽआश्रुतिरुत्तरधातुराधिपत्ये रायस्पोषमेदाः। विधृतिरुपरिष्टा बृहस्पते राधिपत्यऽओजोमेदा विश्वाभ्यो मानाष्ट्राभ्यस्पाहि मनोरश्वासि॥ (४) अधरीय वस्त्र (धोती)—परिधास्यैयशोधास्यैदीर्घायुत्त्वायजरदष्टिरस्मि। शत जीवाशरदः सुवर्चारायस्पोषमभि संव्ययिष्ये। (५) उष्णीय वस्त्र (पगड़ी) ...व सुवासाः परिवीतऽआगात्सऽउश्रेयान्भवति जायमानः। तन्धीरा...उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः। (६) उत्तरीय वस्त्र (दुपट्टा) ...र्वी यशसेन्द्राबृहस्पति। यशोभगश्चमाविदद्यशोभा...त...। (७) पुष्पमाला ग्रहण—या आहरजमदग्निः श्रद्धायैकामाये...याथता अहगृह्णामि यशसाभगेन। (८) पुष्पमाला धारण—यद्यस्मरसामिन्द्रश्चकार विपुलं पृथु। तेन संग्रथिता सुमनसऽआबध्नामि...शोमयो। (९) यज्ञोपवीत धारण—यज्ञोपवीतं परम पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहज पुरस्तात्। आयुमग्र्य प्रति मुञ्चशुभ्र यज्ञोपवीतं बलमस्तुतेजः (१०) श्रीफलदान—ऋतवस्थऽऋतावृधऋतुष्टास्थऽऋतावृधः। श्चतोमधश्चुतोविराजोनामकामदुधा अक्षीयमाणाः॥

३. गोत्रोच्चारण :-

पश्चात् कन्या पिता दक्षिणा सहित सात फल हाथ में लेकर गोत्रोच्चारण करे।

(१) अमुक गोत्रोत्पन्नस्य अमुक शर्मणः प्रपौत्राय।
(२) " " " पौत्राय।
(३) " " " पुत्राय।
(४) " " " दौहित्राय।
(५) " " " वराय विष्णुरूपाय।
(६) अमुक गोत्रोत्पन्नस्य अमुक शर्मणः प्रपौत्रीं।
(७) " " " पौत्रीं।
(८) " " " पुत्रीं।
(९) " " " दौहित्रीं।
(१०) " " " नाम्नीं कन्यां लक्ष्मीस्वरूपिणीं।

सालंकरां प्रजापतिदैवत्यां ज्योतिष्टोमादित्रिरात्रि फलप्राप्तिकामो भार्यात्वेन दैवज्ञ दर्शित विवाहवासरे संप्रदास्येत्॥

पश्चात् कन्या माता दीपिका से वर की आरती करे, तदनन्तर संकल्प करें।

यथाशक्त्यासमवादितोपचारैः कृतेन वरस्य सीमान्त पूजनेन सर्व स्वरूपी भववाञ्छी वासुदेवः प्रीयतां न मम ॥ इति ॥

१७. द्वार पूजन:-

द्वार पर कन्या या वर के आने पर स्वागतार्थ यजमान सर्व प्रथम आचमन व प्राणायाम कर संकल्प करें।

अद्येत्यादि० मम पुत्रस्य (कन्यायाः) विवाहसंस्कार कर्मणि आगत वरस्य (कन्यायाः) द्वार पूजनमह करिष्ये ।

पश्चात् गणपति पूजन (पृष्ठ ५) और वरुण कलश पूजन (पृष्ठ ४) करें । तदनन्तर वर को तिलक दें ।

ॐ त्वां गन्धर्वाअखनंस्त्वामिन्द्रस्त्वा बृहस्पतिः । त्वामोषधेसोमो राजाविद्वान्यक्ष्मादमुच्यतः ।

पश्चात् काष्ठ पात्र (बेलन आदि) से पूजन करें ।

ॐ भद्रङ्कर्णेभिः शृणुयामः देवा भद्रम्पश्येमाक्षभिर्यजत्राः । स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ँ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥

पश्चात् अग्नि में धूप या हल्दी डालकर वर को वास देवें

ॐ धूरसिधूर्वधूर्वन्तंधूर्वतंयोऽस्मान् धूर्वतितंधूर्वयंवयधूर्वामः । देवानामसिवह्नितम ँ सस्नितमं पप्रितमञ्जुष्टतमं देवहूतमम् ॥

पश्चात् जल पूर्ण पात्र से वर की आरती करें ।

ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कंभ सर्जनीस्थो वरुणस्य ऋतसदन्यसि । वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमासीद ॥

पश्चात् गुलाल लगी हुई थाली पर ॐ का चिन्ह निकाल कर उस थाली से वर या कन्या की आरती करें ।

ॐ स्वस्तिनऽइन्द्रोवृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः । स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु ॥

पश्चात् दीपिका से आरती करें ।

ॐ अग्निर्देवता वातोदेवता सूर्योदेवता चन्द्रमादेवता वसवोदेवता रुद्रादेवता दित्यादेवता मरुतोदेवता विश्वेदेवादेवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता ॥

पश्चात् वर अपना दाहिना हाथ कान पर रखें और अंग रक्षक उस के कान पर रखे हुए हाथ से पांव के अंगूठे तक तीन वार मौली से सूत्र वेष्टन करें ।

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्तिः पृथिवीशान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पयः शान्तिर्विश्वेदेवा शान्ति ब्रह्मशान्तिः सर्वँ शान्तिः शान्तिरेव शान्ति सामाशान्तिरेधि ॥ १ ॥ यतोयतः समीहसेततोनो अभयं कुरु । शन्नः कुरुप्रजाभ्यो भयन्नः पशुभ्यः ।।२।। ॐ सुशान्तिर्भवतु ।

पश्चात् सूत्र वेष्टन किए हुए सूत्र की माला बनाकर वर वह सूत्र माला कन्या माता के गले में डाले ।

ॐ युवासुवासाः परिवीत आगात्स उश्रेयान्भवति जायमानः । तन्धीरास कवयःऽउन्नयन्ति स्वाध्योमनसा देवयन्तः ॥

पश्चात् वर द्वार प्रवेश करे ।

१८. विवाह संस्कारः—

१. संकल्पः—

सर्व प्रथम आचमन व प्राणायाम कर संकल्प करें ।

अद्येत्यादि० स्नातककन्यार्थिन मंडपागतं वरं कन्यादानांगभूतेन मधुपर्केणाहमर्चयिष्ये ॥ १ ॥ तत्रादौ विघ्नविनाशार्थं वरुणपूजन पूर्वक गणपति पूजनं च करिष्ये ॥ २ ॥

पश्चात् वरुण कलश पूजन (पृष्ठ-४) दीपक पूजन (पृष्ठ-५) और गणपति पूजन (पृष्ठ-५) से करें ।

२. मधुपर्कादि पूजनः—

कन्या पिता वर से कहे–साधुभवानास्तामर्चयिष्यामि ।

तब वर कहे—अर्चय । पश्चात् कन्या पिता विनियोग करे ।

विष्टरइत्यस्यकपिलऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दोविष्टरोदेवता. विष्टरदा
विनियोगः ॥ १ ॥ वर्ष्मोस्मीत्यस्याथर्वणऋषिरनुष्टुप्छन्दोविष्ट
देवताविष्टरोपवेशने विनियोगः ॥२॥ विराजोदोहोसीत्यस्यप्रजापतिऋ
र्यजुश्छन्दआपोदेवताःपादप्रक्षालने विनियोगः ॥ ३ ॥ विष्टरइत्यस्यकपि
ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दोविष्टरोदेवतापुनर्विष्टरदाने विनियोगः॥ ४ ॥वर्ष्मोसि
त्यस्याथर्वणऋषिरनुष्टुप्छन्दोविष्टरोदेवतापादाधस्तान्निधाने विनियोग
॥५॥ अर्घइत्यस्यविष्णुऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दोविष्णुर्देवताअर्घदाने विनियोग
॥ ६ ॥ आपस्थेत्यस्यप्रजापतिऋषिर्यजुश्छन्दआपोदेवताअर्घग्रहणे वि
योगः ॥ ७ ॥ समुद्रंवइत्यस्याथर्वणऋषिरनुष्टुप्छन्दआपोदेवताःनिनयने
विनियोगः ॥ ८ ॥ आचमनीयमित्यस्यापस्तवऋषिरुष्णिग्छन्दआपोदेवत
आचमनीयदाने विनियोगः ॥ ९ ॥ आमागन्नित्यस्यपरमेष्ठ्यृषिर्बृहति
छन्दआपोदेवताआचमने विनियोगः ॥ १० ॥ मधुपर्कइत्यस्यमधुच्छन्द
ऋषिर्बृहतीछन्दोमधुपर्कोदेवतामधुपर्कदाने विनियोगः ॥ ११ ॥ मित्रस्य
त्वेत्यस्यबृहस्पतिऋषिर्यजुश्छन्दोमधुपर्कोदेवतामधुपर्कावेक्षणे विनियोगः
॥ १२ ॥ देवस्यत्वेत्यस्यप्रजापतिऋषिर्गायत्रीछन्दःसवितादेवतामधुपर्क
ग्रहणे विनियोगः ॥ १३ ॥ नमःश्यावास्यायेत्यस्यप्रजापतिऋषिर्यजुश्छन्दः
सवितादेवतामधुपर्कालोडने विनियोगः ॥ १४ ॥ यन्मधुनइत्यस्यकुत्सऋषि
र्जगतीछन्दोमधुपर्कोदेवताभक्षणे विनियोगः ॥ १५ ॥ मातारुद्राणामित्यस्य
ब्रह्माऋषिस्त्रिष्टुपछन्दोगौर्देवतागोरभिमंत्रणेच विनियोगः ॥ १६ ॥

पश्चात् कन्या पिता विष्टर हाथ में लेकर कहे ।

ॐ विष्टरो विष्टरो विष्टरः प्रतिगृह्यताम् ।

तब वर कहे— प्रतिगृह्णामि ।

पश्चात् वर पिता आचमनीय पात्र लेकर कहे ।

ॐ आचमनीयं आचमनीयं अचमनीयं प्रतिगृह्यताम् ।

तब वर कहे— प्रतिगृह्णामि ।

फिर वर वह पात्र लेकर निम्न मंत्र से आचमनी करे

ॐ आमागन्यशसास ँ सृजवर्चसा। तम्माकुरुप्रियम्प्रजान म्पशूनामरिष्ट तनूनाम् ।

फिर द्वितीय आचमनी तूष्णीं करें ।

पश्चात् कन्या पिता मधुपर्क पात्र लेकर कहे ।

ॐ मधुपर्को मधुपर्को मधुपर्कः प्रतिगृह्यताम् ।

तब वह कहे—अर्घ्यः ।

फिर मधुपर्क का निरीक्षण करें ।

ॐ मित्रस्यात्वाचक्षुषाप्रतीक्षे ।

पश्चात् वह मधुपर्क पात्र, वर ग्रहण करे ।

ॐ देवस्यत्वासवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णोहस्ताभ्याम्

पश्चात् निम्न मंत्र से मधुपर्क को हिलावें ।

ॐ नमः श्यावास्यायान्नशनेयत ऽविद्धंतत्ते निष्कृन्तामि ।

पश्चात् अनामिका से मधुपर्क का कुछ अंश भूमि पर दें । फिर निम्न मंत्र से तीन वार मधुपर्क का प्राशन करें

ॐ यन्मधुनोमधव्यम्परम ँ रूपमन्नाद्यम् तेनाहम्मधुनोमधव्ये ण रूपेणान्नाद्येन परमोमधव्योन्नादोसानि ॥

पश्चात् आचमन करें ।

ॐ वाङ्मआस्येऽनसोः प्राणोक्ष्णोश्चक्षुः कर्णयोः श्रोत्रं बाह्वोर्बलम् अरिष्टानिमेङ्गानितनूस्तन्वामेसह ॥

३. गोरुत्सर्गः—

सर्वप्रथम कन्या पिता गोरुत्सर्ग के लिए कुछ दक्षिणा हाथ में ले ले और गौ गौ गौ कहे तब वर वह दक्षिणा उनके हाथ से ले ले।

ॐ माता रुद्राणांदुहितावसूनाँ स्वसादित्यानाममृतस्यनाभिः।प्रनुोचचिकितुषेजनायमागामनागामदितिंवधिष्ट ॥ १ ॥ ममचामुष्यचपापानँ हनोमीति यद्यालभेताथयद्युत्सिसृक्षेन्ममचामुष्यचपाप्माहतः।

तब कन्या पिता वर से कहे। ॐ उत्सृजततृणान्।

तदनन्तर वर वह राशि भूमि पर रखे गये तृणों पर छोड़ दे।

ॐ नत्वेवामाँ सोर्वः स्यादधियज्ञमधिविवाहंकुरुतेत्येवब्रूयाचद्यसकृत्संवत्सरस्यसोमेन यजेतकृपाद्यर्याएवैनंयाजयेयुः॥

४. वर पूजनः—

(नोटः—सीमान्त संस्कार के अन्तर्गत वर पूजन (पृष्ठ-७३-७४) पर है उसी के अनुसार यहाँ वर पूजन करें। केवल पादप्रक्षालन और श्रीफलदान न करें।)

५. अग्निस्थापनः—

(नोटः-गृह शान्ति के अन्तर्गत अग्निस्थापन (पृष्ठः—२५) पर है। उसी के अनुसार कार्य करें।

६. मंगलाष्टकः—

सर्व प्रथम अग्नि के पास वर और कन्या के मध्य अन्तर पट दिया जाय और दोनों पुष्पमाला ग्रहण कर खड़े रहें। तब ब्राह्मण आर्शीवाद देते हुए मंगलाष्टक का पाठ करें।

ब्रह्माविष्णुहरौ स्वराट् च हुतभुक्, वैवस्वतो निऋति।
राशापालकपाश पाणि वरुणो, वायुः सदा वीर्यवान् ॥
शैवागेह्यलका च यस्य वसतिः, द्रव्याधिपो यक्षराट्।
ईशान्या अधिपश्चहीश्वर इतः, कुर्यात्सदा मंगलम् ॥ १ ।
दुर्वासाश्च्यवनोऽथगौतम मुनिः, व्यासो वसिष्ठोऽसितः।
कौशल्यः कपिलः कुमार कवषौ कुम्भोद्भव काश्यपः ॥
गर्गोदेवल आर्ष्टिषेण ऋतवाक्, बोध्योभृगुसुरिः।
मार्कंडेय शुकौ पतञ्जलमुनिः, कुर्यात्सदा मंगलम् ॥२॥
इक्ष्वाकुनभगोंऽबरीष पुरजित्, कारूषकः केतुमान्।
माधान्ता पुरूकुत्सरोहित सुतौ, चम्पोवृको वाहुकः ॥
खट्वांगो रघुवंश राजतिलको, रामो नलो नाहुषः।
शान्तिः शंतनुभीष्मधर्म तनुजाः, कुर्यात् सदा मंगलम् ॥३।
सत्याश्रीजनकात्मजा च गिरिजा, काष्टाऽनसूया शची।
सावित्री च ह्यरुंधती च सुरसा, मंदोदरी द्रौपदी ॥
संपल्पादमयंत्यति व सुभगा, मूर्तिस्तथा दक्षिणा।
ताराश्रीधरणीर्दनुश्च सततं, कुर्यात्सदा मंगलम् ॥ ४ ॥
श्रीशैलो मलय स्त्रिकूटककुभौ, गोवर्द्धनो रैवतः।
सह्योदेवगिरिर्महेन्द्र ऋषभो, विंध्योऽथगोकामुखः ॥
नीलः कामगिरिश्च वारिधरिणो, मैनाकऋक्षोगिरिः।
द्रौणः कोल्लकऋष्यमूकनिषधौ, कुर्यात्सदा मंगलम् ॥ ५ ।
गंगा लोल कलोल चंचल रजः, कंजद्विफेरा कुला।

कावेरी सुरसा महेन्द्र तनया ऽसिक्नीशतद्रूस्तथा ॥
विश्वावेत्रवती प्रवाहवितता, कृष्णा त्रिवेणी च सा ।
वेण्या भीमरथी कलिंग तनया, कुर्यात्सदा मंगलम् ॥ ६ ।
मंदारोबकुलश्च चन्दन तरुः, निम्बः कदम्बो नलः ।
खर्जूरोऽर्जुन शालतालपनसाः, प्लक्षोमधुकोवटः ॥
द्राक्षेक्षुसुरदारुचूतसरला, नानालताऽऽलिंगिता ।
नीचैः पुष्पफलैरशोक लतिका, कुर्यात्सदा मंगलम् ॥ ७ ॥
श्रीमान्काश्यपगोत्रजोर विरलं, चन्द्रः कठोरच्छवि ।
रात्रेयोपृथिवीसुतः शिखिनिभो, द्राजेकुलेजन्मभाक् ॥
सौम्यः पीतउदङ् मुखो गुरुरयं, शुक्रस्तुलाधीश्वरो ।
मंदोराहुरहोचकेतुरपियः, कुर्यात्सदा मंगलम् ॥८॥

पश्चात् अन्तरपट हटाया जाय । प्रथम कन्या वर को पुष्प माला पहनावे और बाद में वर कन्या को पुष्पमाला पहनावे । ब्राह्मण उनके ऊपर चावल छिड़कते हुए प्रतिष्ठा मंत्र पढ़े ।

ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तन्नो त्वरिष्ट यज्ञँ समिमन्दधातु । विश्वेदेवास इहमादयन्तामोँ ३ प्रतिष्ठ ॥

पश्चात् वर कन्या के सम्मुख निम्न मंत्र का पाठ करें ।

ॐ समञ्जन्तुविश्वेदेवाः समापोहृदयानिनो सम्मातरिश्वासन्धा-तुसमुदेष्ट्रीदधातुनौ ॥

पश्चात् वर मंगल सूत्र कन्या के कंठ में बांधे ।

मांगल्यततुनानेन, मम जीवन हेतुना ।
कठेबध्नामि सुभगे, त्वं जीवंशरदां शतम् ॥

पश्चात् वर और कन्या के दक्षिण हाथ में मदनफल बांधें

ॐ यदाबध्नन्दाक्षायणा हिरण्यँ शतानीकाय सुमनस्यमाना तन्मऽआबध्नामि शतशारदायायुष्माञ्जरदष्टिर्यथासम् ।

पश्चात् वर और वधु के उत्तरीय वस्त्र से गांठ बाधें ।

ॐ परित्वागिर्व्वणोगिरऽइमाभवन्तुविश्वतः । वृद्धायुमनुवृद्धयो ष्टाभवन्तुजुष्टयः ॥

पश्चात् वर और कन्या को मुकुट पहनावें।

७. कन्यादान—

सर्व प्रथम सपत्नीक कन्या पिता आचमन व प्राणायाम का संकल्प करे ।

अद्येत्यादि० मम आत्मनः श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं अस्मिन्पुण्याहे अस्याः लक्ष्मीरूपण्याः कन्यायाः अनेन विष्णुरुपिण वरणे सह करिष्यमाणोद्वाहद्वारा धर्मप्रजापत्योभयकुलवंशाभिवृद्धयर्थं श्रीपरमेश्वर प्रीत्यर्थ कन्यादानमहंकरिष्ये ॥

पश्चात् कन्या पिता वर और वधु के दक्षिण हाथ में निम्न वस्तु दें ।

१. जल-शिवा आप सन्तु । सन्तु शिवापः । २. पुष्प-सौमनस्य मस्तु । अस्तुसौमनस्य । ३ अक्षत-अक्षतं चारिष्टंचास्तु । अस्त्वक्षतमरि ष्टच । ४ जल-आपःपांतु आयुष्यमस्तु । ५. गंध-गन्धापांतुसौमंगल्यचास्तु । ६. अक्षत-अक्षताः पांतु आयुष्यमस्तु । ७. पुष्प-पुष्पाणि पांतुसौश्रियमस्तु । ८ जल या चावल पृथ्वी पर त्यागना-यत्पाप रोग अशुभंकल्याण तद्दूरे प्रातहतमस्तु ।

पश्चात् कन्या पिता कन्या का दक्षिण हाथ अपने हाथ में ले ले और वर अपना हाथ कन्या पिता के नीचे रखे। उस समय तीन वार गोत्रोच्चारण करते हुए संकल्प करें।

(१) अमुक गोत्रोत्पन्नस्य अमुक शर्मणः प्रपौत्राय।

(२) ,, ,, ,, पौत्राय।

(३) ,, ,, ,, पुत्राय।

(४) ,, ,, ,, दौहित्राय।

(५) ,, ,, ,, वराय विष्णुरूपाय।

(६) अमुक गोत्रोत्पन्नस्य अमुक शर्मणः प्रपौत्रीं।

(७) ,, ,, ,, पौत्रीं।

(८) ,, ,, ,, पुत्रीं।

(९) ,, ,, ,, दौहित्रीं।

(१०) ,, ,, ,, नाम्नीं कन्यां लक्ष्मीस्वरूपिणीं।

इमां कन्यां कुलशील सौभाग्यदयादाक्षिण्यादि गुणगणयुतां सर्वावयवेषु ललितां चारोगां कांचनादिभिरुपकल्पित कुंडल कंकण कटिसूत्रांगद नूपुर मुक्ता मालादिभिर्यथाशक्त्यावाऽलंकृतां मकरंदमत्त मधुकर मुदित मालती मालां मदनफल बद्धांत्रिसातुलशुद्धां दशपुरुषविख्यातां वेदशास्त्रपुराणागमवद्धर्मरतामुप कल्पितोपस्कर सहितां प्रजापतिदैवत्यां मम श्रुतिस्मृति पुराणोक्त फल प्राप्त्यर्थं तथा च समस्त पितृणामखंड निरितिशयानन्द ब्रह्मलोकवाप्त्यादि कन्यादानाकल्पोक्त फलावाप्त्यर्थं अस्यां कन्यायामुत्पादयिष्यमाण संतत्या दशपूर्वान्दशपरान्मां चैवमेकविंशति पुरुषान्नुद्धर्त्तु कामः श्रीपरमेश्वर प्रीत्यर्थं भार्यात्वेन तुभ्यमहं सम्प्रददे॥

कन्या पिता कहे—दाताहं वरुणो राजा, द्रव्यमादित्य दैवतं विप्रोसौविष्णुरुपेण, प्रतिगृह्णात्वयं विधि ॥:

तब कन्या पिता "श्रीकृष्णार्पणमस्तु" कहकर कन्या का हाथ वर के हाथ में दे दे और तब वर कहे।

ॐ स्वस्ति ॥ ॐ द्यौस्त्वाददातु पृथिवीत्वाप्रतिगृह्णातु ॥

पश्चात् कन्या पिता गोदान का संकल्प करें।

अद्येत्यादि० कृतस्य कन्यादानस्य सांगतासिद्ध्यर्थं मिमांगांतन्निष्क्रयद्रव्यं वा यथाशक्ति दक्षिणां च तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥

पश्चात् कन्या पिता वर से प्रार्थना करे।

यस्त्या धर्मश्चरितव्य सोनया सह।
धर्मेचार्थे च कामे च त्वयेय नाति चरितव्या ॥

तब वर कहे—नाति चरामि।

कन्या पिता कन्या से प्रार्थना करे।

कन्येममाग्रातो भूयाः कन्ये मे देविपार्श्वयोः।
कन्ये मे पृष्ठ तो भूयाः त्वद्दानामोक्षमापुन्याम्।

पश्चात् कन्या पिता वर से प्रार्थना करे।

कन्यां लक्षणसंपन्नां कनकाभरणैर्युताम्।
दास्यामिब्रह्मणे तुभ्य ब्रह्मलोक जिगीषया ॥ १ ॥

पृथिव्यादि महाभूताः साक्षिणः सर्व देवताः।
इमांकन्यां प्रदास्यामि पितृणां तारणायच ॥ २ ॥

मम वंशकुले जाता यावद्वर्षाणि पोषिता।
तुभ्यं वर मया दत्ता पुत्र पौत्र विवर्धिनी ॥ ३ ॥

गौरी कन्यामिमां विप्र यथा शक्त्या विभूषिताम् ।
गोत्राय शर्मणे तुभ्यं, दत्तां विप्र समाश्रय ॥ ४ ॥

तब कन्या माता कहे—मया पि दत्ता ।

पश्चात् वर कहे—मया प्रतिगृहीता ।

अन्त में कन्या पिता संकल्प करे ।

कृतेनाननेन कन्यादानख्यकर्मणा भगवान् श्रीबालकृष्ण प्रीयताम् ॥

८. कुशकंडिकाः—

सर्व प्रथम वर आचमन व प्राणायाम कर संकल्प करे ।

अद्येत्यादि० मम आत्मनः श्रुतिस्मृति पुराणोक्त फल प्राप्त्यर्थ प्रतिगृहीताया अस्या वध्वा भार्यत्वसिद्ध्यर्थं धर्मार्थ काम पुत्रपौत्रादि संतति वृद्ध्यर्थं विहित विधिना स्थापित योजक नामाग्नौ वैवाहिक होममहं करिष्ये ॥ १ ॥ तदंगत्वेनादौकलशाराधनं गणपति पूजन स्वस्त्युच्चारणं ब्रह्माचार्यादिग्वरुण अग्निपूजनं देवतान्वाधानं ब्रह्मासनस्तरणादि पर्युक्षणं कर्मं च करिष्ये ।

पश्चात् कलश पूजन (पृष्ठ—४) गणपति पूजन (पृष्ठ-५) स्वतिपुण्याहवाचन, पृष्ठ-९) आचार्य ऋत्विक् वरुण (पृष्ठ-२५) और कुशकंडिका (पृष्ठ-३०) से देखकर करें । उस समय "योजक नाम" अग्नि की स्थापना करें ।

९. प्रायश्चित होमः—

निम्न मंत्रों से घृत से हवन करें । और शेष भाग प्रोक्षणी पात्र में डालें ।

ॐ प्रजापतयेस्वाहा इदं प्रजापतये न मम ॥ ॐ इन्द्रायस्वाहा। इदं इन्द्राय न मम ।२॥ ॐ अग्नयेस्वाहा । इदं अग्नये न मम ॥३॥ ॐ सोमायस्वाहा इदं सोमाय न मम ॥ ४ ॥

॥ नवाहुतयः॥ ॐ भूः स्वाहा इदं अग्नये न मम ॥१॥ ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे न मम ॥ २ ॥ ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय न मम ॥ ३ ॥ ॐ त्वन्नोऽ अग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडोऽअवयासिसीष्ठाः । यजिष्ठो वन्हितमः शोशुचानो विश्वाद्वेषा ँ सि प्रमुमुग्धस्मत्स्वाहा ।। इदं अग्नि वरुणाभ्यां न मम ॥ ४ ॥ ॐ सत्वन्नोऽ अग्ने ऽवमो भवोतिने दिष्टोऽअस्याऽ उषसो व्युष्टौ । अवयद्वनो वरुण ँ रराणोवीहिमृडीक ँ सुहवोनऽएधि स्वाहा ॥ इदमग्नीवरूणाभ्यां न मम ॥ ५ ॥ ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्व ममाऽअसि । अयानो यज्ञं वहस्य यानो धेहि भेषज ँ स्वाहा इदं अग्नये अयसे न मम ॥ ६ ॥ ॐ ये ते शतं वरूणये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः तेभिर्नोऽअद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्का स्वाहा ॥ इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम ॥ ७ ॥ ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यम ँ श्रथाय । अथावयमादित्य व्रतेनवानागसोऽअदितयेस्याम स्वाहा ॥ इदं वरुणाय न मम ॥ ८ ॥ ॐ प्रजापतये स्वाहा इद प्रजापतये न मम ॥ ९ ॥ ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदं अग्नये न मम ॥ १० ॥

१०. अथ राष्ट्रभृत् होमः—

सर्व प्रथम विनियोग करें।

ऋताषाडित्यादिद्वादशानां प्रजापतिऋषिस्तत्तन्मंत्रोक्ता देवता यजुश्छन्दो राष्ट्रभृद्धोमे विनियोगः ॥

पश्चात् १२ आहुतियें घृत की देवें ।

ॐ ऋताषाड्ऋतधामाग्निगन्धर्वः स न इदं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै वाहावाट् इदमग्नये गन्धर्वाय न मम ॥ १ ॥ ॐ ऋतासाड्ऋतधामाग्नि न्धर्वस्तस्यौषधयोप्सरसो मुदो नाम ताभ्यः स्वाहा । इदमौषधिभ्यो ऽप्स ोभ्यः न मम ॥ २ ॥ ॐ सँहितो विश्वासामा सूर्यो गन्धर्वः सन इदं ह्म क्षत्र पातु तस्मै स्वाहा वाट् ॥ इदं सूर्याय गन्धर्वाय न मम ॥ ३ ॥ ॐ सँहितो विश्वसामा सूर्यो गन्धर्वस्तस्य मरीचयोऽप्सरस आयुवो ाम ताभ्यः स्वाहा ॥ इदं मरीचिभ्योऽप्सरोभ्यः न मम ॥ ४ ॥ ॐ ुषुम्णः सूर्यरश्मिश्चन्द्रमा गन्धर्व स न इद ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा ाट् ॥ इद चन्द्रमसे गन्धर्वाय न मम ॥ ५ ॥ ॐ सुषुम्णः सूर्यरश्मिश्च-द्रमा गन्धर्वस्तस्य नक्षत्राण्यप्सरसो भेकुरयो नाम ताभ्यः स्वाहा ॥ इद ाक्षत्रेभ्योऽप्सरोभ्यः न मम ॥ ६ ॥ ॐ इषिरो विश्वव्यचा वातो गन्धर्वः ा न इदं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् ॥ इदं वाताय गन्धर्वाय न मम । ७ ॥ ॐ इषिरो विश्वव्यचा वातो गन्धर्वस्तस्यापो अप्सरस ऊर्जो नाम ाभ्यः स्वाहा ॥ इदम् अद्भ्यो अप्सरोभ्यः न मम ॥ ८ ॥ ॐ भुज्युः सुपुर्णो यज्ञो गन्धर्वः स न इद ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् ॥ इदं यज्ञाय गन्धर्वाय न मम । ९ ॥ ॐ भुज्युः सुपुर्णो यज्ञो गन्धर्वस्तस्य दक्षिणा अप्पसरसस्तावा नाम ताभ्यः स्वाहा ॥ इद दक्षिणाभ्योऽप्सरोभ्यः न मम ॥ १० ॥ ॐ प्रजापतिर्विश्वकर्मा मनो गन्धर्वः स न इदं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् । इदं मनसे गन्धर्वाय न मम ॥ ११ ॥ ॐ प्रजापतिर्विश्वकर्मा मनो गन्धर्वतस्य ऋक्सामान्यप्सरस एष्टयो नाम ताभ्यः स्वाहा ॥ इदं ऋक्सामेभ्योऽप्सरसरोभ्यः एष्टिभ्य न मम ॥१२॥

११. अथ जयाहोमः–

सर्व प्रथम विनियोग करें ।

चित्तं चेत्यादिद्वादशानां परमेष्टिऋषिर्यजुश्छन्दो लिंगोक्ता दे वैवाहकर्मणि जया होमे विनियोगः ॥

पश्चात् १३ आहुतियें घृत की देवे ।

ॐ चित्तं च स्वाहा ॥ इदं चित्ताय न मम ॥ १ ॥ ॐ चितिश स्वाहा ॥ इदं चित्त्यै न मम ॥ २ ॥ ॐ आकूत च स्वाहा ॥ इदं आकूत न मम ॥ ३ ॥ ॐ आकूतिश्च स्वाहा ॥ इद आकूत्यै न मम ॥ ४ ॥ विज्ञातं च स्वाहा इदं विज्ञाताय न मम ॥ ५ ॥ ॐ विज्ञातिश्च स्वाहा इद विज्ञात्यै न मम ॥ ६ ॥ ॐ मनश्च स्वाहा ॥ इदं मनसे न मम ॥७ ॐ शक्करीभ्यो स्वाहा ॥ इदं शक्करीभ्यो न मम ॥ ८ ॥ ॐ दर्श स्वाहा ॥ इदं दर्शाय न मम ॥ ९ ॥ ॐ पौर्णमासं च स्वाहा ॥ इद पौण मासाय न मम ॥ १० ॥ ॐ बृहच्च स्वाहा ॥ इदं बृहते न मम ॥ ११ ॐ रथन्तर च स्वाहा ॥ इदं रथन्तराय न मम ॥ १२ ॥ ॐ प्रजापतिर्जय निन्द्रायवृष्णो प्रायच्छदुग्रः पृतना जयेषु । तस्मै विशः समनमन्त सव स उग्रः स इ हव्यो बभूव स्वाहा ॥ इद प्रजापतये न मम ॥ १३ ॥

१२. अथ अभ्यातान होमः–

सर्व प्रथम विनियोग करें ।

ॐअग्निभूतानामित्याद्यष्टायशानां प्रजापतिर्ऋषिस्त्रिष्टुप छन्दस न्मंत्रोक्तादेवता अभ्यातन होमे विनियोगः ॥

पश्चात् १८ आहुतियें घृत की देवे।

ॐ अग्निभू ᳐तानामधिपतिः समावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रे ऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यां ᳐ स्वाहा ॥ इदमग्नये न मम ॥ १ ॥ ॐ इन्द्रो ज्येष्टानामधिपति * इदं इन्द्राय ज्येष्ठाना अधिपतये न मम ॥ २ ॥

पश्चात् वर वधु के मध्य अन्तर पट देकर आहुति दें।

ॐ यमः पृथिव्या अधिपति............ इद यमाय पृथिव्या अधिपतये न मम ॥ ३ ॥

पश्चात् अन्तर पट हटाकर प्रणीता पात्र का जल कान और आँखों पर लगावें। फिर आहुति दें।

ॐ वायुः अन्तरिक्षस्याधिपति........इदं वायवेऽन्तरिक्षस्याधिपतये न मम ॥ ४ ॥ ॐ सूर्यो दिवोधिपति........इदं सूर्याय दिवोधिपतये न मम ॥ ५ ॥ ॐ चन्द्रमा नक्षत्राणामधिपतिः........इदं चन्द्रमसे न मम ॥ ६ ॥ ॐ बृहस्पतिर्ब्रह्मणोधिपतिः........इदं बृहस्पतये ब्रह्मणोऽधिपतिये न मम ॥ ७ ॥ ॐ मित्रः सत्यानामधिपतिः........इदं मित्राय सत्यामधिपतये न मम ॥ ८ ॥ ॐ वरुणोऽपानां ᳐ अधिपतिः ...इदं वरुणाय अपानां अधिपतये न मम ॥ ९ ॥ ॐ समुद्रः स्रोत्यानामधिपतिः........इदं समुद्रायस्रौतानामाधिपतये न मम ॥१०॥ ॐ अन्न ᳐ साम्राज्यानामधिपतिः तन्मावतु....अन्नाय साम्राज्यानामधिपतये न मम ॥ ११ ॥ ॐ सोमः औषधीनामधिपतिः........इदं सोमाय औषधीनायधिपतये न मम ॥ १२ ॥ ॐ सविता प्रसवानामधिपतिः........इदं सवित्रे प्रसवानामधिपतये न मम ॥ १३ ॥

---

* समस्त रिक्त स्थानों पर प्रथम मंत्र के रेखांकित शब्दों की पुनरावृति करें।

पश्चात् अन्तर पर देकर आहुति दें ।

ॐ रुद्रः पशूनामधिपतिः........इदं रुद्राय पशूनामधिपतये न मम ॥ १४ ॥

पश्चात् अन्तर पट हटाकर प्रणीता पात्र का जल कान व आंखों पर लगावें फिर आहुति दें ।

ॐ त्वष्टारूपाणामधिपतिः........इदं त्वाष्ट्रे रूपाणामधिपतये न मम ॥ १५ ॥ ॐ विष्णुः पर्वतानामधिपतिः........इदं विष्णवे पर्वतानामधिपतये न मम ॥ १६ ॥ ॐ मरुतो गणानामधिपतयस्ते मावन्तु.... इदं मरुद्भ्यो गणानामधिपतिभ्यः न मम ॥ १७ ॥

पश्चात् अन्तरपट देकर आहुति दें ।

ॐ पितर पितामहाः परे वरे ततास्ततामहाः। ते मावन्त्वस्मिन्ब्रह्म एयस्मिन् क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यां दे स्वाहा । इदं पितृभ्यः न मम ॥ १८ ॥

१३ पंचाहुतयः—

सर्व प्रथम विनियोग करें ।

अग्निरैत्वित्यादि पचानां प्रजापतिर्ऋषि रंतिमस्य सकर्षण देवताः चतुर्थस्य वैवस्वतोदेवता पंचमस्य मृत्युर्देवता त्रिष्टुप्छन्द विनियोगः ॥

पश्चात् घृताहुति दें ।

ॐ अग्निरेतु प्रथमो देवतानां सोऽस्यै प्रजां मुञ्चतु मृत्यु तदयं राजा वरुणोऽनुमन्यतां यथेयं स्त्री पौत्रमघन्नरोदात् इदमग्नये न मम ॥ १ ॥ ॐ इमामग्निस्त्रायतां गार्हपत्यः प्रजामस्

र्वमायुः । अशुन्योपस्था जीवतामस्तु माता पोत्रमानन्दमभिविबुध्यतामियं स्वाहा ॥ इदमग्नये न मम ॥ २ ॥ ॐ स्वस्ति नो अग्ने दिव आपृथिव्या विश्वानिधेह्ययथा यजत्र । यदास्यां मयिदिविजात प्रशस्तं तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रं स्वाहा ॥ इदमग्नये न मम ॥ ३ ॥

पश्चात् अन्तर पट देकर होम करें ।

ॐ सुगन्न पन्थां प्रदिशन्न एहि ज्योतिष्मद्धे ह्यजरन्न आयुः । अपैतु मृत्युमृतंम आगाद्वैवस्वतो नो अभय कृणोतु स्वाहा ॥ इद वैवस्वताय न मम ॥ ४ ॥ ॐ पर मृत्यो अनु परेहि पन्थां यस्ते अन्य इतरो देव यानात् । चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि मा नः प्रजां रीरिषो मोत वीरान् स्वाहा ॥ इद मृत्यवे न मम ॥ ५ ॥

पश्चात् अन्तर पट हटाकर प्रणीता पात्र के जल को कान व आखों पर लगावें ।

१४. लाजा होमः–

सर्व प्रथम विनियोग करें ।

अर्यमणमित्यादि त्रयाणामाथर्वणर्षि स्त्रिष्टुप्छन्दस्तृतीयस्या-नुष्टुप्छन्दाग्निर्देवता लाजहोमे विनियोगः ।

वर–वधु खड़े होवें, वधु आगे होवे। वधू की अंजलि करावे, वधु के हाथों के नीचे वर अंजलि करे। आचार्य सेके हुवे चावलों को बांस के छाज में डाल कर घृत मिलावे, चावलों के चार भाग करे। छाज को वधु के भाई के हाथ में देवे। वधु का भाई छाज में से चावलों के तीन भाग करे और इन तीन भागों को नीचे लिखे ३ मंत्रों से अग्नि में होम करें।

ॐ अर्यमणं देवं कन्याऽग्निमयक्षत । सनो अर्यमा देवः प्रेतो मुञ्चतु मा पतेः स्वाहा ॥ इदं अर्यमणे देवाय न मम ॥१॥ ॐ इयं नार्युपब्रूते लाजानावपन्तिका । आयुष्मानस्तु मे पतिरेधन्तां ज्ञातयो मम स्वाहा ॥ इदमग्नये न मम ॥ २ ॥ ॐ इमाँल्लाजानावपाम्यग्नौ समृद्धिकरणं तव । मम तुभ्यं च संवननं तदग्निरनुमन्यतामियं स्वाहा ॥ इदं अग्नये न मम ॥ ३ ॥

वर वधु के दाहिने हाथ को अंगूठे सहित पकड़े और ये मंत्र पढ़े:—

ॐ गृभ्णामि ते सौभगत्वाय हस्तं मयापत्या जरदष्टिर्यथा सः । भगोऽर्यमा सविता पुरन्धिर्मह्यं त्वाऽदुर्गार्हपत्याय देवाः ॥ १ ॥ ॐ अमोहमस्मि सा त्वं सा त्वमस्यमोऽहम् ॥ सामाहमस्मि ऋक्त्वं द्यौरहं पृथिवी त्वम् ॥ २ ॥ ॐ तावेव विवहावहै सह रेतो दधावहै प्रजां प्रजनयावहै पुत्रान्विन्द्यावहै बहून् । ३ ॥ ते सन्तु जरदष्टयः संप्रियौ रोचिष्णू सुमनस्यमानौ । पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतं शृणुयाम शरदः शतम् ॥ ४ ॥

पश्चात् वधू दाहिना पैर शिला पर रखे ।

आरोहेममश्मानमश्मेव त्वं स्थिरा भव । अभितिष्ठ पृतन्यतोऽवबाधस्वा पृतानायतः ॥

वधू का पैर शिला पर ही रहे, तब वर यह गाथा पढ़े—

ॐ सरस्वति प्रेदमव सुभगे वाजिनीवती । यां त्वा विश्वस्य भूतस्य प्रजायामस्याग्रतः ॥ यस्यां भूतं समभवद्यस्यां विश्वमिदं जगत् । तामद्य गाथां गास्यामि या स्त्रीणामुत्तमं यशः ॥

फिर वधू को वर से आगे कर के दोनों को अग्नि की परिक्रमा करावे और ब्राह्मण मन्त्र पढ़े—

ॐ तुभ्यमग्ने पर्य्यवहन्सूर्यां वहतु ना साह । पुनः पतिभ्यों जायां दाग्ने प्रजया सह ॥

फिर दोनों अपने आसन पर बैठ जावें और भ्राता अग्नि तीन वार अपने हाथ तपाकर वधु के मस्तक पर रखे ।

(नोटः—उपरोक्त सम्पूर्ण क्रिया भ्राता के बाद काका और मामा के द्वारा की जाय । तीसरे फेरे के बाद वर—वधु अपना आसन बदल कर बैठेंगे, और पुनः अपने २ आसन पर बैठेंगे ।

पश्चात् चौथे फेरे पर कन्या पिता केवल निम्न आहुति करावे ।

ॐ भगाय स्वाहा इद भगाय न मम ।

पश्चात् वर वधु का हाथ ग्रहण कर पहले वर पीछे वधु इस प्रकार अग्नि की परिक्रमा करे । यह क्रिया बिना मंत्र होगी ।

पश्चात् वर निम्न मन्त्र से एक घृताहुति देवे ।

ॐ प्रजापये स्वाहा इदं प्रजापतये न मम ।

१५. सप्तांचल पूजनः—

सर्व प्रथम वर संकल्प करे ।

अद्येत्यादि गुणविशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्यस्तिथौ मम प्रति गृहीत कन्या पतित्व सिद्ध्यर्थं सप्तांचल पूजनमहं करिष्ये ॥

पश्चात् अग्नि के उत्तर में चावलों की सात ढिगलियाँ बनावें । फिर निम्न मंत्र से वर उनका गन्धादि पूजन करे ।

ॐ प्रतिपदसिप्रतिपदेत्वानुपदस्य अनुपदेत्वा सम्पदसिसंपदेत्वा तेजसितेजसेत्वा ॥

पश्चात् वह निम्न सात मंत्रों से वधु के दाहिने पैर द्वारा सातों ढिगलियों का विसर्जन करवावे ।

ॐ एकमिषे विष्णुस्त्वानयतु ॥ १ ॥ ॐ द्वे ऊर्जे विष्णुस्त्वानयतु ॥ २ ॥ ॐ त्रीणीरायस्पोषायविष्णुस्त्वानयतु ॥ ३ ॥ ॐ चत्वारिमायोभवायविष्णुस्त्वानयतु ॥ ४ ॥ ॐ पंचपशुभ्योविष्णुस्त्वानयतु ॥ ५ ॥ ॐ षड्ऋतुभ्योविष्णुस्त्वानयतु ॥ ६ ॥ ॐ सखे सप्तपदा भव सामामनुव्रता भव विष्णुस्त्वानयतु ॥ ७ ॥

॥ कन्या प्रतिज्ञा ॥ :X:

त्वत्तो मेऽखिलसौभाग्य पुण्यैस्त्वं विविधैः कृतैः ॥
देवैः संपादितो मह्यं वधूराद्य पदेऽब्रवीत् ॥ १ ॥
कुटुंबं पालयिष्यामि ह्यावृद्धबालकादिकम् ॥
यथालब्धेन संतुष्टा ब्रूते कन्या द्वितीयके ॥ २ ॥
मिष्टान्नव्यञ्जनादीनि काले संपादये तव ॥
आज्ञासंपादिनी नित्यं तृतीये साऽब्रवद्वरम् ॥ ३ ॥

॥ कन्या प्रतिज्ञा ॥ :X:

तुमहि मेरा अखिल सुहाग हो, तुम्हिं मेरा पुण्य सुपुंज हो ।
दैव ने मुझको तुझको दिया, वधु बनी तव चरणागत रहूं ॥१॥
पालती रहूंगी स्व-कुटुम्ब को जब तलक वृद्धायु न आ डटे ।
बन रहूँ सन्तोषि तव आय पर, द्वि-फेरे में यह प्रण ले रही ।२॥
मधुर व्यजन जो तुम दे सको, नहीं मेरा मोद प्रमोद हो ।
मम गति तव आशावत् रहे, सुन्दरता मेरी तव सुखद हो ॥ ३ ॥

शुचिः शृङ्गारभूषाऽहं वाङ्मनःकायकर्मभिः ॥
क्रीडिष्यामि त्वया सार्धं तुरीये साऽब्रवीदिदम् ॥ ४ ॥
दुःखे धीरा सुखे हृष्टा सुखदुःखविभागिनी ॥
नाहं परनरं गच्छे पञ्चमे साऽब्रवीत्पतिम् ॥ ५ ॥
सुखेन सर्वकर्माणि करिष्यामि गृहे तव ॥
सेवां श्वशुरयोश्चापि बन्धूनां सत्कृतं तथा ॥
यत्र त्वं वा ह्यहं तत्र नाहं वञ्चे प्रियं क्वचित् ॥
नाहं प्रियेण वञ्चयाऽस्मि कन्या षष्ठे पदेऽब्रवीत् ॥ ६ ॥
होमयज्ञादिकार्येषु भवामि च सहायकृत् ॥
धर्मार्थकामकार्येषु मनोवृत्तानुसारिणी ॥
सर्वे च साक्षिणस्त्वं मे पतिभूतोऽसि सांप्रतम् ॥
देहो मयाऽर्पितस्तुभ्यं सप्तमे साऽब्रवीद्वरम् ॥ ७ ॥

वसन, भूषण, कार्य सदैव ही, विचरण तव इच्छायुत रहे।
सम समुद्भव हो तेरे लिये, चतुर्थ फेरे में प्रणवति बनी ॥ ४ ॥
विपद धीरज, गर्व न सुख लहुँ, हूँ तुम्हारी सुख दुख भागिनी ॥
पर पुरुष सपन हुँ देखूं नहीं, सुखद कार्य सभी मेरे रहें ॥ ५ ॥
ससुर की सेवा करती रहुं, परिजनों की बन परचायिका,
सुकृत तव हित हों मेरे सभी, दृढ़, प्रतिज्ञा है मेरी यही ॥ ६ ॥
जहाँ तुम हो वहाँ मैं हूँ बसी, यज्ञ हवनादि शुभ कार्य में ।
अर्धअंगिनी बन सहयोगिनी, धर्म अर्थ अरु काम प्रवृत्तिनी ॥
तुम्हहि में अपना सब देयकर, तुम्हहि में सर्वस अर्पित करुँ ।
वर-वधु वचनावद्ध हो रहे, ग्रहण कर कर में कर ले लिया ॥ ७ ॥

❋ वर कामना ❋

मदीयचित्तानुगतं च चित्तं, सदा मदाज्ञापरिपालनं च ।
पतिव्रता धर्मपरायणा त्वं, कुर्या सदा सर्वमिमं प्रयत्नम् ॥

प्रेम्णा त्वां पालयिष्यामि, निश्चिन्ता भव सर्वथा ।
सुखे दुःखे सदा नूनं वसिष्यामि त्वया सह ॥ २ ॥
वस्त्रभूषादिके कार्ये, स्वातन्त्र्यं ते भविष्यति ।
त्वदिच्छानुसृतिः कार्या, मया वै न्यायसंगिता ॥ ३ ॥
न इच्छामि पर स्त्रीं तु न भक्ष्याभक्ष्य भोजनम् ।
स्नेहेन पालयिष्यामि, परित्यक्त्वा कदापि न ॥ ४ ॥
त्यक्त्वा त्वां करिष्यामि, यज्ञादिकं कदापि न ।
तीर्थे देशाटने प्रेम्णा, चलिष्येऽहं त्वया सह ॥ ५ ॥
उद्यानादि विहारौ वै, करिष्याव उभौ सह ।
भोजनादिष्वपि चैव, त्वद्रुचिर्हि चलिष्यति ॥ ६ ॥
वामाङ्गे ते परित्यागः, करिष्यामि कदापि न ।
आशासे वै सदा मे तु, भवतात् सुखदायिनी ॥ ७ ॥

❋ वर कामना ❋

सुमुखि ! तुम अपने उर में सदा, मम स्वरूप विलोकित कीजिये ।
औ, सदा पालन करती रहो, नित बनी रह आज्ञाकारिणी ॥
पति व्रता बन कर सहचारिणी, धर्म के पथ पर चलती रहो ।
जो सुखद कृत हों मुझको सदा, तुम वही भर सक करती रहो ॥

पश्चात् विनियोग करें।

शिवा आपः इति मंत्रस्य प्रजापतिर्ऋषिर्लिंगोक्तादेवता सुप्रतिष्ठा छन्दः ॥ आपोहिष्ठेति तिसृणां सिंधुद्वीपऋषिर्गायत्रीछन्द आपोदेवता मूर्द्धाभिषेके विनियोगः ॥

पश्चात् वर पूजित कलश के जल से प्रथम मंत्र से पत्नी का अभिषेक करे। और शेष मंत्रों से स्वयं को छींटे लगावे।

ॐ आपः शिवाः शिवतमाः शांता शांततमास्तास्ते कृण्वन्तुभेषजम् ॥ १ ॥
ओम् आपोहिष्ठा मयोभुवस्तानऽऊर्ज्जेदधातन। महेरणाय चक्षसे ॥२॥
ओम् योवः शिवः तमोरसस्तस्यभाजयते हनः। उशतीरिवमातरः ॥ ३ ॥
ओम तस्माऽअरङ्गमामवो यस्यक्षयायाजिन्वथ। आपोजन यथा चन ॥४॥

पश्चात् वर वधु को ध्रुव तारा दिखावे।

ओम ध्रुवमसि ध्रुवं त्वा पश्यामि। ध्रुवधिपोष्ये मयि मह्यं त्वादाद् बृहस्पतिर्मया पत्या प्रजापती संजीव शरदं शतम् ॥

पश्चात् वर अपना दाहिना हाथ वधु के हृदय पर रखे।

ॐ मम व्रते ते हृदय दधामि। मम चित्तमनुचित्तं ते अस्तु। मम वाचमेकमना जुषस्व। प्रजापतिष्ट्वा नियुनक्तु मह्यं।

पश्चात् वर अपना दहिना हाथ वधु के सिर पर रखे।

ॐ सुमंगलीरियं वधूरिमा ँ समेत पश्यत।
सौभाग्यमस्यै दत्वा याथास्तं विपरेतन ॥

१६. पूर्णाहुतिः—

सर्व प्रथम घृताहुति दें। शेष भाग प्रोक्षणी पात्र में डालें।

ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा। इदमग्नये स्विष्टकृते न मम ॥

पश्चात् संश्रव प्राशन कर ब्रह्मा को पूर्ण पात्र दान हेतु संकल्प करें।

कृतस्यैतस्य वैवाहिक होमस्य सांगतासिद्धयर्थं कृताकृत वेक्षण ब्रह्म कर्मणः प्रतिष्ठार्थं इदं पूर्णपात्रं प्रजापति दैवतं अमुक गोत्राय अमुक शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।

पश्चात् ब्रह्मा की गांठ खोल दें और प्रणीता पात्र से छींटे लगावें।

ॐ सुमित्रियान ऽआप ऽओषधयः सन्तु।

पश्चात् प्रणीता पात्र को ईशान कोण में उल्टा कर दें।

ॐ दुर्मित्रियास्तस्मैसन्तुयो ऽस्मान्द्वेष्टियंचवयंद्विष्मः।

पश्चात् परस्तरण घृत में डुबोकर अग्नि में डाल दें।

ॐ देवागातु विदोगातु वित्वागातुमित। मनसस्पत ऽइम देव ः स्वाहा वातेधाः स्वाहा।

पश्चात् पूर्णाहुति दें।

ओम् मूर्द्धान दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृतआजातमग्निं कवि ँ सम्राजमतिथिंजनानामासन्ना पात्र जनयन्तदेवाः स्वाहा॥

पश्चात् निम्न रूप से भस्म से तिलक दें।

ओम् त्र्यायुषं जमदग्ने (ललाट), कश्यपस्य त्र्यायुषम् (ग्रीवा) यद्देवेषु त्र्यायुषम (भुजा) तन्नो अस्तु त्र्यायुषम् (हृदय)।

पश्चात् वर-वधू दक्षिणा व नारियल अग्नि के समीप दक्षिणा के रूप में रखें।

श्रद्धां मेधां यशः प्रज्ञां विद्यां बुद्धि बलं श्रियम्।
आयुष्यं तेज आरोग्यं, देहि मे हव्यवाहन॥

पश्चात् आचार्य वर-वधू को आशीर्वाद देवे ।

सदा शुभं भूयात् । दम्पत्योरविच्छिन्ना प्रीतिरस्तु । वंशाभिवृद्धिरस्तु । आयुष्मन्तौ लक्ष्मीवन्तौ पुत्रवन्तौ भवेताम् ।

पश्चात् वर संकल्प करें ।

अस्य विवाह होमकृतस्य विधेर्यन्न्यूनातिरिक्त तत्सर्वं भवतां ब्राह्मणानां वचनात् श्रीयज्ञदेव प्रसादात् सर्वं विधेः परिपूर्णमस्तु ॥इति॥

१६. पालिता प्रतिपालिता–

नोटः– विवाह के उपरान्त कन्या पिता वर पिता से कन्या के पालने की प्रार्थना करे और वर पिता पालने की प्रतिज्ञा करता है उसे 'पालिता प्रतिपालिता' कहते है ।

सर्व प्रथम गोत्रोच्चारण (पृष्ठ-७५) से करें । पश्चात् कन्या पिता कर बद्ध होकर वर पिता से प्रार्थना करे ।

एतावत्वर्ष पर्यन्तं, पुत्रवत् पालिता मया ।
इदानीं तव पुत्राय, दत्ता स्नेहेन पालिता ॥ १ ॥
गृह सरक्षणार्थं तु, मया दत्ता सदा तव ।
आशास्यते भवाद्भिश्च, स्नेहेन प्रतिपालिता ॥ २ ॥

पश्चात् वर पिता उत्तर देवे ।

धन्याः वैवाहिकाः सन्तु, कन्या दत्ता सुलक्षिणी ।
कुलवृद्धि करेयं तु, सुख सौभाग्यकांक्षिणी ॥ १ ॥
सुखवृद्धि करा येषा, स्नेह सिक्ता सदा मम ।
विप्र साक्ष्यं प्रतिज्ञाऽस्तु, स्नेहेन प्रतिपालिता ॥ २ ॥

२० चतुर्थी कर्मः—

सर्व प्रथम आचमन व प्राणायाम कर संकल्प करें।

अद्येत्यादि० मम अस्याः पत्न्याः भार्यात्व सिद्धयर्थं चतुर्थी कर्म करिष्ये ॥१॥ तदंगत्वेन गणपति पूजन ब्रह्मादि वरण दिग्ररक्षणं पंचगव्य करणं अग्निस्थापनं च करिष्ये।

पश्चात् वरुण पूजन (पृष्ठ–४), गणपति पूजन (पृष्ठ–५) और अग्निस्थापन व कुशकंडिका (पृष्ठ- २५ और ३०) से करें। पश्चात् वधु दुध व चावल का खीर स्थापित अग्नि पर बनावें। तदनन्तर घृत से आहुति दें। शेष भाग प्रोक्षणी पात्र में डालें।

ॐ प्रजापये स्वाहा इदं प्रजापतये न मम ॥ १ ॥ ॐ इन्द्राय स्वाहा इद इन्द्राय न मम ॥ २ ॥ ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय न मम ॥ ३ ॥ ॐ अग्नये स्वाहा इदं अग्नये न मम ॥ ४ ॥ ॐ अग्नेप्रायश्चित्तेत्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा नाथ काम उपधावामि यास्यै पतिघ्नी तनूस्तामस्यै नाशय स्वाहा। इदमग्नये न मम ॥ ५ ॥ ॐ वायो प्रायश्चित्तेत्व देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा नाथ काम उपधावामि यास्यंप्रतिघ्नी तनूस्तामस्यै नाशय स्वाहा। इद वायवे न मम ॥ ६ ॥ ॐ सूर्य०..........:❀: इदं सूर्याय न मम ॥ ७ ॥ ॐ चन्द्र०..........:❀:इद चन्द्रमसे न मम ॥ ८ ॥ ॐ गंधर्व०..........:❀: गधर्वाय न मम ॥ ९ ॥

पश्चात् स्थाली पाक (खीर) से आहुति दें।

ॐ प्रजापये स्वाहा इद प्रजापतये न मम ॥ १ ॥ ॐ अग्नयेस्विष्टकृते स्वाहा इद अग्नये स्विष्ट कृते न मम ॥ २ ॥

❀ मन्त्र क्रमांक ६ के रेखांकित पंक्ति की पुनरावृत्ति करें।

पश्चात् घृत से आहुति दें। शेष भाग प्रोक्षणी पात्र में डालें।

नवाहुतयः॥ ॐ भूः स्वाहा इदं अग्नये न मम ॥१॥ ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे न मम ॥ २ ॥ ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय न मम ॥ ३ ॥ ॐ त्वन्नोऽ अग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडोऽअवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वन्हितमः शोशुचानो विश्वाद्वेषा ँ सि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा ॥ इदं अग्नि वरुणाभ्यां न मम ॥ ४ ॥ ॐ सत्वन्नोऽ अग्ने ऽवमो भवोतिने दिष्टोऽअस्याऽ उषसो व्युष्टौ। अवयक्ष्वनो वरुण ँ रराणोवीहिमृडीक ँ सुहवोनऽएधि स्वाहा ॥ इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम ॥ ५ ॥ ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्व ममाऽअसि। अयानो यज्ञं वहस्य यानो धेहि भेषज ँ स्वाहा इद अग्नये अयसे न मम ॥ ६ ॥ ॐ ये ते शतं वरुणये सहस्रं यज्ञियाः पाशा विततामहान्तः तेभिर्नोऽअद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्का स्वाहा ॥ इद वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम ॥ ७ ॥ ॐ उदुत्तमं वरुणं पाशमस्मदवाधमंविमध्यम ँ श्रथाय। अथावयमादित्य व्रतेतवानागसोऽअदितयेस्याम स्वाहा ॥ इदं वरुणाय न मम ॥ ८ ॥ ॐ प्रजापतये स्वाहा इद प्रजापतये न मम ॥९॥

पश्चात् संश्रव प्राशन कर ब्रह्मा को पूर्ण पात्र दान करें। फिर ब्रह्मा की गांठ खोल दें और प्रणीता पात्र से छींटे लगावें।

ॐ सुमित्रियानऽआपऽओषधयः सन्तु ॥

पश्चात् प्रणीता पात्र को ईशान कोण में उल्टा कर दें।

ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु यो ऽस्मान्द्वेष्टि यञ्चवयं द्विष्म ॥

पश्चात् परस्तरण घृत में डुबोकर अग्नि में डाल दें।

ॐ देवागातु विदोगातु त्विवागातुमित। मन सस्पत इमं यज्ञँ स्वाहावातेधाः स्वाहा॥

पश्चात् प्रणीता पात्र का जो पानी भूमि पर गिरा है, उ जल से वर, वधु का अभिषेक करे।

ॐ यातेपतिघ्नी प्रजाघ्नी पशुघ्नी गृहघ्नी निन्दितातनूर्जारघ्नं तएनांकरोमि साजीर्य त्व मया सहासुकिदेवि॥

पश्चात् पति-पत्नी स्थाली पाक (खीर) एक दूसरे व खिलावें।

ॐ प्राणैस्ते प्राणान्संदधाम्यस्थिभिरस्थीनिमाँ सैर्माँ सां त्वचा त्वचम्॥

पश्चात् पूर्णाहुति दें।

ॐ मूर्द्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानर मृत आजातमग्नि कविँ सम्राजमतिथिंजनानामासन्नापात्रं जनयंत देवाः स्वाहा॥

पश्चात् निम्न रूप से भस्म का तिलक दें।

ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः (ललाट), कश्यपस्य त्र्यायुषम् (ग्रीवा), यद्दे षु त्र्यायुषम् (भुजा), तन्नो अस्तु त्र्यायुषम् (हृदय)॥

पश्चात् ब्राह्मण दक्षिणा व ब्राह्मण भोजन का संकल्प करें।

॥ इति संस्कार प्रदीपे द्वितीयं प्रकरणं समाप्तम्॥

॥ अथ संस्कार प्रदीपस्य तृतीयः प्रकरणः प्रारम्भः ॥

१. मूलादि नक्षत्र शान्ति प्रयोगः-

सर्व प्रथम आचमन व प्राणायाम कर संकल्प करें।

अद्येत्यादौ० ममास्य बालकस्य कुमार्या वा मूलज्येष्ठाश्लेषामघा चरणादि जनन सूचित सर्वारिष्ट विनाशार्थं शुभफल प्राप्त्यर्थं श्रीपरमेश्वर प्रीत्यर्थं सनवग्रहमखां मूलज्येष्ठाश्लेषामघा जनन शान्तिं करिष्ये ॥ १ ॥ तदङ्गभूत गणपति पूजनं पुण्याहवाचनं मातृका पूजनं वसोर्द्धारां नान्दीश्राद्धं ब्राह्मणवरणं पंचगव्यकरणं भूमिपूजनमग्निस्थापनं च करिष्ये ॥ २ ॥

पश्चात् गणपति पूजन से नान्दी श्राद्ध तक सम्पूर्ण क्रिया करने के उपरान्त अग्नि के पूर्व में पांच कलश स्थापित करें। कलश स्थापन की विधि स्वतिपुण्याह वाचन के अन्तर्गत दी गई है। मध्य कलश पर स्वर्णमयी रुद्र की मूर्ति स्थापित करें। और उनका षोडषोपचार पूजन करें।

पश्चात् २७ नक्षत्रों का आव्हान व पूजन करें।

मूलनक्षत्राधिष्ठित निऋते इहा गच्छ इह तिष्ठ ॥ १ ॥ ज्येष्ठाधिष्ठित इन्द्र इहा० ॥२॥ पूर्वाषाढाधिष्ठित वरुण इहा० ॥३॥ उत्तराषाढाधिष्ठित विश्वेदेवा इहा० ॥ ४ ॥ श्रवणाधिष्ठित विष्णो इहा० ॥ ५ ॥ धनिष्ठाधिष्ठिता अष्ट वसवः इहा० ॥ ६ ॥ शतभिषाधिष्ठित वरुण इहा० ॥ ७ ॥ पूर्वाभाद्रपदाधिष्ठित अजैकपाद् इहा० ॥ ८ ॥ उत्तराभाद्रपदाधिष्ठित अहिर्बुध्न्य इहा० ॥ ९ ॥ रेवत्येधिष्ठित पूषन् इहा० ॥ १० ॥

अश्वन्यधिष्ठित अश्विनौ इहा० ॥ ११ ॥ भरण्यधिष्ठित यम इ
॥ १२ ॥ कृतिकाधिष्ठित अग्ने इहा० ॥ १३ ॥ रोहिण्यधिष्ठित प्रजा
इहा० ॥ १४ ॥ मृगशीर्षाधिष्ठित सोम इहा० ॥ १५ ॥ आर्द्राधिष्ठित
इहा० ॥ १६ ॥ पुनवर्स्वधिष्ठित अदिते इहा० ॥ १७ ॥ पुष्याधि
बृहस्पते इहा० ॥ १८ ॥ आश्लेषाधिष्ठित सर्प इहा० ॥ १६ ॥ मघाधि
पितरः इहा० ॥ २० ॥ पूर्वाफाल्गुन्याधिष्ठित भग इहा० ॥ २१ ॥ उत्त
फाल्गुन्याधिष्ठत अर्यमन्निहा इहा० ॥ २२ ॥ हस्ताधिष्ठित सूर्य इहा
॥ २३ ॥ चित्राधिष्ठित त्वष्टः इहा० ॥ २४ ॥ स्वात्याधिष्ठत वायो इहा
॥ २५ ॥ विशाखाधिष्ठतौ इद्राग्नी इहा० ॥ २६ ॥ अनुराधाधिष्ठत मि
इहा गच्छ इह तिष्ठ ॥ २७ ॥

पश्चात् नवग्रह पूजन, दशादिग्पाल आव्हान व अग्नि स्थापन कर पूर्वांग में वर्णित समस्त होम कर्म करने के उपरान्त निम्न नाम मंत्रों से होम करें।

निऋतये स्वाहा (१०८ वार)। इन्द्राय स्वाहा (२८)। वरुणाय स्वाहा (२८), विश्वेभ्ये देवेभ्यः (८)। विष्णवे०। वसुभ्यः। वरुणाय। अजैकपादाय। अहिबुर्धनाय। पूष्णे। अश्विभ्यां। यमाय। अग्नये। प्रजापतये। सोमाय। रुद्राय। अदितये। बृहस्पतये। सर्पाय। पितृभ्यः। भगाय। अर्यम्णे। सवित्रे। त्वष्टे। वायवे। इन्द्राग्निभ्यां। मित्राय।

पश्चात् पायस (खीर) में तिल डालकर निम्न नाम मंत्रों से ८-८ वार होम करें।

निऋतये। सवित्रे। दुर्गायै। वास्तोस्पतये। अग्नये। क्षेत्राधिपतये। मित्रावरुणाभ्यां। अग्नये। चरु होम-श्रियै स्वाहा। पायस होम-सोमाय स्वाहा। घृताहुति- रुद्राय स्वाहा।

पश्चात् पूर्वांग के अनुसार पूर्णाहुति आदि कार्य करें। तदनन्तर २७ कूप के जल में २७ प्रकार की औषधियां डालकर उसे १०० छिद्रों के कुंभ में डालकर माता-पिता सहित बालक का अभिषेक करें।

ॐ आपोहिष्ठा मयोभुवस्तान ऊर्जेदधातन। महेरणाय चक्षसे ॥ १ ॥ योवः शिवः तमो रसः तस्यभाजयते हनः। उशतीरिवमातरः॥ २ ॥ तस्मा अरंग मामवो यस्य क्षयाय जिन्वथ आपोजन यथा च न ॥ ३ ॥ यो ऽसौ वज्रधरो देवो महेन्द्रो गजवाहनः। मूल :×: जात शिशोर्दोषं माता पित्रोर्व्यपोहतु ॥ ४ ॥ सुरास्त्वामभिषिचन्तु ब्रह्मविष्णु महेश्वराः। वासुदेवो जगन्नाथस्तथा संकर्षणो प्रभु ॥ ५ ॥ यन्ते केशपुर्दौर्भाग्यं सीमन्ते यच्च मूर्धनि। ललाटे कर्णयो रक्ष्णोरापो निघ्नतु ते सदा ॥ ६ ॥

पश्चात घृतपूर्ण कांस्य पात्र में स्वर्ण डालकर माता-पिता बालक अपना मुख उसमें देखें और वह पात्र ब्राह्मण को दान में दे दें। पश्चात् देवताओं का विसर्जन कर ब्राह्मण भोजन करावें ॥ इति ॥

२. कूष्मांडी होम:—

नोट:—किसी भी विवाहादि शुभ कार्य में अशौचादि कोई विघ्न होने पर "कूष्मांडी होम" किया जाय।

सर्व प्रथम सपत्नीक यजमान आचमन व प्राणायाम कर संकल्प करे।

:×: "मूल" शब्द के स्थान पर जिस नक्षत्र की शान्ति करनी हो वह शब्द प्रयोग करें यथा— ज्येष्ठा, आश्लेषा, मघा, आदि।

देशकालौ स्मृत्वा० अस्य संस्कारस्य सन्निहित मूहुर्तं तरा लाभ द्यति संकटवेशनाशौच मध्ये ऽमुक सस्कार कर्मणाधिकार सिद्धयर्थ प्राय श्चितीभूत कूष्मांडी होमं गोदानं पंचगव्यप्राशनं च करिष्ये ॥ १। तत्रादौ विघ्नविनाशार्थं गणपति पूजनं करिष्ये ॥ २ ॥

पश्चात् गणपति पूजन (पृष्ठ-५) और अग्नि स्थापन व कुशकंडिका (पृष्ठ-२५ व ३०) से करें। तदन्तर घृताहुति दें।

ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये न मम ॥ १ ॥ ॐ इन्द्राय० । २ ॥ ॐ अग्नये० ॥ ३ ॥ ॐ सोमाय० ॥ ४ ॥ ॐ यद्देवादेवहेडनं देवासश्चकृमा वयम्। अग्निर्मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्व ँ हसः स्वाहा। इदं अग्नये न मम ॥५॥ ॐयदि दिवा यदि नक्तमेना ँ सिचकृमा वयम्। वायुर्मातस्मादेनसो विश्वान्मुञ्च त्व ँ हसः स्वाहा। इद वायवे न मम ॥ ६ ॥ ॐ यदि जाग्रद्यदिस्वप्न ऽएना ँ सि चकृमा वयम्। सूर्यो मातस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्व ँ हसः स्वाहा इद सूर्याय न मम ॥ ७ ॥

पश्चात नवाहुति (पृष्ठ-८८) के मंत्रों से होम करें।

पश्चात् संश्रव प्राशन आदि कर होम कर्म पूर्ण करने के उपरान्त गोदान का संकल्प करें।

देशकालौ स्मृत्वा० इमां यथा शक्त्यालंकृतां पयस्विनीं गामाशौचदोष निरसन पूर्वक प्राप्तकर्मकरणाधिकारार्थं अमुक गोत्राय अमुक शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥ १ ॥ गोदान प्रतिष्ठा सिद्धयर्थं मिमां यथा शक्ति दक्षिणां तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥ २ ॥

पश्चात् गाय की प्रार्थना करे।

गवामंगुषु तिष्ठन्ति भुवनानि चतुर्दश।
यस्मात्तस्माच्छिवमेस्यादिह लोके परत्र च ॥

पश्चात् पंचगव्य का प्राशन करें।

यत्त्वगस्थित पापं देहे तिष्ठति मामके।

प्राशानात्पञ्चगव्यस्य दहत्यग्निरिवेंधनम् ॥

पश्चात् यथा शक्ति ब्राह्मण भोजन का संकल्प करें ॥इति॥

३. श्री शान्तिः—

(नोटः— किसी भी संस्कार कार्य में यजमान पत्नी और विवाह संस्कार में कन्या के रजस्वला होने पर "श्री शान्ति" की जाय)

सर्व प्रथम यजमान आचमन व प्राणायाम कर संकल्प करें।

अद्येत्यादि० अस्य संस्कारमध्ये अस्मत्पत्न्या (कन्यायाः) रजोत्पन्न सकल दोष निबर्हण सकलारिष्ठ शान्त्यर्थं श्री शान्ति करिष्ये ॥ १ ॥

तत्रादौ विघ्नविनाशार्थं गणपति पूजनं करिष्ये ॥ २ ॥

पश्चात् गणपति पूजन आदि क्रिया करने के उपरान्त चावल के स्थंडिल पर कलश स्थापना (पृष्ठ-९) से करें। पश्चात् 'श्री' की मूर्ति की प्रतिष्ठा कर उस पर विराजमान् करें। तदनन्तर "श्रीसूक्त" से "श्री" की मूर्ति का पूजन करें।

(१) आव्हानः— ॐ हिरण्य वर्णां हरिणीं सुवर्ण रजत स्रजां।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो ममावह ॥

(२) आसनः— तांमआवहजातवेदोलक्ष्मीमपलगामिनी।
यस्यां हिरण्य विदेयं गामश्वं पुरुषानहं ॥

(३) पाद्यः— अश्वपूर्णां रथमध्यां हस्तिनाद प्रमोदिनी।
श्रियंदेवीमुपह्वये श्रीर्मादेवीर्जुषताम् ॥

(४) अर्घ्यः- कांसोस्मितां हिरण्यप्राकारामाद्रांज्वलंतीतृप्तां यंती । पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहो पह्वये श्रियं ॥

(५) आचमनः- चन्द्रांप्रभासांयशसाज्वलंतीं श्रियं लोकेदेव उ सुदारां तां पद्मनेमीं शरणमहं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मेनश्यतां त्वां वृणोमि

पश्चात् पंचामृत स्नान करावें ।

(६) स्नानः- आदित्यवर्णे तपसोधि जातो वनस्पति स्तववृक्ष बिल्वः । तस्य फलानि तपसानुदंतु मायांतरायश्च बाह्या अलक्ष्मीः ॥

(७) वस्त्रः- उपैतु मां देव सखः कितिश्च मणिना सह ।
प्रादुर्भूतो सुराष्ट्रेस्मिन् कीर्तिं वृद्धिं ददातुमे ॥

(८) अलंकारः- क्षुत्पिपासामला ज्येष्ठा अलक्ष्मीर्नाशयाम्यहं ।
अभूति समृद्धिं च सर्वानिर्णुदमे गृहात् ॥

(९) गन्धः- गन्ध द्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणी ।
ईश्वरीं सर्व भूतानां तामिहोपह्वये श्रियं ॥

(१०) पुष्पः- मनसः काम आकूतिं वाचः सत्य मशीमहि ।
पशूनां रूपमन्यस्य मयि श्री श्रियतां यशः ॥

(११) धूपः- कर्दमेनप्रजाभूता मयिसंभ्रममर्दम ।
श्रियं वासयमे कुले मातरं पद्म मालिनीं ॥

(१२) दीपः- आपः सृजंतुस्निग्धा निचिक्लीतवसमेगृहे ।
निचदेवीं मातरं श्रियं वासयमे कुले ॥

(१३ नैवेद्यः- आर्द्रां पुष्करिणीं सुवर्णां हेममालिनी ।
सूर्यां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो ममावह ॥

पश्चात् आचमन, फल और दक्षिणा प्रदान करें ।

(१४) नमस्कार:- आर्द्रां यः करिणीयष्टीं पिंगलां पद्ममालिनी ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो ममावह ॥

(१५) प्रदक्षिणा:- तांमआवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीं ।
यस्यां हिरण्य प्रभूति गावोदास्योश्वान्विदेय पुरुषानहं ॥

(१६) आरती:- श्रियेजातःश्रिय आनिरियायश्रियंवयोजरितृभ्यो दधाति । श्रियं वसाना अमृतत्व मायन्भवति सत्यारुमिधामितद्रौ ॥

पश्चात् श्रीश्चते० मंत्र से पुष्पांजलि देकर संकल्प करें ।

अनया पूजया भगवती श्री प्रियतां न मम ॥

पश्चात् अग्नि स्थापन व कुशकंडिका (पृष्ठ २५व३०) से र निम्न घृताहुति दें ।

ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये न मम ॥ १ ॥ ॐ इन्द्राय० । २ ॥ ॐ अग्नये० ॥ ३ ॥ ॐ सोमाय० ॥ ४ ॥

पश्चात् पायस चरु से "श्री सुक्त" (ऊपर दिये गये षोड-षोपचार पूजन के मंत्र) से होम करें फिर घृताहुति से नवाहुति (पृष्ठ-८८) से होम करें । पश्चात् संश्रव प्राशन आदि कर होम समाप्ति की क्रिया करें ।

तदनन्तर आचार्य पूजित कलश से यजमान का अभिषेक करें फिर यजमान आचार्य का पूजन कर कलश सहित स्वर्णमयीं "श्री" प्रतिमा ब्राह्मण को दान दें एवम् ब्राह्मण भोजन करने का संकल्प करें ॥ इति ॥

४. वैधव्य हर विष्णु प्रतिमा दानः-

सर्व प्रथम कन्या आचमन व प्राणायाम कर संकल्प करे।

देशकालौ संकीर्त्य० वैधव्य हरं महाविष्णु प्रतिमादान करिष्ये ॥ १ ॥ तदंगत्वेन गणपति पूजनं च करिष्ये ॥ २ ॥

पश्चात् गणपति का पूजन (पृष्ठ-५) से करने के उपरान्त स्वर्णमयी विष्णु प्रतिमा का पुरुष सूक्त से षोडशोपचार पूजन करें। पश्चात् प्रतिमा हाथ में लेकर निम्न मंत्रों द्वारा प्रतिमा ब्राह्मण को दान करें

यन्मयाप्राचजनुषिघ्नंत्यापतिसमागतम्।
विषोपविष शस्त्राद्यैर्हतोवाति विरक्ताय ॥ १ ॥
प्राप्य मानं महा घोरं यशः सौख्य धनादहम्।
वैधव्याद्यति दुःखौ घनाशाय शुभ लब्धये ॥ २ ॥
बहु सौभाग्य लब्धयै च महाविष्णोरिमां तनुं।
सौवर्णी निर्मितां शक्त्या तुभ्यं सम्प्रददे द्विज ॥ ३ ॥

इमां सोपस्करां विष्णुप्रतिमां ममवैधव्य नाशार्थं तुभ्यमहं सम्प्रददे।

पश्चात् ब्राह्मण भोजन का संकल्प करें।

५. वैधव्य हर कुम्भविवाह

पश्चात् कन्या के माता पिता आचमन व प्राणायाम कर संकल्प करें।

देशकालौ संकीर्त्य० कन्या वैधव्य हरं कुम्भ विवाह करिष्ये ॥१॥ तत्रादौ विघ्नविनाशार्थं गणपति पूजन स्वति पुण्याह वाचन मातृ का पूजन अभ्युदय श्राद्ध च करिष्ये ॥ २ ॥

पश्चात् गणपति पूजन पृष्ट-५ से करने के उपरान्त कलश की स्थापना करें। कलश स्थापना के बाद विष्णु प्रतिमा का षोडषोपचार पूजन कर वह प्रतिमा कलश पर विराजमान् करें। अन्त में प्रार्थना करें।

वरुणांग स्वरूपाय, जीवनानां समाश्रय।
पतिं जीवय कन्यायाश्चिरं पुत्र सुखं कुरू ॥ १ ॥
देहि विष्णो वरं देव कन्यां पालय दुःखित।

पश्चात् संकल्प करें।

अद्येत्यादि० अहं विष्णुरूपिणे कुंभायेमां कन्यां श्री रूपिणीं समर्पयामि।

पश्चात् निम्न मंत्र से विष्णु प्रतिमा और कन्या के सूत्र से परिवेष्टन करें।

ॐ परित्वागिर्व्वणो गिर इमा भवन्तु विश्वतः। वृद्धायु मनु वृद्धयो जुष्टा भवन्तु जुष्टयः ॥

पश्चात् उस कुम्भ को किसी तालाब पर जाकर तोड़ दें। तदनन्तर आचार्य शुद्ध जल से कन्या का अभिषेक करें।

ॐ पञ्चनद्यः सरस्वती मपियन्ति सस्रोतसः। सरस्वती तु पञ्चदासौ देशे भवत्सरित् ॥

पश्चात् कन्या स्नानादि कर नवीन वस्त्र धारण करे व ब्राह्मण भोजन करावें।

६. गृहवास्तु पूजन (संक्षिप्त) :-

सर्व प्रथम आचमन व प्राणायाम कर संकल्प करें।

अद्येत्यादि० मम सर्वापच्छान्ति पूर्वकं दीर्घायुर्विपुलधनधान्य

पुत्रपौत्राद्यविच्छिन्नसन्ततिवृद्धिस्थिरलक्ष्मीकीर्तिलाभ शत्रुपराजयसदभी॰ सिद्धयर्थं सुवर्णरजतताम्रत्रपुसीसककांस्यलोहपाषाणाद्यष्टशल्यभेदिनीदो॰ यन्ययाद्यन्यथाभवनदोष परिहारार्थं नानाविधिजीवहिंसादि जन्यसक॰ दोषपरिहार पूर्वक सर्वारिष्टोपशान्त्यर्थं अस्मिन्गृहे चिरकाल निवासार्थं श्री परमेश्वर प्रीतये सग्रहमखां शालाकर्मपूर्तिकां वास्तुशान्ति करिष्ये॥१॥ तदङ्गतयादिग्रक्षणं कलश पूजनं कलशाराधनं गणपति पूजनं पुण्याह वाचनं मातृका पूजनं वसोर्द्धारायुष्य मन्त्र जपं नान्दीश्राद्धं ब्रह्माचार्य ऋत्विग्वरुणाम् च करिष्ये ॥ २ ॥

पश्चात् उक्त सम्पूर्ण क्रिया करने के उपरान्त शाला कर्म करें। शाला के मध्य हवन वेदी स्थापित कर शतमंगल नाम्नि अग्नि स्थापित करें। तदनन्तर श्वेतवस्त्र पर चावल से ८१ स्थंडिल बनाकर अग्नेय आदि चारों कोण पर ४ कीलें गाढ़ दें।

विशान्तु भूतले नागा लोकपालश्च सर्वतः।
अस्मिन् गृहे ऽवतिष्ठन्तामायुर्बलकराःसदा॥

फिर उक्त मंत्र से ही चारों कीलों को दुगने सूत्र से वेष्टन करें। पश्चात् आग्नेय आदि कोण पर बलिदान करें।

अग्निभ्योऽप्यथ सर्पेभ्यो ये चान्ये तान् समाश्रिताः। वर्जितेभ्यः प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तमं॥ अग्नये इमं बलिं समर्पयामि ॥ १ ॥ नैऋत्याधिपतिश्चैव नैऋत्यां ये च राक्षसाः। बलि॰॥ २ ॥ नमो वै वायु रक्षोभ्यो ये चान्ये तान् समाश्रिताः। बलि॰ ॥ ३ ॥ रुद्रेभ्यश्चैव सर्पेभ्यो ये चान्ये तान् समाश्रितः। बलि॰। ईशानाय बलिं समर्पयामि ॥ ४ ॥

पश्चात् पूर्व-पश्चिम की १० रेखाओं का पूजन करें।

शान्तायै नमः। यशोवत्यै। कान्त्यै। विशालायै। प्राणवाहिन्यै सत्यै। सुमत्यै। नन्दायै। सुभद्रायै। सुरथायै।

पश्चात् दक्षिण-उत्तर की १० रेखाओं का पूजन करें।

हिरण्यायै । सुव्रतायै । लक्ष्म्यै । विभूत्यै । विमलायै । प्रियायै । जयायै । ज्वालायै । विशोकायै । इंडायै ।

पश्चात् "मनोजूति०" मंत्र से प्रतिष्ठा पूर्वक पूजन कर नमस्कार करें । "रेखा देवताभ्यो नमः ॥"

पश्चात् ८१ वास्तु मंडल देवों का आव्हान व पूजन करें ।

ॐ शिखिने नमः । शिखिनं आवाहयामि स्थापयामि पर्जन्याय, जयन्ताय, कुलिशायुधाय, सूर्याय, सत्याय, भृशाय, आकाशाय, वायवे, पूष्णे, विपथाय, गृहक्षताय, यमाय, गन्धर्वाय, भृङ्गराजाय, मृगाय, पितृभ्यो, दौवारिकाय, सुग्रीवाय, पुष्पदन्ताय, वरुणाय, असुराय, शोषाय, पापाय, रोगाय, अहये, मुख्याय, भल्लाटाय, सोमाय, सर्पाय, अदित्यै, दित्यै, आपाय, सवित्राय, जयाय, रुद्राय, अर्यम्णे, सवित्रे, विवस्वते, विबुधाय, मित्राय, राजयक्ष्मणे, पृथ्वीधराय, आपवत्साय, ब्रह्मण्ये, चरक्यै, विदार्यै, पूतनायै, पापरक्षायै, स्कन्दाय, अर्यम्णे, जृम्भकाय, पिलिपिच्छाय, इन्द्राय, अग्नये, यमाय, निर्ऋतये, वरुणाय, वायवे, कुबेराय, ईश्वराय, ब्रह्मणे, अनन्ताय, उग्रसेनाय, डामराय, महाकालाय, पिलिपिच्छाय, हेतुकाय, त्रिपुरान्तकाय, अग्निवैतालाय, असिवैतालाय, कालाय, करालाय, एकपादाय, भीमरूद्राय खेचराय, तलवासिने ॥

पश्चात् "मनोजूति०" मन्त्र से प्रतिष्ठा पूर्वक पूजन कर नमस्कार करें । "वास्तु मंडल देवताभ्यो नमः ॥"

पश्चात् ८१ स्थंडिल के मध्य वास्तु कलश की स्थापना करें । फिर वास्तु ध्रुव मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा कर निम्न मंत्र से वास्तुदेव का पूजन करें ।

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशो ऽअनमीवोभवानः । यत्वे महे प्रतिपन्नो जुषस्व शन्नोभवद्विपदेशं चतुष्पदे ॥ ॐ वास्तुपुरुषाय नमः ।

पश्चात् षोडषोपचार पूजन कर नमस्कार करें।

वास्तुदेव नमस्ते ऽस्तु भूशय्याभिरत प्रभो।
मद्गृहे धनधान्यादि समृद्धिं कुरु सर्वदा॥

पश्चात् "वास्तु पुरुषाय नमः" कहकर पायस बलि दें।

पश्चात् यजमान पूजित कलश लेकर बाहर आकर द्वार पूजन करें।

(१) पूर्व द्वार-ग्रामणीपीठे पक्षीन्द्राय नमः। (२) दक्षिणे-चण्डाय नमः। (३) वामे-प्रचन्डाय नमः। (४) उर्ध्वं-द्वारश्रियै नमः। (५) देहल्यां द्वारपीठ मध्ये-वास्तु पुरुषाय नमः। (६) दक्षिणशाखायां-गंगायै०। (७) वामशाखायां-यमुनायै०। (८) दक्षिणे-शङ्खनिधये०। (९) वामे-पद्मनिधये०। (१०) द्वारस्य ऊर्ध्वं आग्नेयां-गणपतये०। (११) अधः नैऋत्यां-दुर्गायै०। (१२) अधः वायव्यां-सरस्वत्यै०। (१३) ऊर्ध्वं ईशान्यां-क्षेत्रपालय०।

पश्चात् गन्धादि पूजन कर, यजमान आचार्य से पूछे: "ब्रह्मन प्रविशामि" तब आचार्य कहे "प्रविशस्व" पश्चात् "ऋचं वाच" शान्ति सूक्त का पाठ करें। पश्चात् वर्द्धिनी कलश दक्षिण स्कन्ध पर रखकर द्वार से स्पर्श करते हुए गृह प्रवेश करें और वह कलश ईशान कोण में स्थापित करें। पश्चात् होम करें।

ॐ इहरतिरिहरमध्वमिहधृतिरिहस्वधृतिः स्वाहा, इदमग्नये न मम ॥ १ ॥ ॐ उपसृजं धरुणं मात्रे धरुणो मातरन्धयन्। रायस्पोषमस्मासुदीधरत्स्वाहा, इदं अग्नये न मम ॥ २ ॥ ॐ वास्तोष्पते प्रति जानीह्यस्मान्स्वावेशो ऽअनमीवोभवानः। यत्वेमहे प्रतिपन्नो जुषस्व शन्नो भवद्विपदे शं चतुष्पदे। इदं वास्तोष्पतये न मम ॥ ३ ॥ वास्तोष्पतेप्रतरणोन ऽएधिगय स्फानोगोभिरश्वेभिरिन्दो। अजरासस्ते सख्येस्यामपितेवपुत्रान्प्रतिनो जुषस्व शन्नो भवद्विपदेशं चतुष्पदे स्वाहा, इदं वास्तोष्पतये न मम ॥ ४ ॥ ॐ वास्तोष्पते शग्मयास॰ सदाते सक्षीमहि रण्वया गातुमत्या। पाहिक्षेमऽ

योगेवरन्नोयूयपातस्व स्तिभिः सदानः स्वाहा । इदं वास्तोष्पतये न मम ५ ॥ ॐ अमिहा वास्तोष्पते विश्वारूपाण्याविशम् ॥ सखा सुशेव धेनः स्वाहा इद वास्तोष्पतये न मम ॥ ६ ॥ ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं जापतये न मम ॥ ७ ॥

पश्चात् चरु से होम करें।

ॐ अग्निमिन्द्रं बृहस्पतिं विश्वांश्चदेवानुह्वये । सरस्वतीं च जीं च वास्तु मे दत्त वाजिनः स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ सर्वदेवजनान्सर्वान्हिम न्तँ सुदर्शनम् । वसुंश्च रुद्रानादित्यानीशानं जगदैः सह । एतान्सर्वान्प्र द्ये ऽहंवास्तुमेदत्तवाजिनः स्वाहा ।२॥ ॐ पूर्वाह्णमपराह्णं चोभौमध्यंदि ासह । प्रदोषमर्धरात्रं चव्युष्टां देवीं महापथां । एता०……स्वाहा ॥३॥ ॐ कर्तारं च विकर्तारं विश्वकर्माणमोषधींश्चवनस्पतीन् । एता०…… ाहा ॥ ४ ॥ ॐ धातारं च विधातारं निधीनांचपतिँ सह एता०…… ्वाहा ॥ ५ ॥ ॐ स्योनँ शिवमिदंवास्तुदत्तं ब्रह्मप्रजापतिसर्वाश्च देवताः स्वाहा ॥ ६ ॥

पश्चात् ग्रह होम ८१ वास्तु पीठ देवताओं का होम करें। एवम् १०-१० रेखाओं के नाम मन्त्र का होम करें। फिर निम्न मंत्र का १०८ वार होम करें।

वास्तोष्पतते प्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशोऽअनमीवोभवानः । यत्वे महे प्रतिपन्नो जुषस्व शन्नोभवद्विपदे चतुष्पदे स्वाहा इदं वास्तोष्पतये न मम ॥

पश्चात् घृताहुति दें।

ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते न मम ॥

पश्चात् संश्रव प्राशन आदि कर होम समाप्ति कर्म करें।

तदनन्तर पूर्वादिक्रम से चारों दिशाओं पर ध्वज लगावें और उन पर सूत्र वेष्टन करें और उन पर दूध और जल से छींटे लगावें। पश्चात् गृह प्रवेश करें। फिर आग्नेय कोण में खड्डा खोदकर उसमें किसी पेटी में वास्तु मूर्ति रखें फिर उनका

गन्धादि पूजन करें। फिर उस खड्डे को बन्द कर जल सिंचन करें। पश्चात् पंचगव्य घर में छिड़कावें। फिर ब्रा यजमान का अभिषेक करें। पश्चात् देवताओं का विसर्जन ब्राह्मण भोजन का संकल्प करें ॥इति॥

७. गृह शान्ति सामग्री:-

सफेद वस्त्र, लाल वस्त्र, ब्राह्मण वरुणी के वस्त्र, तांबे का लो पीतल की बाटकी, ढक्कन सहित मृतिका पात्र, रामकटोरे, पान के पर सुगन्धित तेल, दूध, दही, गोबर, छाणे, छोडे, मिश्री-पतासा, सुपा बादाम, अगरबत्ती, रुई, गुलाल, कुकुम, हल्दी, नारियल, मोली, कपासि सप्त अन्न, चावल, गेहूँ केसर, काली दाख, अद्रक, आँवला, सूतली, घृ माचीस, जव, तिल, शहद, शक्कर, गुड़, पुष्प, ऋतुफल, लौंग, इलायची हवन सामग्री, दर्भ, दुर्वा, आम या पीपल के पत्ते, आदि।

८. संस्कार सामग्री:-

१ सीमान्त संस्कार:-त्रीणी शैली, उदंबर की लकड़ी, उदंबर के पुष्प, वेणी, गूलर या जौ की माला।

२. नामकरण:-कांस्य पात्र, स्वर्ण ततु दधि, घृत, मधु.

३. चौल:-गर्म व ठंडा जल, घृत, दधि, मक्खन, त्रीणी शैली गोबर, लाल वस्त्र।

४. उपनयनः-छाणे छोडे, समिधा, घृत, कीटी, चावल, वस्त्र, पलास का दंड, मूँज, यज्ञोपवीत, मृगछाला, मक्खन दधि, आठकुम्भ, तिल, पुष्पमाला, अंजन या काजल, काच, बाँस का दंड, बालक के वस्त्र व कुंडल, ब्राह्मण वरुणी के वस्त्र, आदि।

५. सामान्त पूजनः-पुष्पमाला, नारियल, फल, गन्ध, पुष्प, दूध,

६. विवाह:-पुष्पमाला पुष्प, यज्ञोपवीत कुंकुम, सिन्दुर, मृतिका पात्र ढक्कन सहित, रामकटोरे, सुपारी, मिश्री, केसर, पान के पत्ते,

...नफल, मौली, नारियल, मुकुट, वर के वस्त्र, चावल की खीलें, घृत, ...हद, दूध, दही, शक्कर, दर्भ, चावल, मंडप सामग्री आदि।

बटुकाष्टक लेखक श्री फतहचन्द वासु

सत्यानन्दमयः सुरेश्वरवरो, गोपीपतिः मापतिः
भक्तानां हितकारिकार्यकरणे, दक्षो दयालुः सदा।
त्यक्त्वा सर्वं सुखानि ये स्वशरणं, याता हितत्पालकः
सः श्रीमान् सततं च सुज्ञसुभटोः, कुर्याच्छुभं मङ्गलम्॥ १॥
यो गोवर्द्धन धारण हि कृतवान्, हर्तुं सुरेन्द्रं मदम्
स्वीयं वै पितर तु यज्ञ करणात्, रुद्ध्वा गिरेरर्चनम्।
गोपेभ्यः किल कारित सुरपते, र्मान स्तु नष्टस्तदाः
सः श्रीमान् सतत च सुज्ञ सुभटोः, कुर्याच्छुभं मङ्गलम्॥ २॥
गोपीनं हृदये सदा विहरण, प्रेम्णा तु कृत्वा हि यः
तच्चित्त हृतवान् सव विषयतः, स्वीये स्वरुपे धृतम्।
दत्त्वा वै परमं फल त्वभयदं, रासोत्सवे हर्षदम
सः श्रीमान् सतत च सुज्ञ सुभटोः, कुर्याच्छुभं मङ्गलम्॥ ३॥
यस्याज्ञां सकलाः सुराः किल मुदा, धृत्वा नियोगे रताः
प्रत्येकस्तु करोति वै नियमतः, स्वीय च कार्यं सदा।
भूमौ स्यात्तु यदा हि धर्मगलनं, नानाविधो जायतेः
सः श्रीमान् सततं च सुज्ञ सुभटोः कुर्याच्छुभ मङ्गलम्॥ ४॥
श्री कृष्णः खलनाशको यदुपतिः, राधापतिर्गोरतिः
ब्रह्मण्यः किल तत्समः शरणदः, कुत्रापिनो दृश्यते।
यैर्दीनै र्मनसा धृतं तदरणम् संसार पारंगताः
सः श्रीमान् सतत च सुज्ञ सुभटोः, कुर्याच्छुभं मङ्गलम्॥ ५॥
व्राजानां सकल तु दुःखनिचयं, नष्टीकृतं वै स्वतः
कंसप्रेषित पूतनाद्यसुरजान्, हत्वा कृत निर्भयाः॥
मल्लानां च मदं मुदा झटिति वै चूर्णीकृत लीलयाः
सः श्रीमान् सतत च सुज्ञ सुभटोः, कुर्याच्छुभं मङ्गलम्॥ ६॥

बाल्येयो नवनीत चौर्य कुशलो, गोपैः सह क्रीड़ते।
वैविध्यं किल चास्तियस्यचरिते, सर्वं मुखे दर्शित॥
पार्थाग्रे द्विभुजो चतुर्भुजधरो, भूतो विराड् रूपवान्।
सः श्रीमान् सततं च सुज्ञ सुभटोः, कुर्याच्छुभ मङ्गलम्॥ ७॥
कालीयस्य विषेण दुःखान्वि हं, प्राप्ताः खगा मानवः
सम्पातो यमुनाजले हि कृतवान्, नाग स्तुति सारितः॥
गोपा वै पशवः खगाः प्रियजना, स्त्तेषां कृतं मङ्गलम्
सः श्रीमान् सतत च सुज्ञ सुभटोः, कुर्याच्छुभं मङ्गलम्॥ ८॥

१०. ग्रहशान्ति देवस्थापन-चित्रः-

ईशान — पूर्व — अग्नि

दीपक — दीवार पर सप्त घृत मातृका — षो० मा०

बु	शु	चं
गु	सू	म
के	श	रा

प० वि०

० ० ०

० ० ●

म० मा

| | | | |

१०	१३	१२	११
९	१७	३	७
८	१।१४	२	६
१६	५	४	१५

उत्तर

स्व. पु. — स्व. पु.

प्र. प्रो — हवन वेदी — ब्रह्मा

यजमान

नैऋत्य

वायव्य — पश्चिम

पुस्तक के सम्बन्ध में सम्मतियाँ

(१)

श्री पं० ईश्वरलाल जोशी और श्री पं० परमानन्द शास्त्री द्वारा लिखित "संस्कार प्रदीप" ग्रन्थ देखा। यह पुस्तक शास्त्रीय पद्धति के अनुसार सुन्दर लिखी गई है। इनका यह प्रयास प्रशंसनीय है।

विष्णुदत्त शर्मा अग्निहोत्री
अग्निहोत्रालय आश्रम, जोधपुर

(२)

श्री ईश्वलाल जोशी एवम् श्री परमानन्द शर्मा द्वारा सम्पादित "संस्कार प्रदीप" का अवलोकन किया। लेखक महोदय ने संस्कारों के सुन्दर विवेचन के साथ २ आवश्यक आधुनिक स्वनिर्मित पद्यों का समावेश कर सम्पादित ग्रन्थ को मौलिक रूप दिया है। आवश्यक हिन्दी भाषा में टिप्पणियां लिखने से पुस्तक की उपादेयता जनसाधारण के लिए अत्यधिक बढ़ गई है। ग्रन्थारम्भ में संस्कार रक्षा का जो अपना उद्देश्य बताया गया है। उसमें इस ग्रन्थ की रचना सफल सिद्ध होगी, ऐसा मेरा विश्वास है!

रामनारायण चतुर्वेदी प्राचार्य श्री दरबार संस्कृत कालेज, जोधपुर

(३)

श्री ईश्वरलाल जोशी एवम् श्री परमानन्द शास्त्री द्वारा रचित "संस्कार प्रदीप" का यह संस्करण कर्मकांड प्रेमियों के लिये सुन्दर मार्ग प्रशस्त करता है। इसमें कुछ नवीन प्रकरणों व स्वनिर्मित पद्यों का समावेश कर पुस्तक की महत्ता को बढ़ा दिया है। इस पुस्तक के साथ रहने से ब्राह्मणों को निजी संस्कृति व संस्कार के संरक्षण में बल मिलेगा।

लेखराज द्विवेदी
ज्योतिर्विद कर्मकाण्डी धर्म विशारद
बी०ए०,बीए०ड० साहित्य रत्न, भीनमाल (राज०)